स्तवनाञ्जलिः



मूलमात्रम्

स्तवनाञ्जलिः

(मूलमात्रम्)

(षष्ठम् संस्करण)



रामकृष्ण मठ
नागपुर

प्रकाशक :
स्वामी ब्रह्मस्थानन्द
अध्यक्ष, रामकृष्ण मठ
रामकृष्ण आश्रम मार्ग
धन्तोली, नागपुर-४४० ०१२

श्रीरामकृष्ण-शिवानन्द-स्मृतिग्रन्थमाला
पुष्प १००

[व ९९ : प्र ५०]

मुद्रक –
गिरनार ग्राफिक्स, नागपुर.

मूल्य : रु. २०.००

प्रस्तावना

'स्तवसुमनाञ्जलिः' का षष्ठ परिवर्धित संस्करण 'स्तवनाञ्जलिः' के नाम से पाठकों के सम्मुख रखते हुए हमें अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है।

संसार के सभी धर्मों में ईशस्तवन या ईश्वर के महिमागान को उपासना का एक महत्त्वपूर्ण अंग माना गया है। स्मरणातीत काल से अगणित भक्त-साधक ईश्वरप्रेम में तल्लीन बन, उत्कट अन्तःप्रेरणा से प्रेरित हो विविध स्तोत्रों के माध्यम से ईश्वर का भावपूर्ण गुणगान, उनमे व्याकुल प्रार्थना, उनके सम्मुख अपने हृदय की आर्ति या वेदना निवेदित करते आये हैं; तथा उनके रचित ये स्तोत्र समकालीन एवं परवर्ती काल के असंख्य मानवों के लिए चित्तशान्ति, विमल आनन्द तथा आध्यात्मिक उन्नति के साधनस्वरूप बने हुए हैं। इस प्रकार के स्तोत्र सभी भाषाओं में पाये जाते हैं, परन्तु संस्कृत साहित्य में स्तोत्रों का अपना अलग ही स्थान है।

'स्तूयते अनेन इति स्तोत्रम्'–'जिसके द्वारा स्तुति की जाए वह स्तोत्र है' इस परिभाषा के अनुसार स्तोत्रों का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है। वेदों में हमें बहुविध विषयों के स्तोत्रों का विशाल भण्डार ही भरा मिलता है। अवश्य वैदिक स्तुतियाँ 'सूक्त' के नाम से प्रचलित हैं, पर स्तोत्र और सूक्त हैं समानार्थी ही। वैदिक सूक्त गद्यात्मक और पद्यात्मक उभयविध होते हैं। इनमें कुछ सूक्त पूर्णरूपेण आध्यात्मिक भावपूर्ण हैं तो कुछ में विभिन्न देवताओं से आयु, आरोग्य, बल, धन-धान्य, सुख-समृद्धि, शान्ति आदि ऐहिक वस्तुओं की याचना की गयी है; कुछ में ईश्वर की केवल स्तुति है तो कुछ में उनसे प्रसन्न हो पाप-ताप, संकट आदि से रक्षा करने के लिए प्रार्थना की गयी है। इस प्रकार प्रेय और श्रेय, अभ्युदय और निःश्रेयस दोनों विषयों की प्रार्थना से पूर्ण अनेक सूक्त पाये जाते हैं।

पौराणिक स्तोत्रों में विषयों की विविधता के साथ छन्दों की विविधता, गेयता आदि का भी विकास दिखायी देता है। अधिकांश पौराणिक स्तोत्रों में भौतिक समृद्धि की अपेक्षा आत्मकल्याण को अधिक महत्त्व दिया गया है।

विशिष्ट देवताओं से सम्बन्धित स्तोत्रों में प्रधानतः उन उन देवताओं के स्वरूप, उनकी गुणमहिमा, उनकी लीलाओं आदि का वर्णन तथा साथ ही उनकी कृपा या प्रसन्नता के लिए प्रार्थना आदि पाये जाते हैं। कुछ स्तोत्र प्रमुखतः किसी देवताविशेष के रूप या गुणमाहात्म्यवर्णनात्मक होते हैं, तो कुछ प्रार्थनात्मक। कुछ स्तोत्रों में दार्शनिक सिद्धान्तों या भावों का प्राचुर्य पाया जाता है, तो कुछ में साधनोपयोगी उपदेशों या निर्देशों का। किसी स्तोत्र

में मुमुक्षु साधक अपने संकुचित, बन्धनमय जीवन की व्यर्थता, संसार के क्षणिक सुखों की असारता तथा स्वयं की क्षुद्रता और असमर्थता को देख निरुपाय और कातर हो तीव्र व्याकुलतापूर्वक प्रभु से मुक्ति माँगता है ; किसी में भक्तसाधक भगवद्दर्शन की एक झलक पाकर मुग्ध और विभोर हुआ, भगवान् की अहेतुक कृपा, असीम अनुकम्पा, भक्तवत्सलता आदि का स्मरण करने में तन्मय हो जाता है; तो किसी में शान्त साधक ज्ञान, भक्ति, वैराग्य आदि आध्यात्मिक सम्पदाओं से अपने जीवन को समृद्ध बनाने के लिए प्रार्थना करता है।

संस्कृत स्तोत्र-साहित्य में श्रीशंकराचार्यजी का स्थान तो अद्वितीय ही है। संस्कृत में ऐसा कोई स्तोत्रसंग्रह शायद ही पाया जाएगा जिसमें शंकराचार्यजी के उदात्त भावमय, हृदयस्पर्शी, सुललित स्तोत्रों में से कुछ का समावेश न हुआ हो। आचार्य के स्तोत्रों में भाव और अर्थ की गहराई के साथ ही साथ प्रसाद, श्रुतिमधुरता, शब्दलालित्य आदि काव्यसौन्दर्य का जो अपूर्व संगम दृष्टिगोचर होता है, वह वास्तव में अतुलनीय है।

आकार की दृष्टि से भी स्तोत्रों के कई प्रकार पाये जाते हैं। एकश्लोकात्मक ध्यानमन्त्र, प्रणाममन्त्र आदि से आरम्भ कर पंचकम्, षट्कम्, अष्टकम्, दशकम् आदि नामों से प्रचलित पाँच, छह, आठ, दस आदि श्लोकों से युक्त असंख्य स्तोत्र देखने में आते हैं। 'शिवमहिम्नःस्तोत्रम्' 'मुकुन्दमालास्तोत्रम्' आदि सुदीर्घ स्तोत्रों ही संख्या भी अल्प नहीं है। योग्य भावानुकूल वृत्तों या छन्दों की संयोजना के कारण स्तोत्रों की भावव्यंजकता मानो और अधिक निखर उठती है।

साधक-महापुरुषों द्वारा रचित स्तोत्रों में रचयिता के आध्यात्मिक व्यक्तित्त्व, उनकी साधना तथा अनुभूति की शक्ति अन्तर्निहित होने के कारण वे स्तोत्र पाठक या श्रोता के हृदय में अनुकूल भावों का संचार कर उसे उच्च भूमि में आरूढ़ कराने की अपूर्व सामर्थ्य रखते हैं। ऐसे स्तोत्रों का पाठ चित्त को शान्त, प्रसन्न और पावन बनाने का अमोघ उपाय है। हमारे शास्त्रों में वर्णित कायिक, वाचिक और मानसिक इन त्रिविध उपासनाओं में से 'वाचिक' उपासना में जप एवं स्तोत्रपाठ का अन्तर्भाव होता है। जप ही की तरह स्तोत्रपाठ को भी आध्यात्मिक उन्नति का सुनिश्चित परन्तु सुलभ साधन माना गया है। इस स्तोत्रपाठरूपी वाङ्मयी पूजा को सफल बनाने के लिए अन्तर्बाह्य शुचिता से सम्पन्न हो, शान्त, एकाग्र और श्रद्धायुक्त चित्त से, स्पष्ट स्वर में, शुद्ध उच्चारणपूर्वक, अर्थबोध और भावग्रहण का ध्यान रखते हुए पाठ करने की विधि पायी जाती है।

प्रस्तुत चयनिका में हमने कुछ प्रसिद्ध वैदिक शान्तिमन्त्रों एवं सूक्तों तथा विविध देवी-

देवता, अवतार आदि से सम्बन्धित ध्यानमन्त्र, प्रणाममन्त्र एवं अनेक अर्थगर्भ, सुललित स्तोत्रों के अलावा कुछ साधनोपयोगी उपदेशपरक स्तोत्रों का संकलन किया है। श्रीरामकृष्ण-संघ की विभिन्न शाखाओं में विभिन्न धार्मिक उत्सवों के अवसर पर गाये जानेवाले मधुर स्तोत्रों में से प्रायः सभी का समावेश इसमें किया गया है।

परमकरुणामय प्रभु के श्रीचरणों में स्तोत्ररूपी इन सुरभित पुष्पों की अंजलि चढ़ाते हुए हम उनसे प्रार्थना करते हैं कि वे प्रसन्न होकर हम सब पर कृपा करें।

—प्रकाशक

नागपुर
१४.२.१९९९

अनुक्रमणिका

कल्याणप्रार्थना

सर्वेऽत्र सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखमाप्नुयात्॥
सर्वस्तरतु दुर्गाणि सर्वो भद्राणि पश्यतु।
सर्वः सद्बुद्धिमाप्नोतु सर्वः सर्वत्र नन्दतु॥
दुर्जनः सज्जनो भूयात् सज्जनः शान्तिमाप्नुयात्।
शान्तो मुच्येत बन्धेभ्यो मुक्तश्चान्यान् विमोचयेत्॥

स्वस्त्यस्तु विश्वस्य खलः प्रसीदतां
ध्यायन्तु भूतानि शिवं मिथो धिया।
मनश्च भद्रं भजतादधोक्षजे
आवेश्यतां नो मतिरप्यहैतुकी॥

स्तवनाञ्जलिः

*

वैदिकस्तोत्राणि

शान्तिवचनानि

ॐ वाङ्मे मनसि प्रतिष्ठिता । मनो मे वाचि प्रतिष्ठितम् । आविरावीर्म एधि । वेदस्य म आणीस्थः । श्रुतं मे मा प्रहासीः । अनेनाधीतेनाहोरात्रान् सन्दधामि । ऋतं वदिष्यामि । सत्यं वदिष्यामि । तन्मामवतु । तद्वक्तारमवतु । अवतु माम् । अवतु वक्तारम् । अवतु वक्तारम् ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥१॥

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमिवावशिष्यते ॥
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥२॥

ॐ शं नो मित्रः शं वरुणः । शं नो भवत्वर्यमा । शं न इन्द्रो बृहस्पतिः । शं नो विष्णुरुरुक्रमः । नमो ब्रह्मणे । नमस्ते वायो । त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि । त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि । ऋतं वदिष्यामि । सत्यं वदिष्यामि । तन्मामवतु । तद्वक्तारमवतु । अवतु माम् । अवतु वक्तारम् ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥३॥

ॐ सह नाववतु । सह नौ भुनक्तु । सह वीर्यं करवावहै । तेजस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहै ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥४॥

ॐ आप्यायन्तु ममाङ्गानि । वाक्प्राणश्चक्षुः श्रोत्रमथो बलमिन्द्रियाणि च सर्वाणि । सर्वं ब्रह्मौपनिषदम् । माहं ब्रह्म निराकुर्याम् । मा मा ब्रह्म निराकरोत् । अनिराकरणमस्तु । अनिराकरणं मेऽस्तु । तदात्मनि निरते य

---

१. ऋग्वेदः
२. शुक्लयजुर्वेदः, बृहदारण्यकोपनिषत् ५।१।१
३. कृष्णयजुर्वेदः, तैत्तिरीयोपनिषत् १।१
४. तदेव २।१

उपनिषत्सु धर्मास्ते मयि सन्तु, ते मयि सन्तु । ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥५॥

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः ॥
स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥६॥

ॐ तच्छं योरावृणीमहे । गातुं यज्ञाय । गातुं यज्ञपतये । दैवी स्वस्तिरस्तु नः । स्वस्तिर्मानुषेभ्यः । ऊर्ध्वं जिगातु भेषजम् । शं नो अस्तु द्विपदे । शं चतुष्पदे । ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥७॥

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिर्वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः । सा मा शान्तिरेधि ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥८॥

***

प्रार्थना

असतो मा सद्गमय । तमसो मा ज्योतिर्गमय ।
मृत्योर्माऽमृतं गमय ॥१॥

तेजोऽसि तेजो मयि धेहि । वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि । बलमसि बलं मयि धेहि । ओजोऽस्योजो मयि धेहि । मन्युरसि मन्युं मयि धेहि । सहोऽसि सहो मयि धेहि ॥२॥

***

---

५. सामवेदः ६. अथर्ववेदः । ऋग्वेदः १/८९. ७. ऋग्वेदः ८. शुक्लयजुर्वेदः ३६/१७

१. बृहदारण्यकोपनिषत् १।३।२८. २. वाजसनेयसंहिता १९।९.

मधुमतीसूक्तम्

मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः । माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः । मधु नक्तमुतोषसि मधुमत्पार्थिवं रजः । मधु द्यौरस्तु नः पिता । मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः । माध्वीर्गावो भवन्तु नः ॥

***

संज्ञानसूक्तम्

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम् ।
देवा भागं यथा पूर्वे सञ्जानाना उपासते ॥१॥
समानो मन्त्रः समितिः समानी
समानं मनः सह चित्तमेषाम् ।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः
समानेन वो हविषा जुहोमि ॥२॥
समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः ।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति ॥३॥

***

श्रीगुरुस्तोत्राणि

श्रीगुरुस्तोत्रम्

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुरेव पर ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥१॥
अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥२॥
अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥३॥
स्थावरं जङ्गमं व्याप्तं येन कृत्स्नं चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥४॥
चिद्रूपेण परिव्याप्तं त्रैलोक्यं सचराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥५॥
सर्वश्रुतिशिरोरत्नसमुद्भासितमूर्तये ।
वेदान्ताम्बुजसूर्याय तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥६॥
चैतन्यं शाश्वतं शान्तं व्योमातीतं निरञ्जनम् ।
बिन्दुनादकलातीतस्तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥७॥
ज्ञानशक्तिसमारूढस्तत्त्वमालाविभूषितः ।
भुक्तिमुक्तिप्रदाता च तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥८॥
अनेकजन्मसम्प्राप्तकर्मेन्धनविदाहिने ।
आत्मज्ञानाग्निदानेन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥९॥
शोषणं भवसिन्धोश्च प्रापणं सारसम्पदः ।
यस्य पादोदकं सम्यक् तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥१०॥
न गुरोरधिकं तत्त्वं न गुरोरधिकं तपः ।
तत्त्वज्ञानात्परं नास्ति तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥११॥

मन्नाथः श्रीजगन्नाथो मद्गुरुः श्रीजगद्गुरुः ।
मदात्मा सर्वभूतात्मा तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥१२॥
गुरुरादिरनादिश्च गुरुः परमदैवतम् ।
गुरोः परतरं नास्ति तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥१३॥
ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिं
द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम् ।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षिभूतं
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि ॥१४॥

***

श्रीगुर्वष्टकम्

शरीरं सुरूपं सदा रोगमुक्तं
यशश्चारु चित्रं धनं मेरुतुल्यम् ।
गुरोरङ्घ्रिपद्मे मनश्चेन्न लग्नं
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥१॥
कलत्रं धनं पुत्रपौत्रादिसर्वं
गृहं बान्धवा सर्वमेतद्धि जातम् ।
गुरोरङ्घ्रिपद्मे मनश्चेन्न लग्नं
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥२॥
षडङ्गादिवेदो मुखे शास्त्रविद्या
कवित्वं च गद्यं च पद्यं करोति ।
गुरोरङ्घ्रिपद्मे मनश्चेन्न लग्नं
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥३॥
विदेशेषु मान्यः स्वदेशेषु धन्यः
सदाचारवृत्तेषु मत्तो न चान्यः ।

गुरोरङ्घ्रिपद्मे मनश्चेन्न लग्नं
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥४॥
क्षमामण्डले भूपभूपालवृन्दैः
सदा सेवितं यस्य पादारविन्दम् ।
गुरोरङ्घ्रिपद्मे मनश्चेन्न लग्नं
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥५॥
यशो मे गतं दिक्षु दानप्रतापा-
ज्जगद्वस्तु सर्वं करे यत्प्रसादात् ।
गुरोरङ्घ्रिपद्मे मनश्चेन्न लग्नं
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥६॥
न भोगे न योगे न वा वाजिमेधे
न कान्तासुखे नैव वित्तेषु चित्तम् ।
गुरोरङ्घ्रिपद्मे मनश्चेन्न लग्नं
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥७॥
अरण्ये न वा स्वस्य गेहे न कार्ये
न देहे मनो वर्तते मे त्वनर्घ्ये ।
गुरोरङ्घ्रिपद्मे मनश्चेन्न लग्नं
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥८॥
गुरोरष्टकं यः पठेत् पुण्यदेही
यतिर्भूपतिर्ब्रह्मचारी च गेही ।
लभेद् वाञ्छितार्थं परब्रह्मसंज्ञं
गुरोरुक्तवाक्ये मनो यस्य लग्नम् ॥९॥

***

श्रीदक्षिणामूर्तिस्तोत्रम्

विश्वं दर्पणदृश्यमाननगरीतुल्यं निजान्तर्गतं
पश्यन्नात्मनि मायया बहिरिवोद्भूतं यथा निद्रया ।

यः साक्षीकुरुते प्रबोधसमये स्वात्मानमेवाद्वयं
तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये ॥१॥
बीजस्यान्तरिवाङ्कुरो जगदिदं प्राङ्निर्विकल्पं पुन-
र्मायाकल्पितदेशकालकलनावैचित्र्यचित्रीकृतम् ।
मायावीव विजृम्भयत्यपि महायोगीव यः स्वेच्छया
तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये ॥२॥
यस्यैव स्फुरणं सदात्मकमसत्कल्पार्थकं भासते
साक्षात् तत्त्वमसीति वेदवचसा यो बोधयत्याश्रितान् ।
यत्साक्षात्करणाद् भवेन्न पुनरावृत्तिर्भवाम्भोनिधौ
तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये ॥३॥
नानाच्छिद्रघटोदरस्थितमहादीपप्रभाभास्वरं
ज्ञानं यस्य तु चक्षुरादिकरणद्वारा बहिः स्पन्दते ।
जानामीति तमेव भान्तमनुभात्येतत् समस्तं जगत्
तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये ॥४॥
देहं प्राणमपीन्द्रियाण्यपि चलां बुद्धिं च शून्यं विदुः
स्त्रीबालान्धजडोपमास्त्वहमिति भ्रान्त्या भृशं वादिनः।
मायाशक्तिविलासकल्पितमहाव्यामोहसंहारिणे
तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये ॥५॥
राहुग्रस्तदिवाकरेन्दुसदृशो मायासमाच्छादनात्
सन्मात्रः करणोपसंहरणतो योऽभूत् सुषुप्तः पुमान् ।
प्रागस्वाप्समिति प्रबोधसमये यः प्रत्यभिज्ञायते
तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये ॥६॥
बाल्यादिष्वपि जाग्रदादिषु तथा सर्वास्ववस्थास्वपि
व्यावृत्तास्वनुवर्तमानमहमित्यन्तःस्फुरन्तं सदा ।
स्वात्मानं प्रकटीकरोति भजतां यो मुद्रया भद्रया
तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये ॥७॥

विश्वं पश्यति कार्यकारणतया स्वस्वामिसम्बन्धतः
शिष्याचार्यतया तथैव पितृपुत्राद्यात्मना भेदतः।
स्वप्ने जाग्रति वा य एष पुरुषो मायापरिभ्रामित-
-स्तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये ॥८॥
भूरम्भांस्यनलोऽनिलोऽम्बरमहर्नाथो हिमांशुः पुमान्
इत्याभाति चराचरात्मकमिदं यस्यैव मूर्त्यष्टकम्।
नान्यत्किञ्चन विद्यते विमृशतां यस्मात् परस्माद् विभो-
स्तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये ॥९॥
सर्वात्मत्वमिति स्फुटीकृतमिदं यस्मादमुष्मिंस्तवे
तेनास्य श्रवणात् तदर्थमननाद् ध्यानाच्च सङ्कीर्तनात्।
सर्वात्मत्वमहाविभूतिसहितं स्यादीश्वरत्वं स्वतः
सिध्येत् तत्पुनरष्टधा परिणतं चैश्वर्यमव्याहतम् ॥१०॥
वटविटपिसमीपे भूमिभागे निषण्णं
सकलमुनिजनानां ज्ञानदातारमारात्।
त्रिभुवनगुरुमीशं दक्षिणामूर्तिदेवं
जननमरणदुःखच्छेददक्षं नमामि ॥११॥
चित्रं वटतरोर्मूले वृद्धाः शिष्या गुरुर्युवा।
गुरोस्तु मौनं व्याख्यानं शिष्यास्तु छिन्नसंशयाः ॥१२॥
ॐ नमः प्रणवार्थाय शुद्धज्ञानैकमूर्तये।
निर्मलाय प्रशान्ताय दक्षिणामूर्तये नमः ॥१३॥
निधये सर्वविद्यानां भिषजे भवरोगिणाम्।
गुरवे सर्वलोकानां दक्षिणामूर्तये नमः ॥१४॥
मौनव्याख्याप्रकटितपरब्रह्मतत्त्वं युवानं
वर्षिष्ठान्तेवसदृषिगणैरावृतं ब्रह्मनिष्ठैः।
आचार्येन्द्रं करकलितचिन्मुद्रमानन्दरूपं
स्वात्मारामं मुदितवदनं दक्षिणामूर्तिमीडे ॥१५॥

***

श्रीगणेशस्तोत्राणि

श्रीगणेशध्यानम्

ॐ खर्वं स्थूलतनुं गजेन्द्रवदनं लम्बोदरं सुन्दरं
प्रस्यन्दन्मदगन्धलुब्धमधुपव्यालोलगण्डस्थलम् ।
दन्ताघातविदारितारिरुधिरैः सिन्दूरशोभाकरं
वन्दे शैलसुतासुतं गणपतिं सिद्धिप्रदं कामदम् ॥

***

श्रीगणेशप्रार्थना

देवेन्द्रमौलिमन्दारमकरन्दकणारुणाः ।
विघ्नं हरन्तु हेरम्बचरणाम्बुजरेणवः ॥

***

श्रीगणेशप्रणामः

एकदन्तं महाकायं लम्बोदरं गजाननम् ।
विघ्ननाशकरं देवं हेरम्बं प्रणमाम्यहम् ॥

***

गणपत्यथर्वशीर्षोपनिषत्

(ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा...)

ॐ नमस्ते गणपतये। त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि। त्वमेव केवलं कर्तासि। त्वमेव केवलं धर्तासि। त्वमेव केवलं हर्तासि। त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि। त्वं साक्षादात्मासि नित्यम् ॥१॥

ऋतं वच्मि । सत्यं वच्मि ॥२॥

अव त्वं माम् । अव वक्तारम् । अव श्रोतारम् । अव दातारम् । अव धांतारम् अवानूचानम्। अव शिष्यम् । अव पश्चात्तात् । अव पुरस्तात् ।

अवोत्तरात्तात्। अव दक्षिणात्तात्। अव चोर्ध्वात्तात्। अवाधरात्तात्। सर्वतो मां पाहि पाहि समन्तात् ॥३॥

त्वं वाङ्मयस्त्वं चिन्मयः । त्वमानन्दमयस्त्वं ब्रह्ममयः । त्वं सच्चिदानन्दाद्वितीयोऽसि । त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि । त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि ॥४॥

सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते। सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति। सर्वं जगदिदं त्वयि लयमेष्यति। सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति। त्वं भूमिरापोऽनलोऽनिलो नभः। त्वं चत्वारि वाक्पदानि ॥५॥

त्वं गुणत्रयातीतः । त्वं देहत्रयातीतः । त्वं कालत्रयातीतः । त्वं मूलाधारस्थितोऽसि नित्यम्। त्वं शक्तित्रयात्मकः। त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यम्। त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्वमिन्द्रस्त्वमग्निस्त्वं वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चन्द्रमास्त्वं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् ॥६॥

गणादिं पूर्वमुच्चार्य वर्णादिं तदनन्तरम् । अनुस्वारः परतरः । अर्धेन्दुलसितं तारेण ऋद्धम्। एतत्तव मनुस्वरूपम्।

गकारः पूर्वरूपम्। अकारो मध्यमरूपम्। अनुस्वारश्चान्त्यरूपम्। बिन्दुरुत्तररूपम्। नादः सन्धानम्। संहिता सन्धिः। सैषा गणेशविद्या। गणक ऋषिः। निचृद्गायत्रीच्छन्दः। गणपतिर्देवता। ॐ गं गणपतये नमः ॥७॥

एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्तिः प्रचोदयात् ॥८॥

एकदन्तं चतुर्हस्तं पाशमङ्कुशधारिणम्।
रदं च वरदं हस्तैर्बिभ्राणं मूषकध्वजम् ॥
रक्तं लम्बोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम्।
रक्तगन्धानुलिप्ताङ्गं रक्तपुष्पैः सुपूजितम् ॥
भक्तानुकम्पिनं देवं जगत्कारणमच्युतम्।
आविर्भूतं च सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरुषात्परम् ॥
एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी योगिनां वरः ॥९॥

नमो व्रातपतये । नमो गणपतये । नमः प्रमथपतये । नमस्तेऽस्तु लम्बोदरायैकदन्ताय विघ्ननाशिने शिवसुताय श्रीवरदमूर्तये नमः ॥१०॥

एतदथर्वशीर्षं योऽधीते । स ब्रह्मभूयाय कल्पते । स सर्वविघ्नैर्न बाध्यते । स सर्वत्र सुखमेधते । स सर्वमहापापात् प्रमुच्यते। सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति । प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति। सायं प्रातः प्रयुञ्जानोऽपापो भवति । सर्वत्राधीयानोऽपविघ्नो भवति । धर्मार्थकाममोक्षं च विन्दति ।

इदमथर्वशीर्षमशिष्याय न देयम् । यो यदि मोहाद् दास्यति, स पापीयान् भवति ।

सहस्रावर्तनाद् यं यं काममधीते तं तमनेन साधयेत् ॥११॥

अनेन गणपतिमभिषिञ्चति स वाग्मी भवति । चतुर्थ्यामनश्नन् जपति स विद्यावान् भवति । इत्यथर्वणवाक्यम् । ब्रह्माद्यावरणं विद्यान्न बिभेति कदाचनेति ॥१२॥

यो दूर्वाङ्कुरैर्यजति स वैश्रवणोपमो भवति । यो लाजैर्यजति स यशोवान् भवति, स मेधावान् भवति । यो मोदकसहस्रेण यजति स वाञ्छितफलमवाप्नोति । यः साज्यसमिद्भिर्यजति स सर्वं लभते स सर्वं लभते।

अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग् ग्राहयित्वा सूर्यवर्चस्वी भवति । सूर्यग्रहे महानद्यां प्रतिमासन्निधौ वा जप्त्वा सिद्धमन्त्रो भवति । महाविघ्नात् प्रमुच्यते । महादोषात् प्रमुच्यते । महाप्रत्यवायात् प्रमुच्यते । स सर्वविद् भवति । स सर्वविद् भवति । य एवं वेद । इत्युपनिषत् ॥१३॥

(सह नाववतु . . .)

***

सङ्कटनाशनगणेशस्तोत्रम्

प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपुत्रं विनायकम् ।
भक्तावासं स्मरेन्नित्यमायुःकामार्थसिद्धये ॥१॥

प्रथमं वक्रतुण्डं च एकदन्तं द्वितीयकम् ।
तृतीयं कृष्णपिङ्गाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम् ॥२॥
लम्बोदरं पञ्चमं च षष्ठं विकटमेव च ।
सप्तमं विघ्नराजेन्द्रं धूम्रवर्णं तथाष्टमम् ॥३॥
नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकम् ।
एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम् ॥४॥
द्वादशैतानि नामानि त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः ।
न च विघ्नभयं तस्य सर्वसिद्धिकरं प्रभो ॥५॥
विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम् ।
पुत्रार्थी लभते पुत्रान् मोक्षार्थी लभते गतिम् ॥६॥
जपेद् गणपतिस्तोत्रं षड्भिमासैः फलं लभेत् ।
संवत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशयः॥७॥
अष्टभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च लिखित्वा यः समर्पयेत् ।
तस्य विद्या भवेत् सर्वा गणेशस्य प्रसादतः ॥८॥

***

श्रीगणेशाष्टकम्

यतोऽनन्तशक्तेरनन्ताश्च जीवा
यतो निर्गुणादप्रमेयो गुणास्ते ।
यतो भाति सर्वं त्रिधा भेदभिन्नं
सदा तं गणेशं नमामो भजामः ॥१॥
यतश्चाविरासीज्जगत् सर्वमेतत्
तथाब्जासनो विश्वगो विश्वगोप्ता ।
तथेन्द्रादयो देवसङ्घा मनुष्याः
सदा तं गणेशं नमामो भजामः ॥२॥

यतो वह्निभानू भवो भूर्जलं च
यतः सागराश्चन्द्रमा व्योम वायुः।
यतः स्थावरा जङ्गमा वृक्षसङ्घाः
सदा तं गणेशं नमामो भजामः ॥३॥
यतो दानवाः किन्नरा यक्षसङ्घाः
यतश्चारणा वारणाः श्वापदाश्च।
यतः पक्षिकीटा यतो वीरुधश्च
सदा तं गणेशं नमामो भजामः ॥४॥
यतो बुद्धिरज्ञाननाशो मुमुक्षो-
र्यतः सम्पदो भक्तसन्तोषिकाः स्युः।
यतो विघ्ननाशो यतः कार्यसिद्धिः
सदा तं गणेशं नमामो भजामः ॥५॥
यतः पुत्रसम्पद् यतो वाञ्छितार्थो
यतोऽभक्तविघ्नास्तथाऽनेकरूपाः ।
यतश्चार्थधर्मौ यतः काममोक्षौ
सदा तं गणेशं नमामो भजामः ॥६॥
यतोऽनन्तशक्तिः स शेषो बभूव
धराधारणेऽनेकरूपेण शक्तः।
यतोऽनेकधा स्वर्गलोका हि नाना
सदा तं गणेशं नमामो भजामः ॥७॥
यतो वेदवाचो विकुण्ठा मनोभिः
सदा नेति नेतीति यत्ता गृणन्ति।
परब्रह्मरूपं चिदानन्दभूतं
सदा तं गणेशं नमामो भजामः ॥८॥

श्रीगणेश उवाच

पुनरूचे गणाधीशः स्तोत्रमेतत् पठेत् तु यः ।
त्रिसन्ध्यं त्रिदिनं तस्य सर्वकार्यं भविष्यति ॥९॥
यो जपेदष्टदिवसं श्लोकाष्टकमिदं शुभम् ।
अष्टवारं चतुर्थ्यां तु सोऽष्टसिद्धीरवाप्नुयात् ॥१०॥
यः पठेन्मासमात्रं तु दशवारं दिने दिने ।
स मोचयेद् बन्धगतं राजवध्यं न संशयः ॥११॥
विद्याकामो लभेद् विद्यां पुत्रार्थी पुत्रमाप्नुयात् ।
वाञ्छितांल्लभते सर्वानेकविंशतिवारतः ॥१२॥
यो जपेत् परया भक्त्या गजाननपरो नरः ।
एवमुक्त्वा ततो देवश्चान्तर्धानं गतः प्रभुः ॥१३॥

***

श्रीगणेशप्रातःस्मरणस्तोत्रम्

प्रातः स्मरामि गणनाथमनाथबन्धुं
सिन्दूरपूरपरिशोभितगण्डयुग्मम् ।
उद्दण्डविघ्नपरिखण्डनचण्डदण्डम्
आखण्डलादिसुरनायकवृन्दवन्द्यम् ॥१॥
प्रातर्नमामि चतुराननवन्द्यमानम्
इच्छानुकूलमखिलं च वरं ददानम् ।
तं तुन्दिलं द्विरसनाधिपयज्ञसूत्रं
पुत्रं विलासचतुरं शिवयोः शिवाय ॥२॥
प्रातर्भजाम्यभयदं खलु भक्तशोक-
दावानलं गणविभुं वरकुञ्जरास्यम् ।
अज्ञानकाननविनाशनहव्यवाहम्
उत्साहवर्धनमहं सुतमीश्वरस्य ॥३॥
श्लोकत्रयमिदं पुण्यं सदा साम्राज्यदायकम् ।
प्रातरुत्थाय सततं प्रपठेत् प्रयतः पुमान् ॥४॥

***

श्रीशिवस्तोत्राणि

श्रीशिवध्यानम्

ॐ ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम् ।
पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं
विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम् ॥

***

श्रीशिवप्रणामः

नमः शिवाय शान्ताय कारणत्रयहेतवे ।
निवेदयामि चात्मानं गतिस्त्वं परमेश्वर ॥

***

श्रीशिवमानसपूजनस्तोत्रम्

रत्नैः कल्पितमासनं हिमजलैः स्नानं च दिव्याम्बरं
नानारत्नविभूषितं मृगमदामोदाङ्कितं चन्दनम् ।
जातीचम्पकबिल्वपत्ररचितं पुष्पं च धूपं तथा
दीपं देव दयानिधे पशुपते हृत्कल्पितं गृह्यताम् ॥१॥
सौवर्णे मणिखण्डरत्नरचिते पात्रे घृतं पायसं
भक्ष्यं पञ्चविधं पयोदधियुतं रम्भाफलं पानकम् ।
शाकानामयुतं जलं रुचिकरं कर्पूरखण्डोज्ज्वलं
ताम्बूलं मनसा मया विरचितं भक्त्या प्रभो स्वीकुरु ॥२॥
छत्रं चामरयोर्युगं व्यजनकं चादर्शकं निर्मलं
वीणाभेरिमृदङ्गकाहलकलागीतं च नृत्यं तथा ।
साष्टाङ्गं प्रणतिः स्तुतिर्बहुविधा ह्येतत् समस्तं मया
सङ्कल्पेन समर्पितं तव विभो पूजां गृहाण प्रभो ॥३॥
आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं
पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः ।

सञ्चारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो
यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम् ॥४॥
इत्थं मानसपूजनं शशिभृतः कुर्वन् त्रिसन्ध्यं नरः
किंवा श्लोकचतुष्टयं प्रतिदिनं पूजावसाने पठन् ।
प्राप्नोतीह समस्तपार्थिवसुखं चान्ते पदं शूलिनो
व्यासस्तेन महावसानसमये कैलासलोकं गतः ॥५॥

***

श्रीविश्वनाथाष्टकम्

गङ्गातरङ्गरमणीयजटाकलापं
गौरीनिरन्तरविभूषितवामभागम् ।
नारायणप्रियमनङ्गमदापहारं
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ॥१॥
वाचामगोचरमनेकगुणस्वरूपं
वागीशविष्णुसुरसेवितपादपीठम् ।
वामेन विग्रहवरेण कलत्रवन्तं
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ॥२॥
भूताधिपं भुजगभूषणभूषिताङ्गं
व्याघ्राजिनाम्बरधरं जटिलं त्रिनेत्रम् ।
पाशाङ्कुशाभयवरप्रदशूलपाणिं
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ॥३॥
शीतांशुशोभितकिरीटविराजमानं
भालेक्षणानलविशोषितपञ्चबाणम् ।
नागाधिपारचितभासुरकर्णपूरं
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ॥४॥
पञ्चाननं दुरितमत्तमतङ्गजानां
नागान्तकं मनुजपुङ्गवपन्नगानाम् ।
दावानलं मरणशोकजराटवीनां
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ॥५॥

तेजोमयं सगुणनिर्गुणमद्वितीयम्
आनन्दकन्दमपराजितमप्रमेयम् ।
नादात्मकं सकलनिष्कलमात्मरूपं
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ॥६॥
आशां विहाय परिहृत्य परस्य निन्दां
पापे रतिं च सुनिवार्य मनः समाधौ ।
आदाय हृत्कमलमध्यगतं परेशं
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ॥७॥
रागादिदोषरहितं स्वजनानुरागं
वैराग्यशान्तिनिलयं गिरिजासहायम् ।
माधुर्यधैर्यसुभगं गरलाभिरामं
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ॥८॥
वाराणसीपुरपतेः स्तवनं शिवस्य
व्याख्यातमष्टकमिदं पठते मनुष्यः ।
विद्यां श्रियं विपुलसौख्यमनन्तकीर्तिं
सम्प्राप्य देहविलये लभते च मोक्षम् ॥९॥
विश्वनाथाष्टकं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥१०॥

***

श्रीशिवनामावल्यष्टकम्

हे चन्द्रचूड मदनान्तक शूलपाणे
स्थाणो गिरीश गिरिजेश महेश शम्भो ।
भूतेश भीतभयसूदन मामनाथं
संसारदुःखगहनाज्जगदीश रक्ष ॥१॥
हे पार्वतीहृदयवल्लभ चन्द्रमौले
भूताधिप प्रमथनाथ गिरीशजाप ।
हे वामदेव भव रुद्र पिनाकपाणे
संसारदुःखगहनाज्जगदीश रक्ष ॥२॥

हे नीलकण्ठ वृषभध्वज पञ्चवक्त्र
लोकेश शेषवलय प्रमथेश शर्व।
हे धूर्जटि पशुपते गिरिजापते मां
संसारदुःखगहनाज्जगदीश रक्ष ॥३॥
हे विश्वनाथ शिवशङ्कर देवदेव
गङ्गाधर प्रमथनायक नन्दिकेश।
बाणेश्वरान्धकरिपो हर लोकनाथ
संसारदुःखगहनाज्जगदीश रक्ष ॥४॥
वाराणसीपुरपते मणिकर्णिकेश
वीरेश दक्षमखकाल विभो गणेश।
सर्वज्ञ सर्वहृदयैकनिवास नाथ
संसारदुःखगहनाज्जगदीश रक्ष ॥५॥
श्रीमन्महेश्वर कृपामय हे दयालो
हे व्योमकेश शितिकण्ठ गणाधिनाथ।
भस्माङ्गराग नृकपालकलापमाल
संसारदुःखगहनाज्जगदीश रक्ष ॥६॥
कैलासशैलविनिवास वृषाकपे हे
मृत्युञ्जय त्रिनयन् त्रिजगन्निवास।
नारायणप्रिय मदापह शक्तिनाथ
संसारदुःखगहनाज्जगदीश रक्ष ॥७॥
विश्वेश विश्वभवनाशित विश्वरूप
विश्वात्मक त्रिभुवनैकगुणाधिवास।
हे विश्ववन्द्य करुणामय दीनबन्धो
संसारदुःखगहनाज्जगदीश रक्ष ॥८॥

***

वेदसारशिवस्तोत्रम्

पशूनां पतिं पापनाशं परेशं
गजेन्द्रस्य कृत्तिं वसानं वरेण्यम् ।
जटाजूटमध्ये स्फुरद्गाङ्गवारिं
महादेवमेकं स्मरामि स्मरारिम् ॥१॥
महेशं सुरेशं सुरारार्तिनाशं
विभुं विश्वनाथं विभूत्यङ्गभूषम् ।
विरूपाक्षमिन्द्वर्कवह्नित्रिनेत्रं
सदानन्दमीडे प्रभुं पञ्चवक्त्रम् ॥२॥
गिरीशं गणेशं गले नीलवर्णं
गवेन्द्राधिरूढं गुणातीतरूपम् ।
भवं भास्वरं भस्मना भूषिताङ्गं
भवानीकलत्रं भजे पञ्चवक्त्रम् ॥३॥
शिवाकान्त शम्भो शशाङ्कार्धमौले
महेशान शूलिन् जटाजूटधारिन् ।
त्वमेको जगद्व्यापको विश्वरूपः
प्रसीद प्रसीद प्रभो पूर्णरूप ॥४॥
परात्मानमेकं जगद्बीजमाद्यं
निरीहं निराकारमोङ्कारवेद्यम् ।
यतो जायते पाल्यते येन विश्वं
तमीशं भजे लीयते यत्र विश्वम् ॥५॥
न भूमिर्न चापो न वह्निर्न वायु-
र्न चाकाशमास्ते न तन्द्रा न निद्रा ।
न ग्रीष्मो न शीतं न देशो न वेषो
न यस्यास्ति मूर्तिस्त्रिमूर्तिं तमीडे ॥६॥
अजं शाश्वतं कारणं कारणानां
शिवं केवलं भासकं भासकानाम् ।
तुरीयं तमःपारमाद्यन्तहीनं
प्रपद्ये परं पावनं द्वैतहीनम् ॥७॥

नमस्ते नमस्ते विभो विश्वमूर्ते
नमस्ते नमस्ते चिदानन्दमूर्ते ।
नमस्ते नमस्ते तपोयोगगम्य
नमस्ते नमस्ते श्रुतिज्ञानगम्य ॥८॥
प्रभो शूलपाणे विभो विश्वनाथ
महादेव शम्भो महेश त्रिनेत्र ।
शिवाकान्त शान्त स्मरारे पुरारे
त्वदन्यो वरेण्यो न मान्यो न गण्यः ॥९॥
शम्भो महेश करुणामय शूलपाणे
गौरीपते पशुपते पशुपाशनाशिन् ।
काशीपते करुणया जगदेतदेक-
स्त्वं हंसि पासि विदधासि महेश्वरोऽसि ॥१०॥
त्वत्तो जगद् भवति देव भव स्मरारे
त्वय्येव तिष्ठति जगन्मृड विश्वनाथ ।
त्वय्येव गच्छति लयं जगदेतदीश
लिङ्गात्मकं हर चराचरविश्वरूपिन् ॥११॥

***

श्रीशिवाष्टकम्

प्रभुमीशमनीशमशेषगुणं
गुणहीनमहीशगराभरणम् ।
रणनिर्जितदुर्जयदैत्यपुरं
प्रणमामि शिवं शिवकल्पतरुम् ॥१॥
गिरिराजसुतान्वितवामतनुं
तनुनिन्दितराजितकोटिविधुम् ।
विधिविष्णुशिरोधृतपादयुगं
प्रणमामि शिवं शिवकल्पतरुम् ॥२॥
शशलाञ्छितरञ्जितसन्मुकुटं
कटिलम्बितसुन्दरकृत्तिपटम् ।

सुरशैवलिनीकृतपूतजटं
प्रणमामि शिवं शिवकल्पतरुम् ॥३॥
नयनत्रयभूषितचारुमुखं
मुखपद्मपराजितकोटिविधुम् ।
विधुखण्डविमण्डितभालतटं
प्रणमामि शिवं शिवकल्पतरुम् ॥४॥
वृषराजनिकेतनमादिगुरुं
गरलाशनमाजिविषाणधरम् ।
प्रमथाधिपसेवकरञ्जनकं
प्रणमामि शिवं शिवकल्पतरुम् ॥५॥
मकरध्वजमत्तमतङ्गहरं
करिचर्मगनागविबोधकरम् ।
वरमार्गणशूलविषाणधरं
प्रणमामि शिवं शिवकल्पतरुम् ॥६॥
जगदुद्भवपालननाशकरं
त्रिदिवेशशिरोमणिधृष्टपदम् ।
प्रियमानवसाधुजनैकगतिं
प्रणमामि शिवं शिवकल्पतरुम् ॥७॥
हृदयस्थतमःप्रकरापहरं
नृमनोजनिताघविनाशकरम् ।
भजतोऽखिलदुःखसमिद्धहरं
प्रणमामि शिवं शिवकल्पतरुम् ॥८॥

***

श्रीशिवमहिम्नःस्तोत्रम्

महिम्नः पारं ते परमविदुषो यद्यसदृशी
स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः ।
अथावाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामावधि गृणन्
ममाप्येष स्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः ॥१॥

अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ्मनसयो-
रतद्व्यावृत्त्या यं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि ।
स कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः
पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः ॥२॥
मधुस्फीता वाचः परमममृतं निर्मितवत-
स्तव ब्रह्मन् किं वागपि सुरगुरोर्विस्मयपदम् ।
मम त्वेतां वाणीं गुणकथनपुण्येन भवतः
पुनामीत्यर्थेऽस्मिन् पुरमथन बुद्धिर्व्यवसिता ॥३॥
तवैश्वर्यं यत्तज्जगदुदयरक्षाप्रलयकृत्
त्रयी वस्तु व्यस्तं तिसृषु गुणभिन्नासु तनुषु ।
अभव्यानामस्मिन् वरद रमणीयामरमणीं
विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः ॥४॥
किमीहः किङ्कायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनं
किमाधारो धाता सृजति किमुपादान इति च ।
अतर्क्यैश्वर्ये त्वय्यनवसरदुःस्थो हतधियः
कुतर्कोऽयं कांश्चिन्मुखरयति मोहाय जगतः ॥५॥
अजन्मानो लोकाः किमवयववन्तोऽपि जगता-
मधिष्ठातारं किं भवविधिरनादृत्य भवति ।
अनीशो वा कुर्याद् भुवनजनने कः परिकरो
यतो मन्दास्त्वां प्रत्यमरवर संशेरत इमे ॥६॥
त्रयी साङ्ख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति
प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च ।
रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषां
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव ॥७॥
महोक्षः खट्वाङ्गं परशुरजिनं भस्मफणिनः
कपालं चेतीयत् तव वरद तन्त्रोपकरणम् ।
सुरास्तां तामृद्धिं दधति तु भवद्भ्रूप्रणिहितां
न हि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति ॥८॥

ध्रुवं कश्चित्सर्वं सकलमपरस्त्वध्रुवमिदं
परो ध्रौव्याध्रौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये।
समस्तेऽप्येतस्मिन् पुरमथन तैर्विस्मित इव
स्तुवन् जिह्रेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता ॥९॥
तवैश्वर्यं यत्नाद् यदुपरि विरिञ्चो हरिरधः
परिच्छेत्तुं यातावनलमनलस्कन्धवपुषः।
ततो भक्तिश्रद्धाभरगुरुगृणद्भ्यां गिरिश यत्
स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्न फलति ॥१०॥
अयत्नादापाद्य त्रिभुवनमवैरव्यतिकरं
दशास्यो यद्बाहूनभृत रणकण्डूपरवशान्।
शिरःपद्मश्रेणीरचितचरणाम्भोरुहबलेः
स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहर विस्फूर्जितमिदम् ॥११॥
अमुष्य त्वत्सेवासमधिगतसारं भुजवनं
बलात् कैलासेऽपि त्वदधिवसतौ विक्रमयतः।
अलभ्या पातालेऽप्यलसचलिताङ्गुष्ठशिरसि
प्रतिष्ठा त्वय्यासीद् ध्रुवमुपचितो मुह्यति खलः ॥१२॥
यदृद्धिं सुत्राम्णो वरद परमोच्चैरपि सती-
मधश्चक्रे बाणः परिजनविधेयत्रिभुवनः।
न तच्चित्रं तस्मिन् वरिवसितरि त्वच्चरणयो-
र्न कस्या उन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनतिः ॥१३॥
अकाण्डब्रह्माण्डक्षयचकितदेवासुरकृपा-
विधेयस्यासीद् यस्त्रिनयन विषं संहृतवतः।
स कल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रियमहो
विकारोऽपि श्लाघ्यो भुवनभयभङ्गव्यसनिनः ॥१४॥
असिद्धार्था नैव क्वचिदपि सदेवासुरनरे
निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः।
स पश्यन्नीश त्वामितरसुरसाधारणमभूत्
स्मर स्मर्तव्यात्मा न हि वशिषु पथ्यः परिभवः ॥१५॥

महीपादाघाताद् व्रजति सहसा संशयपदं
पदं विष्णोर्भ्राम्यद्भुजपरिघरुग्णग्रहगणम् ।
मुहुर्द्यौर्दौस्थ्यं यात्यनिभृतजटाताडिततटा
जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता ॥१६॥
वियद्व्यापी तारागणगुणितफेनोद्गमरुचिः
प्रवाहो वारां यः पृषतलघुदृष्टः शिरसि ते ।
जगद्द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमि-
त्यनेनैवोन्नेयं धृतमहिम दिव्यं तव वपुः ॥१७॥
रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिरगेन्द्रो धनुरथो
रथाङ्गे चन्द्रार्कौ रथचरणपाणिः शर इति ।
दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडम्बरविधि-
र्विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्राः प्रभुधियः ॥१८॥
हरिस्ते साहस्रं कमलबलिमाधाय पदयो-
र्यदेकोने तस्मिन्निजमुदहरन्नेत्रकमलम् ।
गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषा
त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जगताम् ॥१९॥
क्रतौ सुप्ते जाग्रत् त्वमसि फलयोगे क्रतुमतां
क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते ।
अतस्त्वां सम्प्रेक्ष्य क्रतुषु फलदानप्रतिभुवं
श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा दृढपरिकरः कर्मसु जनः ॥२०॥
क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृता-
मृषीणामार्त्विज्यं शरणद सदस्याः सुरगणाः ।
क्रतुभ्रंशस्त्वत्तः क्रतुफलविधानव्यसनिनो
ध्रुवं कर्तुः श्रद्धाविधुरमभिचाराय हि मखाः ॥२१॥
प्रजानाथं नाथ प्रसभमभिकं स्वां दुहितरं
गतं रोहिद्भूतां रिरमयिषुमृष्यस्य वपुषा ।
धनुष्पाणेर्यातं दिवमपि सपत्राकृतममुं
त्रसन्तं तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः ॥२२॥

स्वलावण्याशंसाधृतधनुषमह्नाय तृणवत्
पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन पुष्पायुधमपि ।
यदि स्त्रैणं देवी यमनिरत देहार्धघटना-
दवैति त्वामद्धा बत वरद मुग्धा युवतयः ॥२३॥
श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर पिशाचाः सहचरा-
श्चिताभस्मालेपः स्रगपि नृकरोटीपरिकरः ।
अमाङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं
तथापि स्मर्तॄणां वरद परमं मङ्गलमसि ॥२४॥
मनः प्रत्यक्चित्ते सविधमवधायात्तमरुतः
प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिलोत्सङ्गितदृशः ।
यदालोक्याह्लादं ह्रद इव निमज्याmृतमये
दधत्यन्तस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत्किल भवान् ॥२५॥
त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वं हुतवह-
स्त्वमापस्त्वं व्योम त्वमु धरणिरात्मा त्वमिति च ।
परिच्छिन्नामेवं त्वयि परिणता बिभ्रति गिरं
न विद्मस्तत्तत्त्वं वयमिह तु यत्त्वं न भवसि ॥२६॥
त्रयीं तिस्रो वृत्तीस्त्रिभुवनमथो त्रीनपि सुरा-
नकाराद्यैर्वर्णैस्त्रिभिरभिदधत्तीर्णविकृतिः ।
तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरवरुन्धानमणुभिः
समस्तं व्यस्तं त्वां शरणद गृणात्योमिति पदम् ॥२७॥
भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिरथोग्रः सहमहां-
स्तथा भीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम् ।
अमुष्मिन् प्रत्येकं प्रविचरति देव श्रुतिरपि
प्रियायास्मै धाम्ने प्रणिहितनमस्योऽपि भवते ॥२८॥
नमो नेदिष्ठाय प्रियदव दविष्ठाय च नमो
नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नमः ।
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमो
नमः सर्वस्मै ते तदिदमतिसर्वाय च नमः ॥२९॥

बहुलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः
प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः ।
जनसुखकृते सत्त्वोद्रिक्तौ मृडाय नमो नमः
प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः ॥३०॥
कृशपरिणति चेतः क्लेशवश्यं क्व चेदं
क्व च तव गुणसीमोल्लङ्घिनी शश्वदृद्धिः ।
इति चकितममन्दीकृत्य मां भक्तिराधाद्
वरद चरणयोस्ते वाक्यपुष्पोपहारम् ॥३१॥
असितगिरिसमं स्यात्कज्जलं सिन्धुपात्रे
सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी ।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति ॥३२॥
असुरसुरमुनीन्द्रैरर्चितस्येन्दुमौले-
र्ग्रथितगुणमहिम्नो निर्गुणस्येश्वरस्य ।
सकलगुणवरिष्ठः पुष्पदन्ताभिधानो
रुचिरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमेतच्चकार ॥३३॥
अहरहरनवद्यं धूर्जटेः स्तोत्रमेतत्
पठति परमभक्त्या शुद्धचित्तः पुमान् यः ।
स भवति शिवलोके रुद्रतुल्यस्तथात्र
प्रचुरतरधनायुः पुत्रवान् कीर्तिमांश्च ॥३४॥
महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः ।
अघोरान्नापरो मन्त्रो नास्ति तत्त्वं गुरोः परम् ॥३५॥
दीक्षा दानं तपस्तीर्थं ज्ञानं यागादिकाः क्रियाः ।
महिम्नः स्तवपाठस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम् ॥३६॥
कुसुमदशननामा सर्वगन्धर्वराजः
शिशुशशधरमौलेर्देवदेवस्य दासः ।
स खलु निजमहिम्नो भ्रष्ट एवास्य रोषात्
स्तवनमिदमकार्षीद्दिव्यदिव्यं महिम्नः ॥३७॥

सुरवरमुनिपूज्यं स्वर्गमोक्षैकहेतुं
पठति यदि मनुष्यः प्राञ्जलिर्नान्यचेताः ।
व्रजति शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः
स्तवनमिदममोघं पुष्पदन्तप्रणीतम् ॥३८॥
आसमाप्तमिदं स्तोत्रं पुण्यं गन्धर्वभाषितम् ।
अनौपम्यं मनोहारि शिवमीश्वरवर्णनम् ॥३९॥
इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छङ्करपादयोः ।
अर्पिता तेन देवेशः प्रीयतां मे सदाशिवः ॥४०॥
तव तत्त्वं न जानामि कीदृशोऽसि महेश्वर ।
यादृशोऽसि महादेव तादृशाय नमो नमः ॥४१॥
एककालं द्विकालं वा त्रिकालं यः पठेन्नरः ।
सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोके महीयते ॥४२॥
श्रीपुष्पदन्तमुखपङ्कजनिर्गतेन
स्तोत्रेण किल्बिषहरेण हरप्रियेण ।
कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन
सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेशः ॥४३॥

***

श्रीशिवापराधक्षमापनस्तोत्रम्

आदौ कर्मप्रसङ्गात् कलयति कलुषं मातृकुक्षौ स्थितं मां
विण्मूत्रामेध्यमध्ये क्वथयति नितरां जाठरो जातवेदाः ।
यद्यद्वै तत्र दुःखं व्यथयति सततं शक्यते केन वक्तुं
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भोः श्रीमहादेव शम्भो ॥१॥
बाल्ये दुःखातिरेको मललुलितवपुः स्तन्यपाने पिपासा
नो शक्तश्चेन्द्रियेभ्यो भवगुणजनिताः शत्रवो मां तुदन्ति ।
नानारोगोत्थदुःखाद् रुदनपरवशः शङ्करं न स्मरामि
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भोः श्रीमहादेव शम्भो ॥२॥
प्रौढोऽहं यौवनस्थो विषयविषधरैः पञ्चभिर्मर्मसन्धौ
दष्टो नष्टोऽविवेकः सुतधनयुवतीस्वादसौख्ये निषण्णः ।

शैवीचिन्ताविहीनं मम हृदयमहो मानगर्वाधिरूढं
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भोः श्रीमहादेव शम्भो ॥३॥
वार्धक्ये चेन्द्रियाणां विगतगतिमतिश्चाधिदैवादितापैः
पापै रोगैर्वियोगैस्त्वनवसितवपुः प्रौढिहीनं च दीनम् ।
मिथ्यामोहाभिलाषैर्भ्रमति मम मनो धूर्जटेर्ध्यानशून्यं
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भोः श्रीमहादेव शम्भो ॥४॥
नो शक्यं स्मार्तकर्म प्रतिपदगहनप्रत्यवायाकुलाख्यं
श्रौते वार्ता कथं मे द्विजकुलविहिते ब्रह्ममार्गे स्मरारे ।
ज्ञातो धर्मो विचारैः श्रवणमननयोः किं निदिध्यासितव्यं
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भोः श्रीमहादेव शम्भो ॥५॥
स्नात्वा प्रत्यूषकाले स्नपनविधिविधौ नाहृतं गाङ्गतोयं
पूजार्थं वा कदाचिद्बहुतरगहनात् खण्डबिल्वीदलानि ।
नानीता पद्ममाला सरसि विकसिता गन्धधूपैस्त्वदर्थं
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भोः श्रीमहादेव शम्भो ॥६॥
दुग्धैर्मध्वाज्ययुक्तैर्दधिसितसहितैः स्नापितं नैव लिङ्गं
नो लिप्तं चन्दनाद्यैः कनकविरचितैः पूजितं न प्रसूनैः ।
धूपैः कर्पूरदीपैर्विविधरसयुतैर्नैव भक्ष्योपहारैः
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भोः श्रीमहादेव शम्भो ॥७॥
ध्यात्वा चित्ते स्मरारिं प्रचुरतरधनं नैव दत्तं द्विजेभ्यो
हव्यं ते लक्षसङ्ख्यैर्हुतवहवदने नार्पितं बीजमन्त्रैः ।
नो तप्तं गाङ्गतीरे व्रतजपनियमै रुद्रजाप्यैर्न वेदैः
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भोः श्रीमहादेव शम्भो ॥८॥
स्थित्वा स्थाने सरोजे प्रणवमयमरुत्कुम्भिते सूक्ष्ममार्गे
शान्ते स्वान्ते प्रलीने प्रकटितविभवे ज्योतिरूपे पराख्ये ।
लिङ्गज्ञे ब्रह्मवाक्ये सकलतनुगतं शङ्करं न स्मरामि
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भोः श्रीमहादेव शम्भो ॥९॥
नग्नो निःसङ्गशुद्धस्त्रिगुणविरहितो ध्वस्तमोहान्धकारो
नासाग्रे न्यस्तदृष्टिर्विदितभवगुणो नैव दृष्टः कदाचित् ।
उन्मन्यावस्थया त्वां विगतकलिमलं शङ्करं न स्मरामि
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भोः श्रीमहादेव शम्भो ॥१०॥

चन्द्रोद्भासितशेखरे स्मरहरे गङ्गाधरे शङ्करे
सर्पैर्भूषितकण्ठकर्णयुगले नेत्रोत्थवैश्वानरे।
दन्तित्वक्कृतसुन्दराम्बरधरे त्रैलोक्यसारे हरे
मोक्षार्थं कुरु चित्तवृत्तिमचलामन्यैस्तु किं कर्मभिः ॥११॥
किं वानेन धनेन वाजिकरिभिः प्राप्तेन राज्येन किं
किं वा पुत्रकलत्रमित्रपशुभिर्देहेन गेहेन किम्।
ज्ञात्वैतत्क्षणभङ्गुरं सपदि रे त्याज्यं मनो दूरतः
स्वात्मार्थं गुरुवाक्यतो भज भज श्रीपार्वतीवल्लभम् ॥१२॥
आयुर्नश्यति पश्यतां प्रतिदिनं याति क्षयं यौवनं
प्रत्यायान्ति गताः पुनर्न दिवसाः कालो जगद्भक्षकः।
लक्ष्मीस्तोयतरङ्गभङ्गचपला विद्युच्चलं जीवितं
तस्मान्मां शरणागतं शरणद त्वं रक्ष रक्षाधुना ॥१३॥
शान्तं पद्मासनस्थं शशधरमुकुटं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रं
शूलं वज्रं च खड्गं परशुमपि वरं दक्षिणाङ्गे वहन्तम्।
नागं पाशं च घण्टा डमरुकसहितं चाङ्कुशं वामभागे
नानालङ्कारदीप्तं स्फटिकमणिनिभं पार्वतीशं भजामि ॥१४॥
वन्दे देवमुमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणं
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशूनां पतिम्।
वन्दे सूर्यशशाङ्कवह्निनयनं वन्दे मुकुन्दप्रियं
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शङ्करम् ॥१५॥
गात्रं भस्मसितं सितं च हसितं हस्ते कपालं सितं
खट्वाङ्गं च सितं सितश्च वृषभः कर्णे सिते कुण्डले।
गङ्गाफेनसिता जटा पशुपतेश्चन्द्रः सितो मूर्धनि
सोऽयं सर्वसितो ददातु विभवं पापक्षयं सर्वदा ॥१६॥
करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा
श्रवणनयनजं वा मानसं वापराधम्।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व
जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो ॥१७॥

***

श्रीरुद्राष्टकम्

नमामीशमीशाननिर्वाणरूपं
विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपम् ।
अजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं
चिदाकारमाकाशवासं भजेऽहम् ॥१॥
निराकारमोङ्कारमूलं तुरीयं
गिराज्ञानगोतीतमीशं गिरीशम् ।
करालं महाकालकालं कृपालं
गुणागारसंसारपारं नतोऽहम् ॥२॥
तुषाराद्रिसङ्काशगौरं गभीरं
मनोभूतकोटिप्रभाश्रीशरीरम् ।
स्फुरन्मौलिकल्लोलिनीचारुगङ्गा
लसद्भालबालेन्दु कण्ठे भुजङ्गा ॥३॥
चलत्कुण्डलं भ्रूसुनेत्रं विशालं
प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालम् ।
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं
प्रियं शङ्करं सर्वनाथं भजामि ॥४॥
प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं
अखण्डं भजे भानुकोटिप्रकाशम् ।
त्रयीशूलनिर्मूलनं शूलपाणिं
भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यम् ॥५॥
कलातीतकल्याणकल्पान्तकारी
सदा सज्जनानन्ददाता पुरारिः ।
चिदानन्दसन्दोहकोपापहारी
प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारिः ॥६॥
न यावद् उमानाथपादारविन्दं
भजन्तीह लोके परे वा नराणाम् ।
न तावत् सुखं शान्तिसन्तापनाशं
प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवास ॥७॥

न जानामि योगं जपं नैव पूजां
नतोऽहं सदा सर्वदा देव तुभ्यम् ।
जराजन्मदुःखौघताताप्यमानं
प्रभो पाहि शापान्नमामीश शम्भो ॥८॥
रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतुष्टये ।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति ॥९॥

***

श्रीशिवताण्डवस्तोत्रम्

जटाटवीगलज्जलप्रवाहपावितस्थले
गलेऽवलम्ब्य लम्बितां भुजङ्गतुङ्गमालिकाम् ।
डमड्डमड्डमड्डमन्निनादवड्डमर्वयं
चकार चण्डताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम् ॥१॥
जटाकटाहसम्भ्रमभ्रमन्निलिम्पनिर्झरी-
विलोलवीचिवल्लरीविराजमानमूर्धनि ।
धगद्धगद्धगज्ज्वलल्ललाटपट्टपावके
किशोरचन्द्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम ॥२॥
धराधरेन्द्रनन्दिनीविलासबन्धुबन्धुर-
स्फुरद्दिगन्तसन्ततिप्रमोदमानमानसे ।
कृपाकटाक्षधोरणीनिरुद्धदुर्धरापदि
क्वचिद्दिगम्बरे मनो विनोदमेतु वस्तुनि ॥३॥
जटाभुजङ्गपिङ्गलस्फुरत्फणामणिप्रभा-
कदम्बकुङ्कुमद्रवप्रलिप्तदिग्वधूमुखे ।
मदान्धसिन्धुरस्फुरत्त्वगुत्तरीयमेदुरे
मनो विनोदमद्भुतं बिभर्तु भूतभर्तरि ॥४॥
सहस्रलोचनप्रभृत्यशेषलेखशेखर-
प्रसूनधूलिधोरणीविधूसराङ्घ्रिपीठभूः ।
भुजङ्गराजमालया निबद्धजाटजूटकः
श्रियै चिराय जायतां चकोरबन्धुशेखरः ॥५॥

ललाटचत्वरज्वलद्धनञ्जयस्फुलिङ्गभा-
निपीतपञ्चसायकं नमन्निलिम्पनायकम् ।
सुधामयूखलेखया विराजमानशेखरं
महाकपालि सम्पदे शिरो जटालमस्तु नः ॥६॥
करालभालपट्टिकाधगद्धगद्धगज्ज्वल-
द्धनञ्जयाहुतीकृतप्रचण्डपञ्चसायके ।
धराधरेन्द्रनन्दिनीकुचाग्रचित्रपत्रक-
प्रकल्पनैकशिल्पिनि त्रिलोचने रतिर्मम ॥७॥
नवीनमेघमण्डलीनिरुद्धदुर्धरस्फुर-
त्कुहूनिशीथिनीतमःप्रबन्धबद्धकन्धरः ।
निलिम्पनिर्झरीधरस्तनोतु कृत्तिसिन्धुरः
कलानिधानबन्धुरः श्रियं जगद्धुरन्धरः ॥८॥
प्रफुल्लनीलपङ्कजप्रपञ्चकालिमप्रभा-
वलम्बिकण्ठकन्दलीरुचिप्रबद्धकन्धरम् ।
स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मखच्छिदं
गजच्छिदान्धकच्छिदं तमन्तकच्छिदं भजे ॥९॥
अखर्वसर्वमङ्गलाकलाकदम्बमञ्जरी-
रसप्रवाहमाधुरीविजृम्भणामधुव्रतम् ।
स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मखान्तकं
गजान्तकान्धकान्तकं तमन्तकान्तकं भजे ॥१०॥
जयत्वदभ्रविभ्रमभ्रमद्भुजङ्गमश्वस-
द्विनिर्गमत्क्रमस्फुरत्करालभालहव्यवाट् ।
धिमिद्धिमिद्धिमिद्ध्वनन्मृदङ्गतुङ्गमङ्गल-
ध्वनिक्रमप्रवर्तितप्रचण्डताण्डवः शिवः ॥११॥
दृषद्विचित्रतल्पयोर्भुजङ्गमौक्तिकस्रजो-
र्गरिष्ठरत्नलोष्ठयोः सुहृद्विपक्षपक्षयोः ।
तृणारविन्दचक्षुषोः प्रजामहीमहेन्द्रयोः
समप्रवृत्तिकः कदा सदाशिवं भजाम्यहम् ॥१२॥

कदा निलिम्पनिर्झरीनिकुञ्जकोटरे वसन्
विमुक्तदुर्मतिः सदा शिरःस्थमञ्जलिं वहन् ।
विलोललोललोचनो ललामभाललग्नकः
शिवेति मन्त्रमुच्चरन् कदा सुखी भवाम्यहम् ॥१३॥
इमं हि नित्यमेवमुक्तमुत्तमोत्तमं स्तवं
पठन् स्मरन् ब्रुवन्नरो विशुद्धिमेति सन्ततम् ।
हरे गुरौ सुभक्तिमाशु याति नान्यथा गतिं
विमोहनं हि देहिनां सुशङ्करस्य चिन्तनम् ॥१४॥
पूजावसानसमये दशवक्त्रगीतं
यः शम्भुपूजनपरं पठति प्रदोषे ।
तस्य स्थिरां रथगजेन्द्रतुरङ्गयुक्तां
लक्ष्मीं सदैव सुमुखी प्रददाति शम्भुः ॥१५॥

***

श्रीशिवस्तोत्रम्

निखिलभुवनजन्मस्थेमभङ्गप्ररोहः
अकलितमहिमानः कल्पिता यत्र तस्मिन् ।
सुविमलगगनाभे त्वीशसंस्थेऽप्यनीशे
मम भवतु भवेऽस्मिन् भासुरो भावबन्धः ॥१॥
निहतनिखिलमोहेऽधीशता यत्र रूढा
प्रकटितपरप्रेम्णा यो महादेवसंज्ञः ।
अशिथिलपरिरम्भः प्रेमरूपस्य यस्य
हृदि प्रणयति विश्वं व्याजमात्रं विभुत्वम् ॥२॥
वहति विपुलवातः पूर्वसंस्काररूपः
विदलति बलवृन्दं घूर्णितेवोर्मिमाला ।
प्रचलति खलु युग्मं युष्मदस्मत्प्रतीतम्
अतिविकलितरूपं नौमि चित्तं शिवस्थम् ॥३॥
जनकजनितभावो वृत्तयः संस्कृतांश्च
अगणनबहुरूपा यत्र चैको यथार्थः ।

शमितविकृतिवाते यत्र नान्तर्बहिश्च
तमहह हरमीडे चित्तवृत्तेर्निरोधम् ॥४॥
गलिततिमिरमालः शुभ्रतेजः प्रकाशः
धवलकमलशोभः ज्ञानपुञ्जाट्टहासः ।
यमिजनहृदिगम्यो निष्कलो ध्यायमानः
प्रणतमवतु मां सः मानसो राजहंसः ॥५॥
दुरितदलनदक्षं दक्षजादत्तदोषं
कलितकलिकलङ्कं कम्रकह्लारकान्तम् ।
परहितकरणाय प्राणप्रच्छेदप्रीतं
नतनयननियुक्तं नीलकण्ठं नमामः ॥६॥

***

श्रीशिवप्रातःस्मरणस्तोत्रम्

प्रातः स्मरामि भवभीतिहरं सुरेशं
गङ्गाधरं वृषभवाहनमम्बिकेशम् ।
खट्वाङ्गशूलवरदाभयहस्तमीशं
संसाररोगहरमौषधमद्वितीयम् ॥१॥
प्रातर्नमामि गिरिशं गिरिजार्धदेहं
सर्गस्थितिप्रलयकारणमादिदेवम् ।
विश्वेश्वरं विजितविश्वमनोऽभिरामं
संसाररोगहरमौषधमद्वितीयम् ॥२॥
प्रातर्भजामि शिवमेकमनन्तमाद्यं
वेदान्तवेद्यमनघं पुरुषं महान्तम् ।
नामादिभेदरहितं षड्भावशून्यं
संसाररोगहरमौषधमद्वितीयम् ॥३॥
प्रातः समुत्थाय शिवं विचिन्त्य
श्लोकत्रयं येऽनुदिनं पठन्ति ।
ते दुःखजातं बहुजन्मसञ्चितं
हित्वा पदं यान्ति तदेव शम्भोः ॥४॥

***

श्रीविष्णुस्तोत्राणि

श्रीविष्णुध्यानम्

(१)

ध्येयः सदा सवितृमण्डलमध्यवर्ती
नारायणः सरसिजासनसन्निविष्टः ।
केयूरवान् मकरकुण्डलवान् किरीटी
हारी हिरण्मयवपुर्धृतशङ्खचक्रः ॥

(२)

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् ।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥

***

श्रीविष्णुप्रणामः

त्रैलोक्यपूजितः श्रीमान् सदाविजयवर्धनः ।
शान्तिं कुरु गदापाणे नारायण नमोऽस्तु ते ॥

***

नारायणाथर्वशीर्षोपनिषत्

(ॐ सह नाववतु . . .)

ॐ अथ पुरुषो ह वै नारायणोऽकामयत प्रजाः सृजेयेति । नारायणात् प्राणो जायते । मनः सर्वेन्द्रियाणि च । खं वायुर्ज्योतिरापः पृथिवी विश्वस्य धारिणी । नारायणाद् ब्रह्मा जायते । नारायणाद् रुद्रो जायते । नारायणादिन्द्रो जायते । नारायणात् प्रजापतयः प्रजायन्ते । नारायणाद् द्वादशादित्या रुद्रा वसवः सर्वाणि च छन्दांसि । नारायणादेव समुत्पद्यन्ते ।

नारायणे प्रवर्तन्ते । नारायणे प्रलीयन्ते ॥१॥

ॐ । अथ नित्यो नारायणः । ब्रह्मा नारायणः । शिवश्च नारायणः । शक्रश्च नारायणः । द्यावापृथिव्यौ च नारायणः । कालश्च नारायणः । दिशश्च नारायणः । ऊर्ध्वश्च नारायणः । अधश्च नारायणः । अन्तर्बहिश्च नारायणः । नारायण एवेदं सर्वम् । यद्भूतं यच्च भव्यम् । निष्कलो निरञ्जनो निर्विकल्पो निराख्यातः शुद्धो देव एको नारायणः । न द्वितीयोऽस्ति कश्चित् । य एवं वेद । स विष्णुरेव भवति स विष्णुरेव भवति ॥२॥

ओमित्यग्रे व्याहरेत् । नम इति पश्चात् । नारायणायेत्युपरिष्टात् । ओमित्येकाक्षरम् । नम इति द्वे अक्षरे । नारायणायेति पञ्चाक्षराणि । एतद्वै नारायणास्याष्टाक्षरं पदम् । यो ह वै नारायणस्याष्टाक्षरं पदमध्येति । अनपब्रुवः सर्वमायुरेति । विन्दते प्राजापत्यं रायस्पोषं गौपत्यम् । ततोऽमृतत्वमश्नुते ततोऽमृतत्वमश्नुत इति । य एवं वेद ॥३॥

प्रत्यगानन्दं ब्रह्म पुरुषं प्रणवस्वरूपम् । अकार उकार मकार इति । तानेकधा समभवत्तदेतदोमिति । यमुक्त्वा मुच्यते योगी जन्मसंसार-बन्धनात् । ॐ नमो नारायणायेति मन्त्रोपासकः । वैकुण्ठभुवनलोकं गमिष्यति । तदिदं परं पुण्डरीकं विज्ञानघनम् । तस्मात् तडिदाभमात्रम् । ब्रह्मण्यो देवकीपुत्रो ब्रह्मण्यो मधुसूदनोम् । सर्वभूतस्थमेकं नारायणम् । कारणरूपमकार परब्रह्मोम् । एतदथर्वशिरो योऽधीते प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति । सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति । माध्यन्दिनमादित्याभिमुखोऽधीयानः पञ्चपातकोपपातकात् प्रमुच्यते । सर्ववेदपारायणपुण्यं लभते । नारायणसायुज्यमवाप्नोति नारायणसायुज्यमवाप्नोति । य एवं वेद । इत्युपनिषत् ॥ ४॥

(ॐ सह नाववतु ...)

***

पुरुषसूक्तम्

सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।
स भूमिं विश्वतो वृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥१॥
पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भव्यम् ।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥२॥
एतावानस्य महिमाऽतो ज्यायाँश्च पूरुषः ।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥३॥
त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः ।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत् साशनानशने अभि ॥४॥
तस्माद्विराडजायत विराजो अधि पूरुषः ।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥५॥
यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत ।
वसन्तो अस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः ॥६॥
तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः ।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये ॥७॥
तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम् ।
पशूंस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्यान् ग्राम्याश्च ये ॥८॥
तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे ।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥९॥
तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः ।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात् तस्माज्जाता अजावयः ॥१०॥
यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन् ।
मुखं किमस्य कौ बाहू का ऊरू पादा उच्येते ॥११॥
ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः ।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत ॥१२॥
चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत ।
मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुरजायत ॥१३॥

नाभ्या आसीदन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत ।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात् तथा लोकाँ अकल्पयन् ॥१४॥
सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः ।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुम् ॥१५॥
यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥१६॥

***

नारायणसूक्तम्

सहस्रशीर्षं देवं विश्वाक्षं विश्वशम्भुवम् ।
विश्वं नारायणं देवमक्षरं परमं पदम् ॥१॥
विश्वतः परमान्नित्यं विश्वं नारायणं हरिम् ।
विश्वमेवेदं पुरुषस्तद्विश्वमुपजीवति ॥२॥
पतिं विश्वस्यात्मेश्वरं शाश्वतं शिवमच्युतम् ।
नारायणं महाज्ञेयं विश्वात्मानं परायणम् ॥३॥
नारायणः परो ज्योतिरात्मा नारायणः परः ।
नारायणपरं ब्रह्म तत्त्वं नारायणः परः ।
नारायणपरो ध्याता ध्यानं नारायणः परः ॥४॥
यच्च किञ्चिज्जगत्सर्वं दृश्यते श्रूयतेऽपि वा ।
अन्तर्बहिश्च तत्सर्वं व्याप्य नारायणः स्थितः ॥५॥
अनन्तमव्ययं कविं समुद्रेऽन्तं विश्वशम्भुवम् ।
पद्मकोशप्रतीकाशं हृदयं चाप्यधोमुखम् ॥६॥
अधोनिष्ट्या वितस्त्यान्ते नाभ्यामुपरि तिष्ठति ।
ज्वालमालाकुलं भाति विश्वस्यायतनं महत् ॥७॥
सन्ततं शिलाभिस्तु लम्बत्याकोशसन्निभम् ।
तस्यान्ते सुषिरं सूक्ष्मं तस्मिन् सर्वं प्रतिष्ठितम् ॥८॥
तस्य मध्ये महानग्निर्विश्वार्चिर्विश्वतोमुखः ।
सोऽग्रभुग्विभजन् तिष्ठन्नाहारमजरः कविः ॥
तिर्यगूर्ध्वमधःशायी रश्मयस्तस्य सन्तताः ॥९॥

सन्तापयति स्वं देहमापादतलमस्तकः ।
तस्य मध्ये वह्निशिखा अणीयोर्ध्वा व्यवस्थिता ॥१०॥
नीलतोयदमध्यस्थाद्विद्युल्लेखेव भास्वरा ।
नीवारशूकवत्तन्वी पीता भास्वत्यणूपमा ॥११॥
तस्याः शिखाया मध्ये परमात्मा व्यवस्थितः ।
स ब्रह्मा स शिवः स हरिः सेन्द्रः सोऽक्षरः परमः स्वराट् ॥१२॥
ऋतं सत्यं परं ब्रह्म पुरुषं कृष्णपिङ्गलम् ।
ऊर्ध्वरेतं विरूपाक्षं विश्वरूपाय वै नमः ॥

***

श्रीमुकुन्दमालास्तोत्रम्

श्रीवल्लभेति वरदेति दयापरेति
भक्तप्रियेति भवलुण्ठनकोविदेति ।
नाथेति नागशयनेति जगन्निवासे-
त्यालापिनं प्रतिदिनं कुरु मां मुकुन्द ॥१॥
जयतु जयतु देवो देवकीनन्दनोऽयं
जयतु जयतु कृष्णो वृष्णिवंशप्रदीपः ।
जयतु जयतु मेघश्यामलः कोमलाङ्गो
जयतु जयतु पृथ्वीभारनाशो मुकुन्दः ॥२॥
मुकुन्द मूर्ध्ना प्रणिपत्य याचे
भवन्तमेकान्तमियन्तमर्थम् ।
अविस्मृतिस्त्वच्चरणारविन्दे
भवे भवे मेऽस्तु तव प्रसादात् ॥३॥
नाहं वन्दे तव चरणयोर्द्वन्द्वमद्वन्द्वहेतोः
कुम्भीपाकं गुरुमपि हरे नारकं नापनेतुम् ।
रम्यारामामृदुतनुलतानन्दने नापि रन्तुं
भावे भावे हृदयभवने भावयेयं भवन्तम् ॥४॥
नास्था धर्मे न वसुनिचये नैव कामोपभोगे
यद्यद् भाव्यं भवतु भगवन् पूर्वकर्मानुरूपम् ।

एतत्प्रार्थ्यं मम बहुमतं जन्मजन्मान्तरेऽपि
त्वत्पादाम्भोरुहयुगगता निश्चला भक्तिरस्तु ॥५॥
दिवि वा भुवि वा ममास्तु वासो
नरके वा नरकान्तक प्रकामम् ।
अवधीरितशारदारविन्दौ
चरणौ ते मरणेऽपि चिन्तयामि ॥६॥
कृष्ण त्वदीय पदपङ्कजपञ्जरान्तम्
अद्यैव मे विशतु मानसराजहंसः ।
प्राणप्रयाणसमये कफवातपित्तैः
कण्ठावरोधनविधौ स्मरणं कुतस्ते ॥७॥
चिन्तयामि हरिमेव सन्ततं
मन्दमन्दहसिताननाम्बुजम् ।
नन्दगोपतनयं परात्परं
नारदादिमुनिवृन्दवन्दितम् ॥८॥
करचरणसरोजे कान्तिमन्नेत्रमीने
श्रममुषि भुजवीचिव्याकुलेऽगाधमार्गे ।
हरिसरसि विगाह्यापीय तेजोजलौघं
भवमरुपरिखिन्नः खेदमद्य त्यजामि ॥९॥
सरसिजनयने सशङ्खचक्रे
मुरभिदि मा विरमस्व चित्त रन्तुम् ।
सुखतरमपरं न जातु जाने
हरिचरणस्मरणामृतेन तुल्यम् ॥१०॥
माभीर्मन्दमनो विचिन्त्य बहुधा यामीश्चिरं यातना
नामी नः प्रभवन्ति पापरिपवः स्वामी ननु श्रीधरः ।
आलस्यं व्यपनीय भक्तिसुलभं ध्यायस्व नारायणं
लोकस्य व्यसनापनोदनकरो दासस्य किं न क्षमः ॥११॥
भवजलधिगतानां द्वन्द्ववाताहतानां
सुतदुहितृकलत्रत्राणभारार्दितानाम् ।

विषमविषयतोये मज्जतामप्लवानां
भवति शरणमेको विष्णुपोतो नराणाम् ॥१२॥
भवजलधिमगाधं दुस्तरं निस्तरेयं
कथमहमिति चेतो मास्म गाः कातरत्वम्।
सरसिजदृशि देवे तावकी भक्तिरेका
नरकभिदि निषण्णा तारयिष्यत्यवश्यम् ॥१३॥
तृष्णातोये मदनपवनोद्धूतमोहोर्मिमाले
दारावर्ते तनयसहजग्राहसङ्घाकुले च।
संसाराख्ये महति जलधौ मज्जतां नस्त्रिधामन्
पादाम्भोजे वरद भवतो भक्तिभावे प्रसीद ॥१४॥
मा द्राक्षं क्षीणपुण्यान् क्षणमपि भवतो भक्तिहीनान् पदाब्जे
मा श्रौषं श्राव्यबन्धं तव चरितमपास्यान्यदाख्यानजातम्।
मा स्मार्षं माधव त्वामपि भुवनपते चेतसापह्नुवानान्
मा भूवं त्वत्सपर्याव्यतिकररहितो जन्मजन्मान्तरेऽपि ॥१५॥
जिह्वे कीर्तय केशवं मुररिपुं चेतो भज श्रीधरं
पाणिद्वन्द्व समर्चयाच्युतकथाः श्रोत्रद्वय त्वं शृणु।
कृष्णं लोकय लोचनद्वय हरेर्गच्छाङ्घ्रियुग्मालयं
जिघ्र घ्राण मुकुन्दपादतुलसीं मूर्धन्नमाधोक्षजम् ॥१६॥

हे लोकाः शृणुत प्रसूतिमरणव्याधेश्चिकित्सामिमां
योगज्ञाः समुदाहरन्ति मुनयो यां याज्ञवल्क्यादयः।
अन्तर्ज्योतिरमेयमेकममृतं कृष्णाख्यमापीयतां
तत्पीतं परमौषधं वितनुते निर्वाणमात्यन्तिकम् ॥१७॥

हे मर्त्याः परमं हितं शृणुत भो वक्ष्यामि सङ्क्षेपतः
संसारार्णवमापदूर्मिबहुलं सम्यक्प्रविश्य स्थिताः।
नानाज्ञानमपास्य चेतसि नमो नारायणायेत्यमुं
मन्त्रं सप्रणवं प्रणामसहितं प्रावर्तयध्वं मुहुः ॥१८॥

पृथ्वीरेणुरणुः पयांसि कणिकाः फल्गुस्फुलिङ्गो लघु-
स्तेजो निःश्वसनं मरुत्तनुतरं रन्ध्रं सुसूक्ष्मं नभः।

क्षुद्रा रुद्रपितामहप्रभृतयः कीटा समस्ताः सुरा
दृष्टे यत्र स तावको विजयते भूमा विधूतावधिः ॥१९॥

बद्धेनाञ्जलिना नतेन शिरसा गात्रैः सरोमोद्गमैः
कण्ठेन स्वरगद्गदेन नयनेनोद्गीर्णबाष्पाम्बुना।
नित्यं त्वच्चरणारविन्दयुगलध्यानामृतास्वादिनाम्
अस्माकं सरसीरुहाक्ष सततं सम्पद्यतां जीवितम् ॥२०॥

हे गोपालक हे कृपाजलनिधे हे सिन्धुकन्यापते
हे कंसान्तक हे गजेन्द्रकरुणापारीण हे माधव।
हे रामानुज हे जगत्त्रयगुरो हे पुण्डरीकाक्ष मां
हे गोपीजननाथ पालय परं जानामि न त्वां विना ॥२१॥

भक्तापायभुजङ्गगारुडमणिस्त्रैलोक्यरक्षामणिः
गोपीलोचनचातकाम्बुदमणिः सौन्दर्यमुद्रामणिः।
यः कान्तामणिरुक्मिणीघनकुचद्वन्द्वैकभूषामणिः
श्रेयो देवशिखामणिर्दिशतु नो गोपालचूडामणिः ॥२२॥

शत्रुच्छेदैकमन्त्रं सकलमुपनिषद्वाक्यसम्पूज्यमन्त्रं
संसारोत्तारमन्त्रं समुपचिततमःसङ्घनिर्याणमन्त्रम्।
सर्वैश्वर्यैकमन्त्रं व्यसनभुजगसन्दष्टसन्त्राणमन्त्रं
जिह्वे श्रीकृष्णमन्त्रं जप जप सततं जन्मसाफल्यमन्त्रम् ॥२३॥

व्यामोहप्रशमौषधं मुनिमनोवृत्तिप्रवृत्त्यौषधं
दैत्येन्द्रार्तिकरौषधं त्रिभुवनीसञ्जीवनैकौषधम्।
भक्तात्यन्तहितौषधं भवभयप्रध्वंसनैकौषधं
श्रेयःप्राप्तिकरौषधं पिब मनः श्रीकृष्णदिव्यौषधम् ॥२४॥

आम्नायाभ्यसनान्यरण्यरुदितं वेदव्रतान्यन्वहं
मेदश्छेदफलानि पूर्तविषयः सर्वे हुतं भस्मनि।
तीर्थानामवगाहनानि च गजस्नानं विना यत्पद-
द्वन्द्वाम्भोरुहसंस्मृतिं विजयते देवः स नारायणः ॥२५॥

श्रीमन्नाम प्रोच्य नारायणाख्यं
केन न प्रापुर्वाञ्छितं पापिनोऽपि ।
हा नः पूर्वं वाक्प्रवृत्ता न तस्मि-
स्तेन प्राप्तं गर्भवासादिदुःखम् ॥२६॥

मज्जन्मनः फलमिदं मधुकैटभारे
मत्प्रार्थनीयमदनुग्रह एष एव ।
त्वद्भृत्यभृत्यपरिचारकभृत्यभृत्य-
भृत्यस्य भृत्य इति मां स्मर लोकनाथ ॥२७॥

नाथे नः पुरुषोत्तमे त्रिजगतामेकाधिपे चेतसा
सेव्ये स्वस्य पदस्य दातरि सुरे नारायणे तिष्ठति ।
यं कञ्चित्पुरुषाधमं कतिपयग्रामेशमन्दार्थदं
सेवायै मृगयामहे नरमहो मूढा वराका वयम् ॥२८॥

मदन परिहर स्थितिं मदीये
मनसि मुकुन्दपदारविन्दधाम्नि ।
हरनयनकृशानुना कृशोऽसि
स्मरसि न चक्रपराक्रमं मुरारेः ॥२९॥

तत्त्वं ब्रुवाणानि परं परस्मा-
न्मधु क्षरन्तीव सतां फलानि ।
प्रावर्तय प्राञ्जलिरस्मि जिह्वे
नामानि नारायणगोचराणि ॥३०॥

इदं शरीरं परिणामपेशलं
पतत्यवश्यं श्लथसन्धिजर्जरम् ।
किमौषधैः क्लिश्यसि मूढ दुर्मते
निरामयं कृष्णरसायनं पिब ॥३१॥

दारा वाराकरवरसुता ते तनूजो विरिञ्चिः
स्तोता वेदास्तव सुरगणो भृत्यवर्गः प्रसादः ।
मुक्तिर्माया जगदविकलं तावकी देवकी ते
माता मित्रं बलरिपुसुतस्त्वय्यतोऽन्यन्न जाने ॥३२॥

कृष्णो रक्षतु नो जगत्त्रयगुरुः कृष्णं नमस्याम्यहं
कृष्णेनामरशत्रवो विनिहताः कृष्णाय तस्मै नमः ।
कृष्णादेव समुत्थितं जगदिदं कृष्णस्य दासोऽस्म्यहं
कृष्णे तिष्ठति विश्वमेतदखिलं हे कृष्ण रक्षस्व माम् ॥३३॥

स त्वं प्रसीद भगवन् कुरु मय्यनाथे
विष्णो कृपा परमकारुणिकः किल त्वम् ।
संसारसागरनिमग्नमनन्तदीनम्
उद्धर्तुमर्हसि हरे पुरुषोत्तमोऽसि ॥३४॥

नमामि नारायणपादपङ्कजं
करोमि नारायणपूजनं सदा ।
वदामि नारायणनाम निर्मलं
स्मरामि नारायणतत्त्वमव्ययम् ॥३५॥

श्रीनाथ नारायण वासुदेव
श्रीकृष्ण भक्तप्रियचक्रपाणे ।
श्रीपद्मनाभाच्युत कैटभारे
श्रीराम पद्माक्ष हरे मुरारे ॥३६॥

अनन्त वैकुण्ठ मुकुन्द कृष्ण
गोविन्द दामोदर माधवेति ।
वक्तुं समर्थोऽपि न वक्ति कश्चि-
दहो जनानां व्यसनाभिमुख्यम् ॥३७॥

ध्यायन्ति ये विष्णुमनन्तमव्ययं
हृत्पद्ममध्ये सततं व्यवस्थितम् ।
समाहितानां सतताभयप्रदं
ते यान्ति सिद्धिं परमां च वैष्णवीम् ॥३८॥

क्षीरसागरतरङ्गशीकरासारतारकितचारुमूर्तये ।
भोगिभोगशयनीयशायिने माधवाय मधुविद्विषे नमः ॥३९॥
यस्य प्रियौ श्रुतधरौ कविलोकवीरौ
मित्रे द्विजन्मवरपद्मशरावभूताम् ।
तेनाम्बुजाक्षचरणाम्बुजषट्पदेन
राज्ञा कृता कृतिरियं कुलशेखरेण ॥४०॥

***

श्रीहरिमीडेस्तोत्रम्

स्तोष्ये भक्त्या विष्णुमनादिं जगदादिं
यस्मिन्नेतत्संसृतिचक्रं भ्रमतीत्थम् ।
यस्मिन् दृष्टे नश्यति तत्संसृतिचक्रं
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥१॥
यस्यैकांशादित्थमशेषं जगदेतत्
प्रादुर्भूतं येन पिनद्धं पुनरित्थम् ।
येन व्याप्तं येन विबुद्धं सुखदुखै-
स्तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥२॥
सर्वज्ञो यो यश्च हि सर्वः सकलो यो
यश्चानन्दोऽनन्तगुणो यो गुणधामा।
यश्चाव्यक्तो व्यस्तसमस्तः सदसद्य-
स्तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥३॥
यस्मादन्यन्नास्त्यपि नैवं परमार्थं
दृश्यादन्यो निर्विषयज्ञानमयत्वात् ।
ज्ञातृज्ञानज्ञेयविहीनोऽपि सदा ज्ञ-
स्तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥४॥
आचार्येभ्यो लब्धसुसूक्ष्माच्युततत्त्वाद्
वैराग्येणाभ्यासबलाच्चैव द्रढिम्ना ।
भक्त्यैकाग्र्यध्यानपरा यं विदुरीशं
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥५॥

प्राणानायम्योमिति चित्तं हृदि रुद्ध्वा
नान्यत्स्मृत्वा तत्पुनरत्रैव विलाप्य ।
क्षीणे चित्ते भादृशिरस्मीति विदुर्यं
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥६॥
यं ब्रह्माख्यं देवमनन्यं परिपूर्णं
हृत्स्थं भक्तैर्लभ्यमजं सूक्ष्ममतर्क्यम् ।
ध्यात्वात्मस्थं ब्रह्मविदो यं विदुरीशं
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥७॥
मात्रातीतं स्वात्मविकासात्मविबोधं
ज्ञेयातीतं ज्ञानमयं हृद्युपलभ्यम् ।
भावग्राह्यानन्दमनन्यं च विदुर्यं
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥८॥
यद्यद्वेद्यं वस्तु सतत्त्वं विषयाख्यं
तत्तद् ब्रह्मैवेति विदित्वा तदहं च ।
ध्यायन्त्येवं यं सनकाद्या मुनयोऽजं
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥९॥
यद्यद्वेद्यं तत्तदहं नेति विहाय
स्वात्मज्योतिर्ज्ञानमयानन्दमवाप्य ।
तस्मिन्नस्मीत्यात्मविदो यं विदुरीशं
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥१०॥
हित्वा हित्वा दृश्यमशेषं सविकल्पं
मत्वा शिष्टं भादृशिमात्रं गगनाभम् ।
त्यक्त्वा देहं यं प्रविशन्त्यच्युतभक्ता-
स्तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥११॥
सर्वत्रास्ते सर्वशरीरी न च सर्वः
सर्वं वेत्त्येवेह न यं वेत्ति च सर्वः ।
सर्वत्रान्तर्यामितयेत्थं यमयन् य-
स्तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥१२॥

सर्वं सृष्ट्वा स्वात्मनि युक्त्या जगदेतद्
दृष्ट्वात्मानं चैवमजं सर्वजनेषु।
सर्वात्मैकोऽस्मीति विदुर्यं जनहृत्स्थं
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥१३॥

सर्वत्रैकः पश्यति जिघ्रत्यथ भुङ्क्ते
स्प्रष्टा श्रोता बुध्यति चेत्याहुरिमं यम्।
साक्षी चास्ते कर्तृषु पश्यन्निति चान्ये
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥१४॥

पश्यन् शृण्वन्नत्र विजानन् रसयन् सन्
जिघ्रन् बिभ्रद्देहमिमं जीवतयेत्थम्।
इत्यात्मानं यं विदुरीशं विषयज्ञं
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥१५॥

जाग्रद् दृष्ट्वा स्थूलपदार्थानथ मायां
दृष्ट्वा स्वप्नेऽथापि सुषुप्तौ सुखनिद्राम्।
इत्यात्मानं वीक्ष्य मुदास्ते च तुरीये
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥१६॥

पश्यन् शुद्धोऽप्यक्षर एको गुणभेदा-
न्नानाकारान् स्फाटिकवद् भाति विचित्रः।
भिन्नश्छिन्नश्चायमजः कर्मफलैर्य-
स्तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥१७॥

ब्रह्मा विष्णू रुद्रहुताशौ रविचन्द्रा-
विन्द्रो वायुर्यज्ञ इतीत्थं परिकल्प्य।
एकं सन्त यं बहुधाहुर्मतिभेदा-
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥१८॥

सत्यं ज्ञानं शुद्धमनन्तं व्यतिरिक्तं
शान्तं गूढं निष्कलमानन्दमनन्यम्।
इत्याहादौ यं वरुणोऽसौ भृगवेऽयं
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥१९॥

कोशानेतान् पञ्चरसादीनतिहाय
ब्रह्मास्मीति स्वात्मनि निश्चित्य दृशिस्थः ।
पित्रादिष्टो वेद भृगुर्यं यजुरन्ते
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥२०॥
येनाविष्टो यस्य च शक्त्या यदधीनः
क्षेत्रज्ञोऽयं कारयिता जन्तुषु कर्तुः ।
कर्ता भोक्तात्मात्र हि चिच्छक्त्यधिरूढ-
स्तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥२१॥
सृष्ट्वा सर्वं स्वात्मतयैवेत्थमतर्क्यं
व्याप्याथान्तः कृत्स्नमिदं सृष्टमशेषम् ।
सच्च त्यच्चाभूत्परमात्मा स य एक-
स्तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥२२॥
वेदान्तैश्चाध्यात्मिकशास्त्रैश्च पुराणैः
शास्त्रैश्चान्यैः सात्वततन्त्रैश्च यमीशम् ।
दृष्ट्वाथान्तश्चेतसि बुद्ध्वा विविशुर्यं
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥२३॥
श्रद्धाभक्तिज्ञानशमाद्यैर्यतमानै-
र्ज्ञातुं शक्यो देव इहैवाशु य ईशः ।
दुर्विज्ञेयो जन्मशतैश्चापि विना तै-
स्तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥२४॥
यस्यातर्क्यं स्वात्मविभूतेः परमार्थं
सर्वं खल्वित्यत्र निरुक्तं श्रुतिविद्भिः ।
तज्जादित्वादब्धितरङ्गाभमभिन्नं
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥२५॥
दृष्ट्वा गीतास्वक्षरतत्त्वं विधिनाजं
भक्त्या गुर्व्यालभ्य हृदिस्थं दृशिमात्रम् ।
ध्यात्वा तस्मिन्नस्म्यहमित्यत्र विदुर्यं
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥२६॥

क्षेत्रज्ञत्वं प्राप्य विभुः पञ्चमुखैर्यो
भुङ्क्तेऽजस्रं भोग्यपदार्थान् प्रकृतिस्थः।
क्षेत्रे क्षेत्रेऽप्स्विन्दुवदेको बहुधास्ते
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥२७॥

युक्त्यालोड्य व्यासवचांस्यत्र हि लभ्यः
क्षेत्रक्षेत्रज्ञान्तरविद्भिः पुरुषाख्यः।
योऽहं सोऽसौ सोऽस्म्यहमेवेति विदुर्यं
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥२८॥

एकीकृत्यानेकशरीरस्थमिमं ज्ञं
यं विज्ञायेहैव स एवाशु भवन्ति।
यस्मिँल्लीना नेह पुनर्जन्म लभन्ते
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥२९॥

द्वन्द्वैकत्वं यच्च मधुब्राह्मणवाक्यैः
कृत्वा शक्रोपासनमासाद्य विभूत्या।
योऽसौ सोऽहं सोऽस्म्यहमेवेति विदुर्यं
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥३०॥

योऽयं देहे चेष्टयितान्तःकरणस्थः
सूर्ये चासौ तापयिता सोऽस्म्यहमेव।
इत्यात्मैक्योपासनया यं विदुरीशं
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥३१॥

विज्ञानांशो यस्य सतः शक्त्यधिरूढो
बुद्धिर्बुध्यत्यत्र बहिर्बोधपदार्थान्।
नैवान्तःस्थं बुध्यति यं बोधयितारं
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥३२॥

कोऽयं देहे देव इतीत्थं सुविचार्य
ज्ञाता श्रोतानन्दयिता चैष हि देवः।
इत्यालोच्य ज्ञांश इहास्मीति विदुर्यं
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥३३॥

को ह्येवान्यादात्मनि न स्यादयमेष
ह्येवानन्दः प्राणिति चापानिति चेति।
इत्यस्तित्वं वक्त्युपपत्त्या श्रुतिरेषा
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥३४॥
प्राणो वाहं वाक्श्रवणादीनि मनो वा
बुद्धिर्वाहं व्यस्त उताहोऽपि समस्तः।
इत्यालोच्य ज्ञप्तिरिहास्मीति विदुर्यं
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥३५॥
नाहं प्राणो नैव शरीरं न मनोऽहं
नाहं बुद्धिर्नाहमहङ्कारधियौ च।
योऽत्र ज्ञांशः सोऽस्म्यहमेवेति विदुर्यं
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥३६॥
सत्तामात्रं केवलविज्ञानमजं सत्
सूक्ष्मं नित्यं तत्त्वमसीत्यात्मसुताय।
साम्नामन्ते प्राह पिता यं विभुमाद्यं
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥३७॥
मूर्तामूर्ते पूर्वमपोह्याथ समाधौ
दृश्यं सर्वं नेति च नेतीति विहाय।
चैतन्यांशे स्वात्मनि सन्तं च विदुर्यं
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥३८॥
ओतं प्रोतं यत्र च सर्वं गगनान्तं
योऽस्थूलानण्वादिषु सिद्धोऽक्षरसंज्ञः।
ज्ञाताऽतोऽन्यो नेत्युपलभ्यो न च वेद्य-
स्तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥३९॥
तावत् सर्वं सत्यमिवाभाति यदेतद्
यावत् सोऽस्मीत्यात्मनि यो ज्ञो न हि दृष्टः।
दृष्टे तस्मिन् सर्वमसत्यं भवतीदं
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥४०॥

रागामुक्तं लोहयुतं हेम यथाग्नौ
योगाष्टाङ्गैरुज्ज्वलितज्ञानमयाग्नौ ।
दग्ध्वात्मानं ज्ञं परिशिष्टं च विदुर्यं
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥४१॥
यं विज्ञानज्योतिषमाद्यं सुविभातं
हृद्यर्केन्द्वग्न्योकसमीड्यं तडिदाभम् ।
भक्त्याराध्येहैव विशन्त्यात्मनि सन्तं
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥४२॥
पायाद् भक्तं स्वात्मनि सन्तं पुरुषं यो
भक्त्या स्तौतीत्याङ्गिरसं विष्णुरिमं माम् ।
इत्यात्मानं स्वात्मनि संहृत्य सदैक-
स्तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥४३॥
इत्थं स्तोत्रं भक्तजनेड्यं भवभीति-
ध्वान्तार्काभं भगवत्पादीयमिदं यः ।
विष्णोर्लोकं पठति शृणोति व्रजति ज्ञो
ज्ञानं ज्ञेयं स्वात्मनि चाप्नोति मनुष्यः ॥४४॥

***

श्रीविष्णुषट्पदी

अविनयमपनय विष्णो दमय मनः शमय विषयमृगतृष्णाम् ।
भूतदयां विस्तारय तारय संसारसागरतः ॥१॥
दिव्यधुनीमकरन्दे परिमलपरिभोगसच्चिदानन्दे ।
श्रीपतिपदारविन्दे भवभयखेदच्छिदे वन्दे ॥२॥
सत्यपि भेदापगमे नाथ तवाहं न मामकीनस्त्वम् ।
सामुद्रो हि तरङ्गः क्वचन समुद्रो न तारङ्गः ॥३॥
उद्धृतनग नगभिदनुज दनुजकुलामित्र मित्रशशिदृष्टे ।
दृष्टे भवति प्रभवति न भवति किं भवतिरस्कारः ॥४॥
मत्स्यादिभिरवतारैरवतारवतावता सदा वसुधाम् ।
परमेश्वर परिपाल्यो भवता भवतापभीतोऽहम् ॥५॥

दामोदर गुणमन्दिर सुन्दरवदनारविन्द गोविन्द ।
भवजलधिमथनमन्दर परमं दरमपनय त्वं मे ॥६॥
नारायण करुणामय शरणं करवाणि तावकौ चरणौ ।
इति षट्पदी मदीये वदनसरोजे सदा वसतु ॥७॥

***

अच्युताष्टकम्

अच्युतं केशवं रामनारायणं
कृष्णदामोदरं वासुदेवं हरिम् ।
श्रीधरं माधवं गोपिकावल्लभं
जानकीनायकं रामचन्द्रं भजे ॥१॥
अच्युतं केशवं सत्यभामाधवं
माधवं श्रीधरं राधिकाराधितम् ।
इन्दिरामन्दिरं चेतसा सुन्दरं
देवकीनन्दनं नन्दजं सन्दधे ॥२॥
विष्णवे जिष्णवे शङ्खिने चक्रिणे-
रुक्मिणीरागिणे जानकीजानये ।
बल्लवीवल्लभायार्चितायात्मने
कंसविध्वंसिने वंशिने ते नमः ॥३॥
कृष्ण गोविन्द हे राम नारायण
श्रीपते वासुदेवाजित श्रीनिधे ।
अच्युतानन्त हे माधवाधोक्षज
द्वारकानायक द्रौपदीरक्षक ॥४॥
राक्षसक्षोभितः सीतया शोभितो
दण्डकारण्यभूपुण्यताकारणः ।
लक्ष्मणेनान्वितो वानरैः सेवितो-
ऽगस्त्यसम्पूजितो राघवः पातु माम् ॥५॥
धेनुकारिष्टकानिष्टकृद्द्वेषिहा
केशिहा कंसहृद्वंशिकावादकः ।

पूतनाकोपकः सूरजाखेलनो
बालगोपालकः पातु मां सर्वदा ॥६॥
विद्युदुद्योतवत्प्रस्फुरद्वाससं
प्रावृडम्भोदवत्प्रोल्लसद्विग्रहम् ।
वन्यया मालया शोभितोरःस्थलं
लोहिताङ्घ्रिद्वयं वारिजाक्षं भजे ॥७॥
कुञ्चितैः कुन्तलैर्भ्राजमानाननं
रत्नमौलिं लसत्कुण्डलं गण्डयोः ।
हारकेयूरकं कङ्कणप्रोज्ज्वलं
किङ्किणीमञ्जुलं श्यामलं तं भजे ॥८॥
अच्युतस्याष्टकं यः पठेदिष्टदं
प्रेमतः प्रत्यहं पूरुषः सस्पृहम् ।
वृत्ततः सुन्दरं कर्तृविश्वम्भर-
स्तस्य वश्यो हरिर्जायते सत्वरम् ॥९॥

***

श्रीदशावतारस्तोत्रम्

प्रलयपयोधिजले धृतवानसि वेदं
विहितवहित्रचरित्रमखेदम् ।
केशव धृतमीनशरीर जय जगदीश हरे ॥१॥
क्षितिरतिविपुलतरे तव तिष्ठति पृष्ठे
धरणिधरणकिणचक्रगरिष्ठे ।
केशव धृतकच्छपरूप जय जगदीश हरे ॥२॥
वसति दशनशिखरे धरणी तव लग्ना
शशिनि कलङ्ककलेव निमग्ना ।
केशव धृतसूकररूप जय जगदीश हरे ॥३॥
तव करकमलवरे नखमद्भुतशृङ्गं
दलितहिरण्यकशिपुतनुभृङ्गम् ।
केशव धृतनरहरिरूप जय जगदीश हरे ॥४॥

छलयसि विक्रमणे बलिमद्भुतवामन
पदनखनीरजनितजनपावन ।
केशव धृतवामनरूप जय जगदीश हरे ॥५॥
क्षत्रियरुधिरमये जगदपगतपापं
स्नपयसि पयसि शमितभवतापम् ।
केशव धृतभृगुपतिरूप जय जगदीश हरे॥६॥
वितरसि दिक्षु रणे दिक्पतिकमनीयं
दशमुखमौलिबलिं रमणीयम् ।
केशव धृतरघुपतिरूप जय जगदीश हरे ॥७॥
वहसि वपुषि विशदे वसनं जलदाभं
हलहतिभीतिमिलितयमुनाभम् ।
केशव धृतहलधररूप जय जगदीश हरे ॥८॥
निन्दसि यज्ञविधेरहह श्रुतिजातं
सदयहृदयदर्शितपशुघातम् ।
केशव धृतबुद्धशरीर जय जगदीश हरे ॥९॥
म्लेच्छनिवहनिधने कलयसि करवालं
धूमकेतुमिव किमपि करालम् ।
केशव धृतकल्किशरीर जय जगदीश हरे॥१०॥
श्रीजयदेव कवेरिदमुदितमुदारं
शृणु सुखदं शुभदं भवसारम् ।
केशव धृतदशविधरूप जय जगदीश हरे ॥११॥
वेदानुद्धरते जगन्ति वहते भूगोलमुद्बिभ्रते
दैत्यं दारयते बलिं छलयते क्षत्रक्षयं कुर्वते ।
पौलस्त्यं जयते हलं कलयते कारुण्यमातन्वते
म्लेच्छान् मूर्छयते दशाकृतिकृते कृष्णाय तुभ्यं नमः ॥१२॥

***

श्रीविष्णुप्रातःस्मरणस्तोत्रम्

प्रातः स्मरामि भवभीतिमहार्तिशान्त्यै
नारायणं गरुडवाहनमब्जनाभम् ।
ग्राहाभिभूतवरवारणमुक्तिहेतुं
चक्रायुधं तरुणवारिजपत्रनेत्रम् ॥१॥
प्रातर्नमामि मनसा वचसा च मूर्ध्ना
पादारविन्दयुगलं परमस्य पुंसः ।
नारायणस्य नरकार्णवतारणस्य
पारायणप्रवणविप्रपरायणस्य ॥२॥
प्रातर्भजामि भजतामभयङ्करं तं
प्राक्सर्वजन्मकृतपापभयापहत्यै ।
यो ग्राहवक्त्रपतिताङ्घ्रिगजेन्द्रघोर-
शोकप्रणाशनकरो धृतशङ्खचक्रः ॥३॥
श्लोकत्रयमिदं पुण्यं प्रातः प्रातः पठेन्नरः ।
लोकत्रयगुरुस्तस्मै दद्यादात्मपदं हरिः ॥४॥

***

श्रीसूर्यस्तोत्राणि

श्रीसूर्यध्यानम्

रक्ताम्बुजासनमशेषगुणैकसिन्धुं
भानुं समस्तजगतामधिपं भजामि ।
पद्मद्वयाभयवरान् दधतं कराब्जै-
र्माणिक्यमौलिमरुणाङ्गरुचिं त्रिनेत्रम् ॥

***

श्रीसूर्यप्रणामः

जवाकुसुमसङ्काशं काश्यपेयं महाद्युतिम् ।
ध्वान्तारिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम् ॥

***

श्रीसूर्याष्टकम्

सांम्ब उवाच

आदिदेव नमस्तुभ्यं प्रसीद मम भास्कर ।
दिवाकर नमस्तुभ्यं प्रभाकर नमोऽस्तु ते ॥१॥
सप्ताश्वरथमारूढं प्रचण्डं कश्यपात्मजम् ।
श्वेतपद्मधरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम् ॥२॥
लोहितं रथमारूढं सर्वलोकपितामहम् ।
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम् ॥३॥
त्रैगुण्यं च महाशूरं ब्रह्मविष्णुमहेश्वरम् ।
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम् ॥४॥
बृंहितं तेजःपुञ्जं च वायुमाकाशमेव च ।
प्रभुं च सर्वलोकानां तं सूर्यं प्रणमाम्यहम् ॥५॥
बन्धूकपुष्पसङ्काशं हारकुण्डलभूषितम् ।
एकचक्रधरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम् ॥६॥

तं सूर्यं जगत्कर्तारं महातेजःप्रदीपनम् ।
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम् ॥७॥
तं सूर्यं जगतां नाथं ज्ञानविज्ञानमोक्षदम् ।
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम् ॥८॥

***

श्रीसूर्यकवचस्तोत्रम्

याज्ञवल्क्य उवाच

शृणुष्व मुनिशार्दूल सूर्यस्य कवचं शुभम् ।
शरीरारोग्यदं दिव्यं सर्वसौभाग्यदायकम् ॥१॥
देदीप्यमानमुकुटं स्फुरन्मकरकुण्डलम् ।
ध्यात्वा सहस्रकिरणं स्तोत्रमेतदुदीरयेत् ॥२॥
शिरो मे भास्करः पातु ललाटं मेऽमितद्युतिः ।
नेत्रे दिनमणिः पातु श्रवणे वासरेश्वरः ॥३॥
घ्राणं घर्मघृणिः पातु वदनं वेदवाहनः ।
जिह्वा मे मानदः पातु कण्ठं मे सुरवन्दितः ॥४॥
स्कन्धौ प्रभाकरः पातु वक्षः पातु जनप्रियः ।
पातु पादौ द्वादशात्मा सर्वाङ्गं सकलेश्वरः ॥५॥
सूर्यरक्षात्मकं स्तोत्रं लिखित्वा भूर्जपत्रके ।
दधाति यः करे तस्य वशगाः सर्वसिद्धयः ॥६॥
सुस्नातो यो जपेत् सम्यग् योऽधीते स्वस्थमानसः ।
स रोगमुक्तो दीर्घायुः सुखं पुष्टिं च विन्दति ॥७॥

***

श्रीसूर्यप्रातःस्मरणस्तोत्रम्

प्रातः स्मरामि खलु तत्सवितुर्वरेण्यं
रूपं हि मण्डलमृचोऽथ तनुर्यजूंषि ।

सामानि यस्य किरणाः प्रभवादिहेतुं
ब्रह्माहरात्मकमलक्ष्यमचिन्त्यहेतुम् ॥१॥
प्रातर्नमामि तरणिं तनुवाङ्मनोभि-
र्ब्रह्मेन्द्रपूर्वकसुरैर्नुतमर्चितं च ।
वृष्टिप्रमोचनविनिग्रहहेतुभूतं
त्रैलोक्यपालनपरं त्रिगुणात्मकं च ॥२॥
प्रातर्भजामि सवितारमनन्तशक्तिं
पापौघशत्रुभयरोगहरं परं च ।
तं सर्वलोककलनात्मककालमूर्तिं
गोकण्ठबन्धनविमोचनमादिदेवम् ॥३॥
श्लोकत्रयमिदं भानोः प्रातः प्रातः पठेत्तु यः ।
स सर्वव्याधिनिर्मुक्तः परं सुखमवाप्नुयात् ॥४॥

***

देवीस्तोत्राणि

देवीध्यानम्

कालाभ्राभां कटाक्षैररिकुलभयदां मौलिबद्धेन्दुरेखां
शङ्खं चक्रं कृपाणं त्रिशिखमपि करैरुद्वहन्तीं त्रिनेत्राम् ।
सिंहस्कन्धाधिरूढां त्रिभुवनमखिलं तेजसा पूरयन्तीं
ध्यायेद् दुर्गां जयाख्यां त्रिदशपरिवृतां सेवितां सिद्धिकामैः ॥

***

देवीप्रणामः

सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥

***

देव्यथर्वशीर्षोपनिषत्

ॐ सर्वे वै देवा देवीमुपतस्थुः कासि त्वं महादेवीति ॥१॥

साब्रवीत् – अहं ब्रह्मस्वरूपिणी। मत्तः प्रकृतिपुरुषात्मकं जगत्। शून्यं चाशून्यं च ॥२॥

अहमानन्दानानन्दौ । अहं विज्ञानाविज्ञाने । अहं ब्रह्माब्रह्मणी वेदितव्ये। अहं पञ्चभूतान्यपञ्चभूतानि। अहमखिलं जगत् ॥३॥

वेदोऽहमवेदोऽहम् । विद्याहमविद्याहम् । अजाहमनजाहम् । अधश्चोर्ध्वं च तिर्यक्चाहम् ॥४॥

अह रुद्रेभिर्वसुभिश्चरामि । अहमादित्यैरुत विश्वदेवैः । अहं मित्रावरुणावुभौ बिभर्मि। अहमिन्द्राग्नी अहमश्विनावुभौ ॥५॥

अहं सोमं त्वष्टारं पूषणं भगं दधामि। अहं विष्णुमुरुक्रमं ब्रह्माणमुत प्रजापतिं दधामि ॥६॥

अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये यजमानाय सुन्वते। अहं राष्ट्री सङ्गमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम् । अहं सुवे पितरमस्य

मूर्धन्मम योनिरप्स्वन्तः समुद्रे । य एवं वेद । स दैवीं सम्पदमाप्नोति ॥७॥
ते देवा अब्रुवन् – नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥८॥
तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम् ।
दुर्गां देवीं शरणं प्रपद्यामहेऽसुरान्नाशयित्र्यै ते नमः ॥९॥
देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति ।
सा नो मन्द्रेषमूर्जं दुहाना धेनुर्वागस्मानुप सुष्टुतैतु ॥१०॥
कालरात्रीं ब्रह्मस्तुतां वैष्णवीं स्कन्दमातरम् ।
सरस्वतीमदितिं दक्षदुहितरं नमामः पावनां शिवाम् ॥११॥
महालक्ष्म्यै च विद्महे सर्वशक्त्यै च धीमहि ।
तन्नो देवी प्रचोदयात्॥१२॥
अदितिर्ह्यजनिष्ट दक्ष या दुहिता तव ।
तां देवा अन्वजायन्त भद्रा अमृतबन्धवः ॥१३॥
कामो योनिः कमला वज्रपाणिर्गुहा हसा मातरिश्वाभ्रमिन्द्रः ।
पुनर्गुहा सकला मायया च पुरूच्यैषा विश्वमातादिविद्योम् ॥१४॥
एषात्मशक्तिः । एषा विश्वमोहिनी । पाशाङ्कुशधनुर्बाणधरा । एषा श्रीमहाविद्या । य एवं वेद स शोकं तरति ॥१५॥
नमस्ते अस्तु भगवति मातरस्मान् पाहि सर्वतः ॥१६॥
सैषाष्टौ वसवः । सैषैकादशरुद्राः । सैषा द्वादशादित्याः । सैषा विश्वेदेवाः सोमपा असोमपाश्च । सैषा यातुधाना असुरा रक्षांसि पिशाचा यक्षाः सिद्धाः । सैषा सत्त्वरजस्तमांसि । सैषा ब्रह्मविष्णुरुद्ररूपिणी । सैषा प्रजापतीन्द्रमनवः । सैषा ग्रहनक्षत्रज्योतींषि । कलाकाष्ठादिकालरूपिणी । तामहं प्रणौमि नित्यम् ।
पापापहारिणीं देवीं भुक्तिमुक्तिप्रदायिनीम् ।
अनन्तां विजयां शुद्धां शरण्यां शिवदां शिवाम् ॥१७॥
वियदीकारसंयुक्तं वीतिहोत्रसमन्वितम् ।
अर्धेन्दुलसितं देव्या बीजं सर्वार्थसाधकम् ॥१८॥

एवमेकाक्षरं ब्रह्म यतयः शुद्धचेतसः ।
ध्यायन्ति परमानन्दमया ज्ञानाम्बुराशयः ॥१९॥
वाङ्माया ब्रह्मसूस्तस्मात् षष्ठं वक्त्रसमन्वितम्।
सूर्योऽवामश्रोत्रबिन्दुसंयुक्तष्टात्तृतीयकः ।
नारायणेन संमिश्रो वायुश्चाधरयुक् ततः ।
विच्चे नवार्णकोऽर्णः स्यान्महदानन्ददायकः ॥२०॥
हृत्पुण्डरीकमध्यस्थां प्रातःसूर्यसमप्रभाम् ।
पाशाङ्कुशधरां सौम्यां वरदाभयहस्तकाम् ।
त्रिनेत्रां रक्तवसनां भक्तकामदुघां भजे ॥२१॥
नमामि त्वां महादेवीं महाभयविनाशिनीम् ।
महादुर्गप्रशमनीं महाकारुण्यरूपिणीम् ॥२२॥

यस्याः स्वरूपं ब्रह्मादयो न जानन्ति तस्मादुच्यते अज्ञेया । यस्या अन्तो न लभ्यते तस्मादुच्यते अनन्ता । यस्या लक्ष्यं नोपलक्ष्यते तस्मादुच्यते अलक्ष्या । यस्या जननं नोपलभ्यते तस्मादुच्यते अजा । एकैव सर्वत्र वर्तते तस्मादुच्यते एका । एकैव विश्वरूपिणी तस्मादुच्यते नैका । अत एवोच्यते अज्ञेयानन्तालक्ष्याजैका नैकेति ॥२३॥

मन्त्राणां मातृका देवी शब्दानां ज्ञानरूपिणी ।
ज्ञानानां चिन्मयातीता शून्यानां शून्यसाक्षिणी ।
यस्याः परतरं नास्ति सैषा दुर्गा प्रकीर्तिता ॥२४॥
तां दुर्गां दुर्गमां देवीं दुराचारविघातिनीम् ।
नमामि भवभीतोऽहं संसारार्णवतारिणीम् ॥२५॥

इदमथर्वशीर्षं योऽधीते स पञ्चाथर्वशीर्षजपफलमाप्नोति। इदमथर्वशीर्षमज्ञात्वा योऽर्चां स्थापयति शतलक्षं प्रजप्त्वापि सोऽर्चासिद्धिं न विन्दति । शतमष्टोत्तरं चास्य पुरश्चर्याविधिः स्मृतः ।

दशवारं पठेद्यस्तु सद्यः पापैः प्रमुच्यते ।
महादुर्गाणि तरति महादेव्याः प्रसादतः ॥२६॥

सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति । प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति । सायं प्रातः प्रयुञ्जानो अपापो भवति । निशीथे तुरीयसन्ध्यायां

जप्त्वा वाक्सिद्धिर्भवति। नूतनायां प्रतिमायां जप्त्वा देवतासान्निध्यं भवति। प्राणप्रतिष्ठायां जप्त्वा प्राणानां प्रतिष्ठा भवति। भौमाश्विन्यां महादेवीसन्निधौ जप्त्वा महामृत्युं तरति। स महामृत्युं तरति य एवं वेद। इत्युपनिषत् ॥२७॥

***

देवीसूक्तम्

अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चराम्यहमादित्यैरुत विश्वदेवैः।
अहं मित्रावरुणोभा बिभर्म्यहमिन्द्राग्नी अहमश्विनोभा ॥१॥
अहं सोममाहनसं बिभर्म्यहं त्वष्टारमुत पूषणं भगम्।
अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये यजमानाय सुन्वते ॥२॥
अहं राष्ट्री सङ्गमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्।
तां मा देवा व्यदधुः पुरुत्रा भूरिस्थात्रां भूर्यावेशयन्तीम् ॥३॥
मया सो अन्नमत्ति यो विपश्यति यः प्राणिति य ईं शृणोत्युक्तम्।
अमन्तवो मां त उपक्षियन्ति श्रुधि श्रुत श्रद्धिवं ते वदामि ॥४॥
अहमेव स्वयमिदं वदामि जुष्टं देवेभिरुत मानुषेभिः।
यं कामये तं तमुग्रं कृणोमि तं ब्रह्माणं तमृषिं तं सुमेधाम् ॥५॥
अहं रुद्राय धनुरा तनोमि ब्रह्मद्विषे शरवे हन्तवा उ।
अहं जनाय समदं कृणोम्यहं द्यावापृथिवी आ विवेश ॥६॥
अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन् मम योनिरप्स्वन्तः समुद्रे।
ततो वि तिष्ठे भुवनानु विश्वोतामूं द्यां वर्ष्मणोप स्पृशामि ॥७॥
अहमेव वात इव प्र वाम्यारभमाणा भुवनानि विश्वा।
परो दिवा पर एना पृथिव्यैतावती महिना सं बभूव ॥८॥

***

दुर्गासूक्तम्

जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः।
स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः ॥१॥

तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम् ।
दुर्गां देवीं शरणमहं प्रपद्ये सुतरसितरसे नमः ॥२॥
अग्ने त्वं पारया नव्यो अस्मान्स्वस्तिभिरति दुर्गाणि विश्वा ।
पूश्च पृथ्वी बहुला न उर्वी भवा तोकाय तनयाय शंयोः ॥३॥
विश्वानि नो दुर्गहा जातवेदः सिन्धुन्न नावा दुरितातिपर्षि ।
अग्ने अत्रिवन्मनसा गृणानोऽस्माकं बोध्यविता तनूनाम् ॥४॥
पृतनाजितं सहमानमुग्रमग्निं हुवेम परमात्सधस्थात् ।
स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वाक्षामद्देवो अति दुरितात्यग्निः ॥५॥
प्रत्नोषि कमीड्यो अध्वरेषु सनाच्च होता नव्यश्च सत्सि ।
स्वां चाग्ने तनुवं पिप्रयस्वास्मभ्यं च सौभगमायजस्व ॥६॥
गोभिर्जुष्टमयुजो निषिक्तं तवेन्द्र विष्णोरनुसञ्चरेम ।
नाकस्य पृष्ठमभि संवसानो वैष्णवीं लोक इह मादयन्ताम् ॥७॥

***

ब्रह्मकृतदेवीस्तुतिः

त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारः स्वरात्मिका ।
सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधामात्रात्मिका स्थिता ॥१॥
अर्धमात्रा स्थिता नित्या यानुच्चार्याविशेषतः ।
त्वमेव सा त्वं सावित्री त्वं देवजननी परा ॥२॥
त्वयैतद्धार्यते विश्वं त्वयैतत्सृज्यते जगत् ।
त्वयैतत्पाल्यते देवि त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा ॥३॥
विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं स्थितिरूपा च पालने ।
तथा संहृतिरूपान्ते जगतोऽस्य जगन्मये ॥४॥
महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृतिः ।
महामोहा च भवती महादेवी महासुरी ॥५॥
प्रकृतिस्त्वं हि सर्वस्य गुणत्रयविभाविनी ।
कालरात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिश्च दारुणा ॥६॥
त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ह्रीस्त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा ।
लज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेव च ॥७॥

खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा ।
शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा ॥८॥
सौम्यासौम्यतराशेषसौम्येभ्यस्त्वतिसुन्दरी ।
परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी ॥९॥
यच्च किञ्चित्क्वचिद्वस्तु सदसद्वाखिलात्मिके ।
तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे मया ॥१०॥
यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत्पातात्ति यो जगत् ।
सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः ॥११॥
विष्णुः शरीरग्रहणमहमीशान एव च ।
कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान् भवेत् ॥१२॥
सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैरुदारैर्देवि संस्तुता ।
मोहयैतौ दुराधर्षावसुरौ मधुकैटभौ ॥१३॥
प्रबोधं च जगत्स्वामी नीयतामच्युतो लघु ।
बोधश्च क्रियतामस्य हन्तुमेतौ महासुरौ ॥१४॥

***

शक्रादिकृतदेवीस्तुतिः

शक्रादयः सुरगणा निहतेऽतिवीर्ये
तस्मिन् दुरात्मनि सुरारिबले च देव्या ।
तां तुष्टुवुः प्रणतिनम्रशिरोधरांसा
वाग्भिः प्रहर्षपुलकोद्गमचारुदेहाः ॥१॥
देव्या यया ततमिदं जगदात्मशक्त्या
निःशेषदेवगणशक्तिसमूहमूर्त्या ।
तामम्बिकामखिलदेवमहर्षिपूज्यां
भक्त्या नताः स्म विदधातु शुभानि सा नः ॥२॥
यस्याः प्रभावमतुलं भगवाननन्तो
ब्रह्मा हरश्च न हि वक्तुमलं बलं च ।
सा चण्डिकाखिलजगत्परिपालनाय
नाशाय चाशुभभयस्य मतिं करोतु ॥३॥

या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः।
श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा
तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम् ॥४॥
किं वर्णयाम तव रूपमचिन्त्यमेतत्
किं चातिवीर्यमसुरक्षयकारि भूरि।
किं चाहवेषु चरितानि तवाति यानि
सर्वेषु देव्यसुरदेवगणादिकेषु ॥५॥
हेतुः समस्तजगतां त्रिगुणापि दोषै-
र्न ज्ञायसे हरिहरादिभिरप्यपारा।
सर्वाश्रयाखिलमिदं जगदंशभूत-
मव्याकृता हि परमा प्रकृतिस्त्वमाद्या ॥६॥
यस्याः समस्तसुरता समुदीरणेन
तृप्तिं प्रयाति सकलेषु मखेषु देवि।
स्वाहासि वै पितृगणस्य च तृप्तिहेतु-
रुच्चार्यसे त्वमत एव जनैः स्वधा च ॥७॥
या मुक्तिहेतुरविचिन्त्यमहाव्रता च
अभ्यस्यसे सुनियतेन्द्रियतत्त्वसारैः।
मोक्षार्थिभिर्मुनिभिरस्तसमस्तदोषै-
र्विद्यासि सा भगवती परमा हि देवी ॥८॥
शब्दात्मिका सुविमलर्ग्यजुषां निधान-
मुद्गीथरम्यपदपाठवतां च साम्नाम्।
देवी त्रयी भगवती भवभावनाय
वार्ता च सर्वजगतां परमार्तिहन्त्री ॥९॥
मेधासि देवि विदिताखिलशास्त्रसारा
दुर्गासि दुर्गभवसागरनौरसङ्गा।
श्रीः कैटभारिहृदयैककृताधिवासा
गौरी त्वमेव शशिमौलिकृतप्रतिष्ठा ॥१०॥

ईषत्सहासममलं परिपूर्णचन्द्र-
बिम्बानुकारिकनकोत्तमकान्तिकान्तम् ।
अत्यद्भुतं प्रहृतमाप्तरुषा तथापि
वक्त्रं विलोक्य सहसा महिषासुरेण ॥११॥

दृष्ट्वा तु देवि कुपितं भ्रुकुटीकराल-
मुद्यच्छशाङ्कसदृशच्छवि यन्न सद्यः ।
प्राणान् मुमोच महिषस्तदतीव चित्रं
कैर्जीव्यते हि कुपितान्तकदर्शनेन ॥१२॥

देवि प्रसीद परमा भवती भवाय
सद्यो विनाशयसि कोपवती कुलानि ।
विज्ञातमेतदधुनैव यदस्तमेत-
न्नीतं बलं सुविपुलं महिषासुरस्य ॥१३॥

ते सम्मता जनपदेषु धनानि तेषां
तेषां यशांसि न च सीदति धर्मवर्गः ।
धन्यास्त एव निभृतात्मजभृत्यदारा
येषां सदाभ्युदयदा भवती प्रसन्ना ॥१४॥

धर्म्याणि देवि सकलानि सदैव कर्मा-
ण्यत्यादृतः प्रतिदिनं सुकृती करोति ।
स्वर्गं प्रयाति च ततो भवतीप्रसादा-
ल्लोकत्रयेऽपि फलदा ननु देवि तेन ॥१५॥

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।
दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या
सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता ॥१६॥

एभिर्हतैर्जगदुपैति सुखं तथैते
कुर्वन्तु नाम नरकाय चिराय पापम् ।
सङ्ग्राममृत्युमधिगम्य दिवं प्रयान्तु
मत्वेति नूनमहितान् विनिहंसि देवि ॥१७॥

दृष्ट्वैव किं न भवती प्रकरोति भस्म
सर्वासुरानरिषु यत्प्रहिणोषि शस्त्रम् ।
लोकान् प्रयान्तु रिपवोऽपि हि शस्त्रपूता
इत्थं मतिर्भवति तेष्वपि तेऽतिसाध्वी ॥१८॥
खड्गप्रभानिकरविस्फुरणैस्तथोग्रैः
शूलाग्रकान्तिनिवहेन दृशोऽसुराणाम् ।
यन्नागता विलयमंशुमदिन्दुखण्ड-
योग्याननं तव विलोकयतां तदेतत् ॥१९॥
दुर्वृत्तवृत्तशमनं तव देवि शीलं
रूपं तथैतदविचिन्त्यमतुल्यमन्यैः ।
वीर्यं च हन्तृ हृतदेवपराक्रमाणां
वैरिष्वपि प्रकटितैव दया त्वयेत्थम् ॥२०॥
केनोपमा भवतु तेऽस्य पराक्रमस्य
रूपं च शत्रुभयकार्यतिहारि कुत्र ।
चित्ते कृपा समरनिष्ठुरता च दृष्टा
त्वय्येव देवि वरदे भुवनत्रयेऽपि ॥२१॥
त्रैलोक्यमेतदखिलं रिपुनाशनेन
त्रातं त्वया समरमूर्धनि तेऽपि हत्वा ।
नीता दिवं रिपुगणा भयमप्यपास्त-
मस्माकमुन्मदसुरारिभवं नमस्ते ॥२२॥
शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके ।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च ॥२३॥
प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे ।
भ्रामणेनात्मशूलस्य चोत्तरस्यां तथेश्वरि ॥२४॥
सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते ।
यानि चात्यर्थघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम् ॥२५॥
खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके ।
करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः ॥२६॥

***

देवगणकृतापराजितास्तुतिः

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥१॥
रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः ।
ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततं नमः ॥२॥
कल्याण्यै प्रणता वृद्ध्यै सिद्ध्यै कुर्मो नमो नमः ।
नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः ॥३॥
दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै ।
ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः ॥४॥
अतिसौम्यातिरौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः ।
नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः ॥५॥
या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥६॥
या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥७॥
या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥८॥
या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥९॥
या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१०॥
या देवी सर्वभूतेषु छायारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥११॥
या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१२॥
या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१३॥
या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१४॥

या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१५॥
या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१६॥
या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१७॥
या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१८॥
या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१९॥
या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२०॥
या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२१॥
या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२२॥
या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२३॥
या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२४॥
या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२५॥
या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२६॥
इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या।
भूतेषु सततं तस्यै व्याप्तिदेव्यै नमो नमः ॥२७॥
चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद् व्याप्य स्थिता जगत्।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२८॥

***

इन्द्रादिकृतनारायणीस्तुतिः

देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद
　प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य ।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं
　त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य ॥१॥
आधारभूता जगतस्त्वमेका
　महीस्वरूपेण यतः स्थितासि ।
अपां स्वरूपस्थितया त्वयैत-
　दाप्यायते कृत्स्नमलङ्घ्यवीर्ये ॥२॥
त्वं वैष्णवीशक्तिरनन्तवीर्या
　विश्वस्य बीजं परमासि माया ।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत्
　त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः ॥३॥
विद्याः समस्तास्तव देवि भेदाः
　स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु ।
त्वयैकया पूरितमम्बयैतत्
　का ते स्तुतिः स्तव्यपरापरोक्तिः ॥४॥
सर्वभूता यदा देवी भुक्तिमुक्तिप्रदायिनी ।
त्वं स्तुता स्तुतये का वा भवन्तु परमोक्तयः ॥५॥
सर्वस्य बुद्धिरूपेण जनस्य हृदि संस्थिते ।
स्वर्गापवर्गदे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥६॥
कलाकाष्ठादिरूपेण परिणामप्रदायिनि ।
विश्वस्योपरतौ शक्ते नारायणि नमोऽस्तु ते ॥७॥
सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥८॥
सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्तिभूते सनातनि ।
गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तु ते ॥९॥
शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे ।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥१०॥

हंसयुक्तविमानस्थे ब्रह्माणीरूपधारिणी ।
कौशाम्भःक्षरिके देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥११॥
त्रिशूलचन्द्राहिधरे महावृषभवाहिनी ।
माहेश्वरीस्वरूपेण नारायणि नमोऽस्तु ते ॥१२॥
मयूरकुक्कुटवृते महाशक्तिधरेऽनघे ।
कौमारीरूपसंस्थाने नारायणि नमोऽस्तु ते ॥१३॥
शङ्खचक्रगदाशार्ङ्गगृहीतपरमायुधे ।
प्रसीद वैष्णवीरूपे नारायणि नमोऽस्तु ते ॥१४॥
गृहीतोग्रमहाचक्रे दंष्ट्रोद्धृतवसुन्धरे ।
वराहरूपिणि शिवे नारायणि नमोऽस्तु ते ॥१५॥
नृसिंहरूपेणोग्रेण हन्तुं दैत्यान् कृतोद्यमे ।
त्रैलोक्यत्राणसहिते नारायणि नमोऽस्तु ते ॥१६॥
किरीटिनि महावज्रे सहस्रनयनोज्ज्वले ।
वृत्रप्राणहरे चैन्द्रि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥१७॥
शिवदूतीस्वरूपेण हतदैत्यमहाबले ।
घोररूपे महारावे नारायणि नमोऽस्तु ते ॥१८॥
दंष्ट्राकरालवदने शिरोमालाहिभूषणे ।
चामुण्डे मुण्डमथने नारायणि नमोऽस्तु ते ॥१९॥
लक्ष्मि लज्जे महाविद्ये श्रद्धे पुष्टि स्वधे ध्रुवे ।
महारात्रि महामाये नारायणि नमोऽस्तु ते ॥२०॥
मेधे सरस्वति वरे भूति बाभ्रवि तामसि ।
नियते त्वं प्रसीदेशे नारायणि नमोऽस्तु ते ॥२१॥
सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ॥२२॥
एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रयभूषितम् ।
पातु नः सर्वभूतेभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तु ते ॥२३॥
ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुरसूदनम् ।
त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकालि नमोऽस्तु ते ॥२४॥

हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत् ।
सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्यो नः सुतानिव ॥२५॥
असुरासृग्वसापङ्कचर्चितस्ते करोज्ज्वलः ।
शुभाय खड्गो भवतु चण्डिके त्वां नता वयम् ॥२६॥
रोगानशेषानपहंसि तुष्टा
रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां
त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति ॥२७॥
एतत्कृतं यत्कदनं त्वयाद्य
धर्मद्विषां देवि महासुराणाम् ।
रूपैरनेकैर्बहुधात्ममूर्तिं
कृत्वाम्बिके तत्प्रकरोति कान्या ॥२८॥
विद्यासु शास्त्रेषु विवेकदीपे-
ष्वाद्येषु वाक्येषु च का त्वदन्या ।
ममत्वगर्तेऽतिमहान्धकारे
विभ्रामयत्येतदतीव विश्वम् ॥२९॥
रक्षांसि यत्रोग्रविषाश्च नागा
यत्रारयो दस्युबलानि यत्र ।
दावानलो यत्र तथाब्धिमध्ये
तत्र स्थिता त्वं परिपासि विश्वम् ॥३०॥
विश्वेश्वरि त्वं परिपासि विश्वं
विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम्।
विश्वेशवन्द्या भवती भवन्ति
विश्वाश्रया ये त्वयि भक्तिनम्राः ॥३१॥
देवि प्रसीद परिपालय नोऽरिभीते-
र्नित्यं यथासुरवधादधुनैव सद्यः ।
पापानि सर्वजगतां प्रशमं नयाशु
उत्पातपाकजनितांश्च महोपसर्गान् ॥३२॥
प्रणतानां प्रसीद त्वं देवि विश्वार्तिहारिणि ।
त्रैलोक्यवासिनामीड्ये लोकानां वरदा भव ॥३३॥

***

श्रीदुर्गास्तवराजः

नमस्ते शरण्ये शिवे सानुकम्पे
नमस्ते जगद्व्यापिके विश्वरूपे ।
नमस्ते जगद्वन्द्यपादारविन्दे
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥१॥
नमस्ते जगच्चिन्त्यमानस्वरूपे
नमस्ते महायोगिनि ज्ञानरूपे ।
नमस्ते सदानन्दनन्दस्वरूपे
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥२॥
अनाथस्य दीनस्य तृष्णातुरस्य
क्षुधार्तस्य भीतस्य बद्धस्य जन्तोः ।
त्वमेका गतिर्देवि निस्तारकर्त्री
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥३॥
अरण्ये रणे दारुणे शत्रुमध्ये-
ऽनले सागरे प्रान्तरे राजगेहे ।
त्वमेका गतिर्देवि निस्तारहेतु-
र्नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥४॥
अपारे महादुस्तरेऽत्यन्तघोरे
विपत्सागरे मज्जतां देहभाजाम् ।
त्वमेका गतिर्देवि निस्तारनौका
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥५॥
नमश्चण्डिके चण्डदोर्दण्डलीला-
समुत्खण्डिताखण्डलाशेषभीते ।
त्वमेका गतिर्विघ्नसन्दोहहन्त्री
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥६॥
त्वमेकाजिताराधिता सत्यवादि-
न्यमेयाजिताक्रोधना क्रोधनिष्ठा ।
इडा पिङ्गला त्वं सुषुम्ना च नाडी
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥७॥

नमो देवि दुर्गे शिवे भीमनादे
सरस्वत्यरुन्धत्यमोघस्वरूपे ।
विभूतिः शची कालरात्रिः सती त्वं
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥८॥
शरणमसि सुराणां सिद्धविद्याधराणां
मुनिदनुजनराणां व्याधिभिः पीडितानाम् ।
नृपतिगृहगतानां दस्युभिरावृतानां
त्वमसि शरणमेका देवि दुर्गे प्रसीद ॥९॥
इदं स्तोत्रं मया प्रोक्तमापदुद्धारहेतुकम् ।
त्रिसन्ध्यमेकसन्ध्यं वा पठनादेव सङ्कटात् ॥१०॥
मुच्यते नात्र सन्देहो भुवि स्वर्गे रसातले ।
समस्तश्लोकमेकं वा यः पठेद् भक्तितः सदा ॥११॥
स सर्वदुष्कृतिं तीर्त्वा प्राप्नोति परमां गतिम् ।
पठनादस्य देवेशि किं न सिध्यति भूतले ॥१२॥

***

श्रीभवान्यष्टकम्

न तातो न माता न बन्धुर्न दाता
न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो न भर्ता ।
न जाया न विद्या न वृत्तिर्ममैव
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥१॥
भवाब्धावपारे महादुःखभीरुः
प्रपन्नः प्रकामी प्रलोभी प्रमत्तः ।
कुसंसारपाशप्रबद्धः सदाऽहं
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥२॥
न जानामि दानं न च ध्यानयोगं
न जानामि तन्त्रं न च स्तोत्रमन्त्रम् ।
न जानामि पूजां न च न्यासयोगं
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥३॥

न जानामि पुण्यं न जानामि तीर्थं
न जानामि मुक्तिं लयं वा कदाचित्।
न जानामि भक्तिं व्रतं वापि मात-
र्गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥४॥
कुकर्मी कुसङ्गी कुबुद्धिः कुदासः
कुलाचारहीनः कदाचारलीनः।
कुदृष्टिः कुवाक्यप्रबन्धः सदाहं
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥५॥
प्रजेशं रमेशं महेशं सुरेशं
दिनेशं निशीथेश्वरं वा कदाचित्।
न जानामि चान्यं सुराणां शरण्ये
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥६॥
विवादे विषादे प्रमादे प्रवासे
जले वानले पर्वते शत्रुमध्ये।
अरण्ये शरण्ये सदा मां प्रपाहि
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥७॥
अनाथो दरिद्रो जरारोगयुक्तो
महाक्षीणदीनः सदा जाड्यवक्त्रः।
विपत्तौ प्रविष्टः प्रणष्टः सदाहं
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥८॥

***

देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रम्

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदपि च न जाने नुतिमहो
न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथाः।
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं
परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणम् ॥१॥

विधेरज्ञानेन द्रविणविरहेणालसतया
विधेयाशक्यत्वात्तव चरणयोर्या च्युतिरभूत्।
तदेतत्क्षन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥२॥
पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहव सन्ति सरलाः
परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुतः।
मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥३॥
जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता
न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया।
तथापि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥४॥
परित्यक्ता देवा विविधविधिसेवाकुलतया
मया पञ्चाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि।
इदानीं मे मातस्तव यदि कृपा नापि भविता
निरालम्बो लम्बोदरजननि कं यामि शरणम् ॥५॥
श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा
निरातङ्को रङ्को विहरति चिरं कोटिकनकैः।
तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं
जनः को जानीते जननि जपनीयं जपविधौ ॥६॥
चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो
जटाधारी कण्ठे भुजगपतिहारी पशुपतिः।
कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं
भवानि त्वत्पाणिग्रहणपरिपाटीफलमिदम् ॥७॥
न मोक्षस्याकांक्षा न च विभववाञ्छापि च न मे
न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुनः।
अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै
मृडानी रुद्राणी शिवशिवभवानीति जपतः ॥८॥

नाराधितासि विधिना विविधोपचारैः
किं रुक्षचिन्तनपरैर्न कृतं वचोभिः ।
श्यामे त्वमेव यदि किञ्चन मय्यनाथे
धत्से कृपामुचितमम्ब परं तवैव ॥९॥
आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि ।
नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति ॥१०॥
जगदम्ब विचित्रमत्र किं परिपूर्णा करुणास्ति चेन्मयि ।
अपराधपरम्परावृतं न हि माता समुपेक्षते सुतम् ॥११॥
मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि ।
एवं ज्ञात्वा महादेवि यथायोग्यं तथा कुरु ॥१२॥

***

श्रीमहिषासुरमर्दिनीस्तोत्रम्

अयि गिरिनन्दिनि नन्दितमेदिनि विश्वविनोदिनि नन्दनुते
गिरिवरविन्ध्यशिरोऽधिनिवासिनि विष्णुविलासिनि जिष्णुनुते ।
भगवति हे शितिकण्ठकुटुम्बिनि भूरिकुटुम्बिनि भूरिकृते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥१॥
सुरवरवर्षिणि दुर्धरधर्षिणि दुर्मुखमर्षिणि हर्षरते
त्रिभुवनपोषिणि शङ्करतोषिणि किल्बिषमोषिणि घोषरते ।
दनुजनिरोषिणि दितिसुतरोषिणि दुर्मदशोषिणि सिन्धुसुते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥२॥
अयि जगदम्ब मदम्ब कदम्बवनप्रियवासिनि हासरते
शिखरिशिरोमणितुङ्गहिमालयशृङ्गनिजालयमध्यगते ।
मधुमधुरे मधुकैटभगञ्जिनि कैटभभञ्जिनि रासरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥३॥
अयि शतखण्डविखण्डितरुण्डवितुण्डितशुण्डगजाधिपते
रिपुगजगण्डविदारणचण्डपराक्रमशुण्डमृगाधिपते ।
निजभुजदण्डनिपातितखण्डविपातितमुण्डभटाधिपते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥४॥

अयि रणदुर्मदशत्रुवधोदितदुर्धरनिर्जरशक्तिभृते
चतुरविचारधुरीणमहाशिवदूतकृतप्रमथाधिपते ।
दुरितदुरीहदुराशयदुर्मतिदानवदूतकृतान्तमते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥५॥
अयि शरणागतवैरिवधूवरवीरवराभयदायकरे
त्रिभुवनमस्तकशूलविरोधिशिरोऽधिकृतामलशूलकरे ।
दुमिदुमितामरदुन्दुभिनादमुहुर्मुखरीकृतदिङ्निकरे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥६॥
अयि निजहुङ्कृतिमात्रनिराकृतधूम्रविलोचनधूम्रशते
समरविशोषितशोणितबीजसमुद्भवशोणितबीजलते ।
शिवशिवशुम्भनिशुम्भमहाहवतर्पितभूतपिशाचरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥७॥
धनुरनुषङ्गरणक्षणसङ्गपरिस्फुरदङ्गनटत्कटके
कनकपिशङ्गपृषत्कनिषङ्गरसद्भटशृङ्गहताबटुके ।
कृतचतुरङ्गबलक्षितिरङ्गघटद्बहुरङ्गरटद्बटुके
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥८॥
जय जय जप्यजये जयशब्दपरस्तुतितत्परविश्वनुते
झणझणझिञ्झिमिझिङ्कृतनूपुरशिञ्जितमोहितभूतपते ।
नटितनटार्धनटीनटनायकनाटितनाट्यसुगानरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥९॥
अयि सुमनःसुमनःसुमनःसुमनःसुमनोहरकान्तियुते
श्रितरजनीरजनीरजनीरजनीरजनीकरवक्त्रवृते ।
सुनयनविभ्रमरभ्रमरभ्रमरभ्रमरभ्रमराधिपते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥१०॥
महितमहाहववल्लभतल्लिकवल्लितरल्लितभल्लिरते
विरचितवल्लिकपल्लिकमल्लिकझिल्लिकभिल्लिकवर्गवृते ।
श्रुतकृतफुल्लसमुल्लसितारुणतल्लजपल्लवसल्ललिते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥११॥

अविरलगण्डगलन्मदमेदुरमत्तमतङ्गजराजपते
त्रिभुवनभूषणभूतकलानिधिरूपपयोनिधिराजसुते ।
अयि सुदतीजनलालसमानसमोहनमन्मथराजसुते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥१२॥

कमलदलामलकोमलकान्तिकलाकलितामलभाललते
सकलविलासकलानिलयक्रमकेलिचलत्कलहंसकुले ।
अलिकुलसङ्कुलकुवलयमण्डलमौलिमिलद्बकुलालिकुले
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥१३॥

करमुरलीरववीजितकूजितलज्जितकोकिलमञ्जुमते
मिलितपुलिन्दमनोहरगुञ्जितरञ्जितशैलनिकुञ्जगते ।
निजगणभूतमहाशबरीगणरङ्गणसम्भृतकेलिरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥१४॥

कटितटपीतदुकूलविचित्रमयूखतिरस्कृतचण्डरुचे
प्रणतसुरासुरमौलिमणिस्फुरदंशुलसन्नखचन्द्ररुचे ।
जितकनकाचलमौलिमदोर्जितनिर्भरकुञ्जरकुम्भकुचे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥१५॥

विजितसहस्रकरैकसहस्रकरैकसहस्रकरैकनुते
कृतसुरतारकसङ्गरतारकसङ्गरतारकसूनुसुते ।
सुरथसमाधिसमानसमाधिसमाधिसमाधिसुजातरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥१६॥

पदकमलं करुणानिलये वरिवस्यति योऽनुदिनं सुशिवे
अयि कमले कमलानिलये कमलानिलयः स कथं न भवेत् ।
तव पदमेव परम्पदमित्यनुशीलयतो मम किं न शिवे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥१७॥

कनकलसत्कलशीकजलैरनुषिञ्चति तेऽङ्गणरङ्गभुवं
भजति स किं न शचीकुचकुम्भतटीपरिरम्भसुखानुभवम् ।
तव चरणं शरणं करवाणि मृडानि सदा मयि देहि शिवं
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥१८॥

तव विमलेन्दुकुलं वदनेन्दुमलं सकलं ननु कूलयते
किमु पुरुहूतपुरीन्दुमुखी सुमुखीभिरसौ विमुखीक्रियते ।
मम तु मतं शिवनामधने भवती कृपया किमु न क्रियते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥१९॥
अयि मयि दीनदयालुतया कृपयैव त्वया भवितव्यमुमे
अयि जगतो जननी कृपयासि यथासि तथानुमितासिरते ।
यदुचितमत्र भवत्युररी कुरुतादुरुतापमपाकुरुते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥२०॥

***

श्रीचण्डीप्रातःस्मरणस्तोत्रम्

प्रातः स्मरामि शरदिन्दुकरोज्ज्वलाभां
सद्रत्नवन्मकरकुण्डलहारभूषाम् ।
दिव्यायुधोर्जितसुनीलसहस्रहस्तां
रक्तोत्पलाभचरणां भवतीं परेशाम् ॥१॥
प्रातर्नमामि महिषासुरचण्डमुण्ड-
शुम्भासुरप्रमुखदैत्यविनाशदक्षाम् ।
ब्रह्मेन्द्ररुद्रमुनिमोहनशीललीलां
चण्डीं समस्तसुरमूर्तिमनेकरूपाम् ॥२॥
प्रातर्भजामि भजतामभिलाषदात्रीं
धात्रीं समस्तजगतां दुरितापहन्त्रीम् ।
संसारबन्धनविमोचनहेतुभूतां
मायां परां समधिगम्य परस्य विष्णोः ॥३॥
श्लोकत्रयमिदं देव्याश्चण्डिकायाः पठेन्नरः ।
सर्वान् कामानवाप्नोति विष्णुलोके महीयते ॥४॥

***

श्रीकालिकाध्यानम्

मेघाङ्गीं विगताम्बरां शवशिवारूढां त्रिनेत्रां परां
कर्णालम्बिनृमुण्डयुग्मभयदां मुण्डस्रजां भीषणाम् ।
वामाधोर्ध्वकराम्बुजे नरशिरः खड्गं च सव्येतरे
दानाभीति विमुक्तकेशनिचयां वन्दे सदा कालिकाम् ॥

***

श्रीकालिकाप्रणामः

सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥

***

श्रीकालिकास्तोत्रम्

त्वं परा प्रकृतिः साक्षाद्ब्रह्मणः परमात्मनः ।
त्वत्तो जातं जगत्सर्वं त्वं जगज्जननी शिवे ॥१॥
महदाद्यणुपर्यन्तं यदेतत्सचराचरम् ।
त्वयैवोत्पादितं भद्रे त्वदधीनमिदं जगत् ॥२॥
त्वमाद्या सर्वविद्यानामस्माकमपि जन्मभूः ।
त्वं जानासि जगत्सर्वं न त्वां जानाति कश्चन ॥३॥
त्वं काली तारिणी दुर्गा षोडशी भुवनेश्वरी ।
धूमावती त्वं वगला भैरवी छिन्नमस्तका ॥४॥
त्वमन्नपूर्णा वाग्देवी त्वं देवि कमलालया ।
सर्वशक्तिस्वरूपा त्वं सर्वदेवमयी तनुः ॥५॥
त्वमेव सूक्ष्मा स्थूला त्वं व्यक्ताव्यक्तस्वरूपिणी ।
निराकारापि साकारा कस्त्वां वेदितुमर्हति ॥६॥
उपासकानां कार्यार्थं श्रेयसे जगतामपि ।
दानवानां विनाशाय धत्से नानाविधास्तनूः ॥७॥
चतुर्भुजा त्वं द्विभुजा षड्भुजाष्टभुजा तथा ।
त्वमेव विश्वरक्षार्थं नानाशस्त्रास्त्रधारिणी ॥८॥

त्वं सर्वरूपिणी देवी सर्वेषां जननी परा।
तुष्टायां त्वयि देवेशि सर्वेषां तोषणं भवेत् ॥९॥
सृष्टेरादौ त्वमेकासीत्तमोरूपमगोचरम्।
त्वत्तो जातं जगत्सर्वं परब्रह्मसिसृक्षया ॥१०॥
महत्तत्त्वादिभूतान्तं त्वया सृष्टमिदं जगत्।
निमित्तमात्रं तद्ब्रह्म सर्वकारणकारणम् ॥११॥
सद्रूपं सर्वतोव्यापि सर्वमावृत्य तिष्ठति।
सदैकरूपं चिन्मात्रं निर्लिप्तं सर्ववस्तुषु ॥१२॥
न करोति न चाश्नाति न गच्छति न तिष्ठति।
सत्यं ज्ञानमनाद्यन्तमवाङ्मनसगोचरम् ॥१३॥
तस्येच्छामात्रमालम्ब्य त्वं महायोगिनी परा।
करोषि पासि हंस्यन्ते जगदेतच्चराचरम् ॥१४॥
तव रूपं महाकालो जगत्संहारकारकः।
महासंहारसमये कालः सर्वं ग्रसिष्यति ॥१५॥
कलनात्सर्वभूतानां महाकालः प्रकीर्तितः।
महाकालस्य कलनात्त्वमाद्या कालिका परा ॥१६॥
कालसङ्ग्रसनात्काली सर्वेषामादिरूपिणी।
कालत्वादादिभूतत्वादाद्या कालीति गीयते ॥१७॥
पुनः स्वरूपमासाद्य तमोरूपं निराकृति।
वाचातीतं मनोऽगम्यं त्वमेकैवावशिष्यसे ॥१८॥
साकारापि निराकारा मायया बहुरूपिणी।
त्वं सर्वादिरनादिस्त्वं कर्त्री हर्त्री च पालिका ॥१९॥

***

श्रीजगद्धात्रीस्तोत्रम्

आधारभूते चाधेये धृतिरूपे धुरन्धरे।
ध्रुवे ध्रुवपदे धीरे जगद्धात्रि नमोऽस्तु ते ॥१॥
शवाकारे शक्तिरूपे शक्तिस्थे शक्तिविग्रहे।
शाक्ताचारप्रिये देवि जगद्धात्रि नमोऽस्तु ते ॥२॥

जयदे जगदानन्दे जगदेकप्रपूजिते ।
जय सर्वगते दुर्गे जगद्धात्रि नमोऽस्तु ते ॥३॥
परमाणुस्वरूपे च द्व्यणुकादिस्वरूपिणि ।
सूक्ष्मातिसूक्ष्मरूपे च जगद्धात्रि नमोऽस्तु ते ॥४॥
सूक्ष्मातिसूक्ष्मरूपे च प्राणापानादिरूपिणि ।
भावाभावस्वरूपे च जगद्धात्रि नमोऽस्तु ते ॥५॥
कालादिरूपे कालेशे कालाकालविभेदिनि ।
सर्वस्वरूपे सर्वज्ञे जगद्धात्रि नमोऽस्तु ते ॥६॥
महाविघ्ने महोत्साहे महामाये वरप्रदे ।
प्रपञ्चसारे साध्वीशे जगद्धात्रि नमोऽस्तु ते ॥७॥
अगम्ये जगतामाद्ये माहेश्वरि वराङ्गने ।
अशेषरूपे रूपस्थे जगद्धात्रि नमोऽस्तु ते ॥८॥
द्विसप्तकोटिमन्त्राणां शक्तिरूपे सनातनि ।
सर्वशक्तिस्वरूपे च जगद्धात्रि नमोऽस्तु ते ॥९॥
तीर्थयज्ञतपोदानयोगसारे जगन्मयि ।
त्वमेव सर्वं सर्वस्थे जगद्धात्रि नमोऽस्तु ते ॥१०॥
दयारूपे दयादृष्टे दयार्द्रे दुःखमोचनि ।
सर्वापत्तारिके दुर्गे जगद्धात्रि नमोऽस्तु ते ॥११॥
अगम्यधामधामस्थे महायोगीशहृत्पुरे ।
अमेयभावकूटस्थे जगद्धात्रि नमोऽस्तु ते ॥१२॥

***

अन्नपूर्णास्तोत्रम्

नित्यानन्दकरी वराभयकरी सौन्दर्यरत्नाकरी
निर्धूताखिलघोरपावनकरी प्रत्यक्षमाहेश्वरी ।
प्रालेयाचलवंशपावनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥१॥
नानारत्नविचित्रभूषणकरी हेमाम्बराडम्बरी
मुक्ताहारविलम्बमानविलसद्वक्षोजकुम्भान्तरी।

काश्मीरागुरुवासिता रुचिकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥२॥
योगानन्दकरी रिपुक्षयकरी धर्मार्थनिष्ठाकरी
चन्द्रार्कानलभासमानलहरी त्रैलोक्यरक्षाकरी ।
सर्वैश्वर्यसमस्तवाञ्छितकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥३॥
कैलासाचलकन्दरालयकरी गौरी ह्युमा शङ्करी
कौमारी निगमार्थगोचरकरी ओङ्कारबीजाक्षरी ।
मोक्षद्वारकपाटपाटनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥४॥
दृश्यादृश्यप्रभूतपावनकरी ब्रह्माण्डभाण्डोदरी
लीलानाटकसूत्रभेदनकरी विज्ञानदीपाङ्कुरी ।
श्रीविश्वेशमनःप्रसादनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥५॥
उर्वीसर्वजनेश्वरी भगवती मातान्नपूर्णेश्वरी
वेणीनीलसमानकुन्तलहरी नित्यान्नदानेश्वरी ।
सर्वानन्दकरी दशाशुभकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥६॥
आदिक्षान्तसमस्तवर्णनकरी शम्भोस्त्रिभावाकरी
काश्मीरा त्रिजनेश्वरी त्रिलहरी नित्याङ्कुरा शर्वरी ।
कामाकाङ्क्षकरी जनोदयकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥७॥
दर्वी स्वर्णविचित्ररत्नखचिता दक्षे करे संस्थिता
वामे स्वादुपयोधरी सहचरी सौभाग्यमाहेश्वरी ।
भक्ताभीष्टकरी दृशा शुभकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥८॥
चन्द्रार्कानलकोटिकोटिसदृशा चन्द्रांशुबिम्बाधरी
चन्द्रार्काग्निसमानकुण्डलधरी चन्द्रार्कवर्णेश्वरी ।

मालापुस्तकपाशकाङ्कुशधरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥९॥
क्षत्रत्राणकरी महाभयकरी माता कृपासागरी
साक्षान्मोक्षकरी सदा शिवकरी विश्वेश्वरश्रीधरी ।
दक्षाक्रन्दकरी निरामयकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥१०॥
अन्नपूर्णे सदापूर्णे शङ्करप्राणवल्लभे ।
ज्ञानवैराग्यसिद्ध्यर्थं भिक्षां देहि च पार्वति ॥११॥
माता मे पार्वती देवी पिता देवो महेश्वरः ।
बान्धवाः शिवभक्ताश्च स्वदेशो भुवनत्रयम् ॥१२॥

***

अम्बास्तोत्रम्

का त्वं शुभे शिवकरे सुखदुःखहस्ते
आघूर्णितं भवजलं प्रबलोर्मिभङ्गैः ।
शान्तिं विधातुमिह किं बहुधा विभग्नां
मातः प्रयत्नपरमासि सदैव विश्वे ॥१॥
सम्पादयन्त्यविरतं त्वविरामवृत्ता
या वै स्थिता कृतफलं त्वकृतस्य नेत्री ।
सा मे भवत्वनुदिनं वरदा भवानी
जानाम्यहं ध्रुवमियं धृतकर्मपाशा ॥२॥
किं वा कृतं किमकृतं क्व कपाललेखः
किं कर्म वा फलमिहास्ति हि यां विना भोः ।
इच्छागुणैर्नियमिता नियमाः स्वतन्त्रै-
र्यस्याः सदा भवतु सा शरणं ममाद्या ॥३॥
सन्तानयन्ति जलधिं जनिमृत्युजालं
सम्भावयन्त्यविकृतं विकृतं विभग्नम् ।
यस्या विभूतय इहामितशक्तिपालाः
नाश्रित्य तां वद कुतः शरणं व्रजामः ॥४॥

मित्रे रिपौ त्वविषमं तव पद्मनेत्रं
स्वस्थेऽसुखे त्ववितथस्तव हस्तपातः ।
छाया मृतेस्तव दया त्वमृतं च मात-
र्मुञ्चन्तु मां न परमे शुभदृष्टयस्ते ॥५॥
क्वाम्बा शिवा क्व गृणनं मम हीनबुद्धे-
र्दोर्भ्यां विधर्तुमिव यामि जगद्विधात्रीम् ।
चिन्त्यं श्रिया सुचरणं त्वभयप्रतिष्ठं
सेवापरैरभिनुतं शरणं प्रपद्ये ॥६॥
या मा चिराय विनयत्यतिदुःखमार्गै-
रासिद्धितः स्वकलितैर्ललितैर्विलासैः ।
या मे मतिं सुविदधे सततं धरण्यां
साम्बा शिवा मम गतिः सफलेऽफले वा ॥७॥

***

श्रीलक्ष्मीस्तोत्राणि

श्रीलक्ष्मीध्यानम्

पाशाक्षमालिकाम्भोजशृणिभिर्याम्यसौम्ययोः ।
पद्मासनस्थां ध्यायेच्च श्रियं त्रैलोक्यमातरम् ।।
गौरवर्णां सुरूपां च सर्वालङ्कारभूषिताम् ।
रौक्मपद्मव्यग्रकरां वरदां दक्षिणेन तु ।।

***

श्रीलक्ष्मीप्रणामः

विश्वरूपस्य भार्यासि पद्मे पद्मालये शुभे ।
सर्वतः पाहि मां देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।।

***

श्रीसूक्तम्

हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्त्रजाम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ।।१।।
तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ।।२।।
अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम् ।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ।।३।।
कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारमार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ।।४।।
चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ।
तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे ।।५।।
आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः ।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु या अन्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः ।।६।।
उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ।।७।।

क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्॥८॥
गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥९॥
मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः॥१०॥
कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥११॥
आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले॥१२॥
आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥१३॥
आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥१४॥
तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्॥१५॥
यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्।
सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्॥१६॥
पद्मानने पद्मविपद्मपत्रे
पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षि।
विश्वप्रिये विष्णुमनोऽनुकूले
त्वत्पादपद्मं मयि सन्निधत्स्व॥१७॥
पद्मानने पद्मऊरु पद्माक्षि पद्मसम्भवे।
तन्मे भजसि पद्माक्षि येन सौख्यं लभाम्यहम्॥१८॥
अश्वदायि गोदायि धनदायि महाधने।
धनं मे जुषतां देवि सर्वकामांश्च देहि मे॥१९॥
पुत्रपौत्रधनं धान्यं हस्त्यश्वाश्वतरी रथम्।
प्रजानां भवसि माता आयुष्मन्तं करोतु मे॥२०॥

धनमग्निर्धनं वायुर्धनं सूर्यो धनं वसुः ।
धनमिन्द्रो बृहस्पतिर्वरुणो धनमश्विना ॥२१॥
वैनतेय सोमं पिब सोमं पिबतु वृत्रहा ।
सोमं धनस्य सोमिनो मह्यं ददातु सोमिनः ॥२२॥
न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मतिः ।
भवन्ति कृतपुण्यानां भक्त्या श्रीसूक्तजापिनाम् ॥२३॥
सरसिजनिलये सरोजहस्ते
धवलतरांशुकगन्धमाल्यशोभे ।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे
त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम् ॥२४॥
विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधवप्रियाम् ।
लक्ष्मीं प्रियसखीं भूमिं नमाम्यच्युतवल्लभाम् ॥२५॥
महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि ।
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥२६॥
आनन्दः कर्दमः श्रीदश्चिक्लीत इति विश्रुताः ।
ऋषयः श्रियः पुत्राश्च श्रीर्देवीर्देवता मताः ॥२७॥
ऋणरोगादिदारिद्र्यपापक्षुदपमृत्यवः ।
भयशोकमनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा ॥२८॥
श्रीवर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधाच्छोभमानं महीयते ।
धनं धान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः ॥२९॥

***

श्रीमहालक्ष्म्यष्टकम्

इन्द्र उवाच

नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते ।
शङ्खचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥१॥
नमस्ते गरुडारूढे कोलासुरभयङ्करि ।
सर्वपापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥२॥

सर्वज्ञे सर्ववरदे सर्वदुष्टभयङ्करि ।
सर्वदुःखहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ।।३।।
सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि भुक्तिमुक्तिप्रदायिनि ।
मन्त्रमूर्ते सदा देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ।।४।।
आद्यन्तरहिते देवि आद्यशक्तिमहेश्वरि ।
योगजे योगसम्भूते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ।।५।।
स्थूलसूक्ष्ममहारौद्रे महाशक्तिमहोदरे ।
महापापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ।।६।।
पद्मासनस्थिते देवि परब्रह्मस्वरूपिणि ।
परमेशि जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तु मे ।।७।।
श्वेताम्बरधरे देवि नानालङ्कारभूषिते ।
जगत्स्थिते जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ।।८।।
महालक्ष्म्यष्टकस्तोत्रं यः पठेद् भक्तिमान् नरः।
सर्वसिद्धिमवोप्नोति राज्यं प्राप्नोति सर्वदा ।।९।।
एककाले पठेन्नित्यं महापापविनाशनम् ।
द्विकालं यः पठेन्नित्यं धनधान्यसमन्वितः ।।१०।।
त्रिकालं यः पठेन्नित्यं महाशत्रुविनाशनम् ।
महालक्ष्मीर्भवेन्नित्यं प्रसन्ना वरदा शुभा ।।११।।

***

श्रीसरस्वतीस्तोत्राणि

श्रीसरस्वतीध्यानम्

(१)

तरुणशकलमिन्दोर्बिभ्रती शुभ्रकान्तिः
कुचभरनमिताङ्गी सन्निषण्णा सिताब्जे ।
निजकरकमलोद्यल्लेखनीपुस्तकश्रीः
सकलविभवसिद्ध्यै पातु वाग्देवता नः ॥

(२)

वाणीं पूर्णनिशाकरोज्ज्वलमुखीं कर्पूरकुन्दप्रभां
चन्द्रार्धाङ्कितमस्तकां निजकरैः सम्बिभ्रतीमादरात् ।
मुद्रामक्षगुणं सुधाढ्यकलशं विद्यां च हस्ताम्बुजै-
र्बिभ्राणां विशदप्रभां त्रिनयनां वाग्देवतामाश्रये ॥

***

श्रीसरस्वतीप्रणामः

भद्रकाल्यै नमो नित्यं सरस्वत्यै नमो नमः ।
वेदवेदाङ्गवेदान्तविद्यास्थानेभ्य एव च ॥१॥
जय जय देवि चराचरसारे कुचयुगशोभितमुक्ताहारे ।
वीणापुस्तकरञ्जितहस्ते भगवति भारति देवि नमस्ते ॥२॥

***

मेधासूक्तम्

मेधा देवी जुषमाणा न आगाद्विश्वाची भद्रा सुमनस्यमाना ।
त्वया जुष्टा नुदमाना दुरुक्तान् बृहद्वदेम विदथे सुवीराः ॥१॥
त्वया जुष्ट ऋषिर्भवति देवि त्वया ब्रह्मागतश्रीरुत त्वया ।
त्वया जुष्टश्चित्रं विन्दते वसु सा नो जुषस्व द्रविणो न मेधे ॥२॥
मेधां म इन्द्रो दधातु मेधां देवी सरस्वती ।
मेधां मे अश्विनावुभावाधत्तां पुष्करस्रजा ॥३॥
अप्सरासु च या मेधा गन्धर्वेषु च यन्मनः ।
दैवीं मेधा सरस्वती सा मां मेधा सुरभिर्जुषतां स्वाहा ॥४॥

आ मां मेधा सुरभिर्विश्वरूपा हिरण्यवर्णा जगती जगम्या ।
ऊर्जस्वती पयसा पिन्वमाना सा मां मेधा सुप्रतीका जुषन्ताम् ॥५॥

***

श्रीसरस्वतीरहस्यस्तोत्रम्

नीहारहारघनसारसुधाकराभां
कल्याणदां कनकचम्पकदामभूषाम् ।
उत्तुङ्गपीनकुचकुम्भमनोहराङ्गीं
वाणीं नमामि मनसा वचसा विभूत्यै ॥१॥
या वेदान्तार्थतत्त्वैकस्वरूपा परमेश्वरी ।
नामरूपात्मना व्यक्ता सा मां पातु सरस्वती ॥२॥
या साङ्गोपाङ्गवेदेषु चतुर्ष्वेकैव गीयते ।
अद्वैता ब्रह्मणः शक्तिः सा मां पातु सरस्वती ॥३॥
या वर्णपदवाक्यार्थस्वरूपेणैव वर्तते ।
अनादिनिधनानन्ता सा मां पातु सरस्वती ॥४॥
अध्यात्ममधिदैवं च देवानां सम्यगीश्वरी ।
प्रत्यगास्ते वदन्ती या सा मां पातु सरस्वती ॥५॥
अन्तर्याम्यात्मना विश्वं त्रैलोक्यं या नियच्छति ।
रुद्रादित्यादिरूपस्था सा मां पातु सरस्वती ॥६॥
या प्रत्यग्दृष्टिभिर्जीवैर्व्यज्यमानानुभूयते ।
व्यापिनी ज्ञप्तिरूपैका सा मां पातु सरस्वती ॥७॥
नामजात्यादिभिर्भेदैरष्टधा या विकल्पिता ।
निर्विकल्पात्मना व्यक्ता सा मां पातु सरस्वती ॥८॥
व्यक्ताव्यक्तगिरः सर्वे वेदाद्या व्याहरन्ति याम् ।
सर्वकामदुघा धेनुः सा मां पातु सरस्वती ॥९॥
यां विदित्वाखिलं बन्धं निर्मथ्याखिलवर्त्मना ।
योगी याति परं स्थानं सा मां पातु सरस्वती ॥१०॥
नामरूपात्मकं सर्वं यस्यामावेश्य तां पुनः ।
ध्यायन्ति ब्रह्मरूपैका सा मां पातु सरस्वती ॥११॥

चतुर्मुखमुखाम्भोजवनहंसवधूर्मम ।
मानसे रमतां नित्यं सर्वशुक्ला सरस्वती ॥१२॥
नमस्ते शारदे देवि काश्मीरपुरवासिनि ।
त्वामहं प्रार्थये नित्यं विद्यादानं च देहि मे ॥१३॥
अक्षसूत्राङ्कुशधरा पाशपुस्तकधारिणी ।
मुक्ताहारसमायुक्ता वाचि तिष्ठतु मे सदा ॥१४॥
कम्बुकण्ठी सुताम्रोष्ठी सर्वाभरणभूषिता ।
महासरस्वती देवी जिह्वाग्रे सन्निवेश्यताम् ॥१५॥
या श्रद्धा धारणा मेधा वाग्देवी विधिवल्लभा ।
भक्तजिह्वाग्रसदना शमादिगुणदायिनी ॥१६॥
नमामि यामिनीनाथलेखालङ्कृतकुन्तलाम् ।
भवानीं भवसन्तापनिर्वापणसुधानदीम् ॥१७॥
यः कवित्वं निरातङ्कं भुक्तिमुक्ती च वाञ्छति ।
सोऽभ्यर्च्यैनां दशश्लोक्या नित्यं स्तौति सरस्वतीम् ॥१८॥
तस्यैवं स्तुवतो नित्यं समभ्यर्च्य सरस्वतीम् ।
भक्तिश्रद्धाभियुक्तस्य षाण्मासात्प्रत्ययो भवेत्॥१९॥
ततः प्रवर्तते वाणी स्वेच्छया ललिताक्षरा ।
गद्यपद्यात्मकैः शब्दैरप्रमेयैर्विवक्षितैः ॥
अश्रुतो बुध्यते ग्रन्थः प्रायः सारस्वतः कविः ॥२०॥

***

श्रीसरस्वतीस्तोत्रम्–१

श्वेतपद्मासना देवी श्वेतपुष्पोपशोभिता ।
श्वेताम्बरधरा नित्या श्वेतगन्धानुलेपना ॥१॥
श्वेताक्षसूत्रहस्ता च श्वेतचन्दनचर्चिता ।
श्वेतवीणाधरा शुभ्रा श्वेतालङ्कारभूषिता ॥२॥
वन्दिता सिद्धगन्धर्वैरर्चिता सुरदानवैः ।
पूजिता मुनिभिः सर्वैर्ऋषिभिः स्तूयते सदा ॥३॥

स्तोत्रेणानेन तां देवीं जगद्धात्रीं सरस्वतीम् ।
ये स्मरन्ति त्रिसन्ध्यायां सर्वां विद्यां लभन्ते ते ॥४॥

***

श्रीसरस्वतीस्तोत्रम्—२

रविरुद्रपितामहविष्णुनुतं हरिचन्दनकुङ्कुमपङ्कयुतम् ।
मुनिवृन्दगजेन्द्रसमानयुतं तव नौमि सरस्वति पादयुगम् ॥१॥
शशिशुद्धसुधाहिमधामयुतं शरदम्बरबिम्बसमानकरम् ।
बहुरत्नमनोहरकान्तियुतं तव नौमि सरस्वति पादयुगम् ॥२॥
कनकाब्जविभूषितभूतिभवं भवभावविभाषितभिन्नपदम् ।
प्रभुचित्तसमाहितसाधुपदं तव नौमि सरस्वति पादयुगम् ॥३॥
भवसागरमज्जनभीतिनुतं प्रतिपादितसन्ततिकारमिदम् ।
विमलादिकशुद्धविशुद्धपदं तव नौमि सरस्वति पादयुगम् ॥४॥
मतिहीनजनाश्रयपादमिदं सकलागमभाषितभिन्नपदम् ।
परिपूरितविश्वमनेकभवं तव नौमि सरस्वति पादयुगम् ॥५॥
परिपूर्णमनोरथधामनिधिं परमार्थविचारविवेकविधिम् ।
सुरयोषितसेवितपादतलं तव नौमि सरस्वति पादयुगम् ॥६॥
सुरमौलिमणिद्युतिशुभ्रकरं विषयादिमहाभयवर्णहरम् ।
निजकान्तिविलेपितचन्द्रशिवं तव नौमि सरस्वति पादयुगम् ॥७॥
गुणनैककुलं स्थितिभीतपदं गुणगौरवगर्वितसत्यपदम् ।
कमलोदरकोमलपादतलं तव नौमि सरस्वति पादयुगम् ॥८॥

***

ब्रह्मकृतसरस्वतीस्तोत्रम्

ॐ अस्य श्रीसरस्वतीस्तोत्रमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्रीच्छन्दः, श्रीसरस्वती देवता, धर्मार्थकाममोक्षार्थे विनियोगः ।

आरूढा श्वेतहंसे भ्रमति च गगने दक्षिणे चाक्षसूत्रं
वामे हस्ते च दिव्याम्बरकनकमयं पुस्तकं ज्ञानगम्या ।
सा वीणां वादयन्ती स्वकरकरजपैः शास्त्रविज्ञानशब्दैः
क्रीडन्ती दिव्यरूपा करकमलधरा भारती सुप्रसन्ना ॥१॥

श्वेतपद्मासना देवी श्वेतगन्धानुलेपना ।
अर्चिता मुनिभिः सर्वैर्ऋषिभिः स्तूयते सदा ।
एवं ध्यात्वा सदा देवीं वाञ्छितं लभते नरः ॥२॥
शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगद्व्यापिनीं
वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम् ।
हस्ते स्फाटिकमालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थितां
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम् ॥३॥
या कुन्देदुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना ।
या ब्रह्माच्युतशङ्करप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा ॥४॥
ह्रीं ह्रीं हृद्यैकबीजे शशिरुचिकमले कल्पविस्पष्टशोभे
भव्ये भव्यानुकूले कुमतिवनदवे विश्ववन्द्याङ्घ्रिपद्मे ।
पद्मे पद्मोपविष्टे प्रणतजनमनोमोदसम्पादयित्रि
प्रोत्फुल्लज्ञानकूटे हरिनिजदयिते देवि संसारसारे ॥५॥
ऐं ऐं ऐं इष्टमन्त्रे कमलभवमुखाम्भोजभूतिस्वरूपे
रूपारूपप्रकाशे सकलगुणमये निर्गुणे निर्विकारे ।
न स्थूले नैव सूक्ष्मेऽप्यविदितविषये नापि विज्ञाततत्त्वे
विश्वे विश्वान्तरात्मे सुरवरनमिते निष्कले नित्यशुद्धे ॥६॥
ह्रीं ह्रीं ह्रीं जाप्यतुष्टे हिमरुचिमुकुटे वल्लकीव्यग्रहस्ते
मातर्मातर्नमस्ते दह दह जडतां देहि बुद्धिं प्रशस्ताम् ।
विद्यां वेदान्तवेद्यां परिणतपठिते मोक्षदे मुक्तिमार्गे
मार्गातीतप्रभावे भव मम वरदा शारदे शुभ्रहारे ॥७॥
धीर्धीर्धीधारणाख्ये धृतिमतिनतिभिर्नामभिः कीर्तनीये
नित्येऽनित्ये निमित्ते मुनिगणनमिते नूतने वै पुराणे ।
पुण्ये पुण्यप्रवाहे हरिहरनमिते नित्यशुद्धे सुवर्णे
मातर्मात्रार्धतत्त्वे मतिमतिमतिदे माधवप्रीतिमोदे ॥८॥

हूं हूं हूं स्वस्वरूपे दह दह दुरितं पुस्तकव्यग्रहस्ते
सन्तुष्टाकारचित्ते स्मितमुखि सुभगे जृम्भिणि स्तम्भविद्ये ।
मोहे मुग्धप्रभावे कुरु मम कुमतिध्वान्तविध्वंसमीड्ये
गीर्गीर्वाग्भारती त्वं कविवररसनासिद्धिदे सिद्धसाध्ये ॥९॥
स्तौमि त्वां त्वां च वन्दे मम खलु रसनां मा कदाचित्त्यजेथा
मा मे बुद्धिर्विरुद्धा भवतु न च मनो देवि मे यातु पापम् ।
मा मे दुःखं कदाचित् क्वचिदपि विषयेऽप्यस्तु मे नाकुलत्वं
शास्त्रे वादे कवित्वे प्रसरतु मम धीर्मास्तु कुण्ठा कदापि ॥१०॥
इत्येतैः श्लोकमुख्यैः प्रतिदिनमुषसि स्तौति यो भक्तिनम्रो
वाणी वाचस्पतेरप्यविदितविभवो वाक्पटुर्मुष्टकण्ठः ।
स स्यादिष्टार्थलाभैः सुतमिव सततं पाति तं सा च देवी
सौभाग्यं तस्य लोके प्रभवति कविता विघ्नमस्तं प्रयाति ॥११॥
निर्विघ्नं तस्य विद्या प्रभवति सततं चाश्रुतग्रन्थबोधः
कीर्तिस्त्रैलोक्यमध्ये निवसति वदने शारदा तस्य साक्षात् ।
दीर्घायुर्लोकपूज्यः सकलगुणनिधिः सन्ततं राजमान्यो
वाग्देव्याः सम्प्रसादात् त्रिजगति विजयी जायते सत्सभासु ॥१२॥
ब्रह्मचारी व्रती मौनी त्रयोदश्यां निरामिषः ।
सारस्वतो जनः पाठात् सकृदिष्टार्थलाभवान् ॥१३॥
पक्षद्वये त्रयोदश्यामेकविंशतिसङ्ख्यया ।
अविच्छिन्नः पठेद्धीमान् ध्यात्वा देवीं सरस्वतीम् ॥१४॥
सर्वपापविनिर्मुक्तः सुभगो लोकविश्रुतः ।
वाञ्छितं फलमाप्नोति लोकेऽस्मिन्नात्र संशयः ॥१५॥
ब्रह्मणेति स्वयं प्रोक्तं सरस्वत्याः स्तवं शुभम् ।
प्रयत्नेन पठेन्नित्यं सोऽमृतत्वाय कल्पते ॥१६॥

***

श्रीरामस्तोत्राणि

श्रीरामचन्द्रध्यानम्

कालाम्भोधरकान्तिकान्तमनिशं वीरासनाध्यासिनं
मुद्रां ज्ञानमयीं दधानमपरं हस्ताम्बुजं जानुनि ।
सीतां पार्श्वगतां सरोरुहकरां विद्युन्निभां राघवं
पश्यन्तं मुकुटाङ्गदादिविविधाकल्पोज्ज्वलाङ्गं भजे ॥

***

श्रीरामचन्द्रप्रणामः

रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे ।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ॥

***

श्रीरामरक्षास्तोत्रम्

अस्य श्रीरामरक्षास्तोत्रमन्त्रस्य बुधकौशिक ऋषिः । श्रीसीताराम चन्द्रो देवता। अनुष्टुप् छन्दः । सीता शक्तिः । श्रीमद्धनुमान् कीलकम्। श्रीरामचन्द्रप्रीत्यर्थे रामरक्षास्तोत्रजपे विनियोगः ।

अथ ध्यानम्
ध्यायेदाजानुबाहुं धृतशरधनुषं बद्धपद्मासनस्थं
पीतं वासो वसानं नवकमलदलस्पर्धिनेत्रं प्रसन्नम् ।
वामाङ्कारूढसीतामुखकमलमिलल्लोचनं नीरदाभं
नानालङ्कारदीप्तं दधतमुरुजटामण्डलं रामचन्द्रम् ॥
इति ध्यानम् ।

चरितं रघुनाथस्य शतकोटिप्रविस्तरम् ।
एकैकमक्षरं पुंसां महापातकनाशनम् ॥१॥
ध्यात्वा नीलोत्पलश्यामं रामं राजीवलोचनम् ।
जानकीलक्ष्मणोपेतं जटामुकुटमण्डितम् ॥२॥
सासितूणधनुर्बाणपाणिं नक्तञ्चरान्तकम् ।
स्वलीलया जगत् त्रातुमाविर्भूतमजं विभुम् ॥३॥

रामरक्षां पठेत् प्राज्ञः पापघ्नीं सर्वकामदाम् ।
शिरो मे राघवः पातु भालं दशरथात्मजः ॥४॥
कौसल्येयो दृशौ पातु विश्वामित्रप्रियः श्रुती ।
घ्राणं पातु मखत्राता मुखं सौमित्रिवत्सलः ॥५॥
जिह्वा विद्यानिधिः पातु कण्ठं भरतवन्दितः ।
स्कन्धौ दिव्यायुधः पातु भुजौ भग्नेशकार्मुकः ॥६॥
करौ सीतापतिः पातु हृदयं जामदग्न्यजित् ।
मध्यं पातु खरध्वंसी नाभिं जाम्बवदाश्रयः ॥७॥
सुग्रीवेशः कटी पातु सक्थिनी हनुमत्प्रभुः ।
ऊरू रघूत्तमः पातु रक्षःकुलविनाशकृत् ॥८॥
जानुनी सेतुकृत् पातु जङ्घे दशमुखान्तकः ।
पादौ विभीषणश्रीदः पातु रामोऽखिलं वपुः ॥९॥
एतां रामबलोपेतां रक्षां यः सुकृती पठेत् ।
स चिरायुः सुखी पुत्री विजयी विनयी भवेत् ॥१०॥
पातालभूतलव्योमचारिणश्छद्मचारिणः ।
न द्रष्टुमपि शक्तास्ते रक्षितं रामनामभिः ॥११॥
रामेति रामभद्रेति रामचन्द्रेति वा स्मरन् ।
नरो न लिप्यते पापैर्भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति ॥१२॥
जगज्जैत्रैकमन्त्रेण रामनाम्नाभिरक्षितम् ।
यः कण्ठे धारयेत् तस्य करस्थाः सर्वसिद्धयः ॥१३॥
वज्रपञ्जरनामेदं यो रामकवचं स्मरेत् ।
अव्याहताज्ञः सर्वत्र लभते जयमङ्गलम् ॥१४॥
आदिष्टवान् यथा स्वप्ने रामरक्षामिमां हरः ।
तथा लिखितवान् प्राप्तः प्रबुद्धो बुधकौशिकः ॥१५॥
आरामः कल्पवृक्षाणां विरामः सकलापदाम् ।
अभिरामस्त्रिलोकानां रामः श्रीमान् स नः प्रभुः ॥१६॥
तरुणौ रूपसम्पन्नौ सुकुमारौ महाबलौ ।
पुण्डरीकविशालाक्षौ चीरकृष्णाजिनाम्बरौ ॥१७॥

फलमूलाशिनौ दान्तौ तापसौ ब्रह्मचारिणौ ।
पुत्रौ दशरथस्यैतौ भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ ॥१८॥
शरण्यौ सर्वसत्त्वानां श्रेष्ठौ सर्वधनुष्मताम् ।
रक्षःकुलनिहन्तारौ त्रायेतां नो रघूत्तमौ ॥१९॥
आत्तसज्जधनुषाविषुस्पृशावक्षयाशुगनिषङ्गसङ्गिनौ ।
रक्षणाय मम रामलक्ष्मणावग्रतः पथि सदैव गच्छताम् ॥२०॥
सन्नद्धः कवची खड्गी चापबाणधरो युवा ।
गच्छन् मनोरथोऽस्माकं रामः पातु सलक्ष्मणः ॥२१॥
रामो दाशरथिः शूरो लक्ष्मणानुचरो बली ।
काकुत्स्थः पुरुषः पूर्णः कौसल्येयो रघूत्तमः ॥२२॥
वेदान्तवेद्यो यज्ञेशः पुराणपुरुषोत्तमः ।
जानकीवल्लभः श्रीमानप्रमेयपराक्रमः ॥२३॥
इत्येतानि जपन्नित्यं मद्भक्तः श्रद्धयान्वितः ।
अश्वमेधादिकं पुण्यं सम्प्राप्नोति न संशयः ॥२४॥
रामं दूर्वादलश्यामं पद्माक्षं पीतवाससम् ।
स्तुवन्ति नामभिर्दिव्यैर्न ते संसारिणो नराः ॥२५॥
रामं लक्ष्मणपूर्वजं रघुवरं सीतापतिं सुन्दरं
काकुत्स्थं करुणार्णवं गुणनिधिं विप्रप्रियं धार्मिकम् ।
राजेन्द्रं सत्यसन्धं दशरथतनयं श्यामलं शान्तमूर्तिं
वन्दे लोकाभिरामं रघुकुलतिलकं राघवं रावणारिम् ॥२६॥
रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे ।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ॥२७॥
श्रीराम राम रघुनन्दन राम राम
श्रीराम राम भरताग्रज राम राम ।
श्रीराम राम रणकर्कश राम राम
श्रीराम राम शरणं भव राम राम ॥२८॥
श्रीरामचन्द्रचरणौ मनसा स्मरामि
श्रीरामचन्द्रचरणौ वचसा गृणामि ।

श्रीरामचन्द्रचरणौ शिरसा नमामि
श्रीरामचन्द्रचरणौ शरणं प्रपद्ये ॥२९॥
माता रामो मत्पिता रामचन्द्रः
स्वामी रामो मत्सखा रामचन्द्रः ।
सर्वस्वं मे रामचन्द्रो दयालु-
र्नान्यं जाने नैव जाने न जाने ॥३०॥
दक्षिणे लक्ष्मणो यस्य वामे तु जनकात्मजा ।
पुरतो मारुतिर्यस्य तं वन्दे रघुनन्दनम् ॥३१॥
लोकाभिरामं रणरङ्गधीरं राजीवनेत्रं रघुवंशनाथम् ।
कारुण्यरूपं करुणाकरं तं श्रीरामचन्द्रं शरणं प्रपद्ये ॥३२॥
मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ॥३३॥
कूजन्तं रामरामेति मधुरं मधुराक्षरम् ।
आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलम् ॥३४॥
आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम् ।
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम् ॥३५॥
भर्जनं भवबीजानामर्जनं सुखसम्पदाम् ।
तर्जनं यमदूतानां रामरामेति गर्जनम् ॥३६॥
रामो राजमणिः सदा विजयते रामं रमेशं भजे
रामेणाभिहता निशाचरचमू रामाय तस्मै नमः ।
रामान्नास्ति परायणं परतरं रामस्य दासोऽस्म्यहं
रामे चित्तलयः सदा भवतु मे भो राम मामुद्धर ॥३७॥
राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे ।
सहस्रनाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने ॥३८॥

***

ब्रह्मदेवकृतरामस्तुतिः

वन्दे देवं विष्णुमशेषस्थितिहेतुं
त्वामध्यात्मज्ञानिभिरन्तर्हृदि भाव्यम् ।

हेयाहेयद्वन्द्वविहीनं परमेकं
सत्तामात्रं सर्वहृदिस्थं दृशिरूपम् ॥१॥
प्राणापानौ निश्चयबुद्ध्या हृदि रुद्ध्वा
छित्त्वा सर्वं संशयबन्धं विषयौघान् ।
पश्यन्तीशं यं गतमोहा यतयस्तं
वन्दे रामं रत्नकिरीटं रविभासम् ॥२॥
मायातीतं माधवमाद्यं जगदादिं
मानातीतं मोहविनाशं मुनिवन्द्यम् ।
योगिध्येयं योगविधानं परिपूर्णं
वन्दे रामं रञ्जितलोकं रमणीयम् ॥३॥
भावाभावप्रत्ययहीनं भवमुख्यै-
र्योगासक्तैरर्चितपादाम्बुजयुग्मम् ।
नित्यं शुद्धं बुद्धमनन्तं प्रणवाख्यं
वन्दे रामं वीरमशेषासुरदावम् ॥४॥
त्वं मे नाथो नाथितकार्याखिलकारी
मानातीतो माधवरूपोऽखिलधारी ।
भक्त्या गम्यो भावितरूपो भवहारी
योगाभ्यासैर्भावितचेतः सहचारी ॥५॥
त्वामाद्यन्तं लोकततीनां परमीशं
लोकानां नो लौकिकमानैरधिगम्यम् ।
भक्तिश्रद्धाभावसमेतैर्भजनीयं
वन्दे रामं सुन्दरमिन्दीवरनीलम् ॥६॥
को वा ज्ञातुं त्वामतिमानं गतमानं
मायासक्तो माधव शक्तो मुनिमान्यम् ।
वृन्दारण्ये वन्दितवृन्दारकवृन्दं
वन्दे रामं भवमुखवन्द्यं सुखकन्दम् ॥७॥
नानाशास्त्रैर्वेदकदम्बैः प्रतिपाद्यं
नित्यानन्दं निर्विषयज्ञानमनादिम् ।

मत्सेवार्थं मानुषभावं प्रतिपन्नं
वन्दे रामं मरकतवर्णं मथुरेशम् ॥८॥
श्रद्धायुक्तो यः पठतीमं स्तवमाद्यं
ब्राह्मं ब्रह्मज्ञाननिधानं भुवि मर्त्यः ।
रामं श्यामं कामितकामप्रदमीशं
ध्यात्वा ध्याता पातकजालैर्विगतः स्यात् ॥९॥

***

श्रीरामाष्टकम्

भजे विशेषसुन्दरं समस्तपापखण्डनम् ।
स्वभक्तचित्तरञ्जनं सदैव राममद्वयम् ॥१॥
जटाकलापशोभितं समस्तपापनाशकम् ।
स्वभक्तभीतिभञ्जनं भजे ह राममद्वयम् ॥२॥
निजस्वरूपबोधकं कृपाकरं भवापहम् ।
समं शिवं निरञ्जनं भजे ह राममद्वयम् ॥३॥
सप्रपञ्चकल्पितं ह्यनामरूपवास्तवम् ।
निराकृतिं निरामयं भजे ह राममद्वयम् ॥४॥
निष्प्रपञ्चनिर्विकल्पनिर्मलं निरामयम् ।
चिदेकरूपसन्ततं भजे हे राममद्वयम् ॥५॥
भवाब्धिपोतरूपकं ह्यशेषदेहकल्पितम् ।
गुणाकरं कृपाकरं भजे ह राममद्वयम् ॥६॥
महासुवाक्यबोधकैर्विराजमानवाक्पदैः ।
परब्रह्म व्यापकं भजे ह राममद्वयम् ॥७॥
शिवप्रदं सुखप्रदं भवच्छिदं भ्रमापहम् ।
विराजमानदेशिकं भजे ह राममद्वयम् ॥८॥
रामाष्टकं पठति यः सुकरं सुपुण्यं
व्यासेन भाषितमिदं शृणुते मनुष्यः ।

विद्यां श्रियं विपुलसौख्यमनन्तकीर्तिं
सम्प्राप्य देहविलये लभते च मोक्षम् ॥९॥

***

श्रीरामचन्द्रस्तुतिः

नमामि भक्तवत्सलं कृपालु-शील-कोमलम् ।
भजामि ते पदाम्बुजम् अकामिनां स्वधामदम्॥१॥
निकाम-श्याम-सुन्दरं भवाम्बुनाथ-मन्दरम् ।
प्रफुल्ल-कञ्ज-लोचनं मदादि-दोष-मोचनम् ॥२॥
प्रलम्ब-बाहु-विक्रमं प्रभोऽप्रमेय-वैभवम् ।
निषङ्ग-चाप-सायकं-धरं त्रिलोक-नायकम् ॥३॥
दिनेश-वंश-मण्डनं महेश-चाप-खण्डनम् ।
मुनीन्द्रसन्तरञ्जनं सुरारिवृन्द-भञ्जनम् ॥४॥
मनोज-वैरि-वन्दितम् अजादि-देव-सेवितम् ।
विशुद्ध-बोध-विग्रहं समस्त-दूषणापहम् ॥५॥
नमामि इन्दिरा-पतिं सुखाकरं सतां गतिम् ।
भजे सशक्ति-सानुजं शची-पति-प्रियानुजम् ॥६॥
त्वदङ्घ्रि-मूल ये नराः भजन्ति हीन-मत्सराः ।
पतन्ति नो भवार्णवे वितर्क-वीचि-सङ्कुले ॥७॥
विविक्त-वासिनः सदा भजन्ति मुक्तये मुदा ।
निरस्य इन्द्रियादिकं प्रयान्ति ते गतिं स्वकम् ॥८॥
तमेकमद्भुतं प्रभुं निरीहमीश्वरं विभुम् ।
जगद्गुरुं च शाश्वतं तुरीयमेव केवलम् ॥९॥
भजामि भाव-वल्लभं कुयोगिनां सुदुर्लभम् ।
स्वभक्त-कल्प-पादपं समं सुसेव्यमन्वहम् ॥१०॥
अनूप-रूप-भूपतिं नतोऽहमुर्विजापतिम् ।
प्रसीद मे नमामि ते पदाब्जभक्ति देहि मे ॥११॥
पठन्ति ये स्तवम् इदं नरादरेण ते पदम् ।
व्रजन्ति नात्र संशयं त्वदीय-भक्ति-संयुताः ॥१२॥

***

श्रीकृष्णस्तोत्राणि

श्रीकृष्णध्यानम्

सत्पुण्डरीकनयनं मेघाभं वैद्युताम्बरम् ।
द्विभुजं ज्ञानमुद्राढ्यं वनमालिनमीश्वरम् ॥१॥
गोपगोपाङ्गनावीतं सुरद्रुमतलाश्रितम् ।
दिव्यालङ्करणोपेतं रत्नपङ्कजमध्यगम् ॥२॥
कालिन्दीजलकल्लोलासङ्गिमारुतसेवितम् ।
चिन्तयंश्चेतसा कृष्णं मुक्तो भवति संसृतेः ॥३॥

***

श्रीकृष्णप्रणामः

कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने ।
प्रणतक्लेशनाशाय गोविन्दाय नमो नमः ॥

***

श्रीकृष्णस्तुतिः

कृषिर्भूवाचकः शब्दो नश्च निर्वृतिवाचकः ।
तयोरैक्यं परं ब्रह्म कृष्ण इत्यभिधीयते ॥१॥
सच्चिदानन्दरूपाय कृष्णायाक्लिष्टकारिणे ।
नमो वेदान्तवेद्याय गुरवे बुद्धिसाक्षिणे ॥२॥
नमो विश्वस्वरूपाय विश्वस्थित्यन्तहेतवे ।
विश्वेश्वराय विश्वाय गोविन्दाय नमो नमः ॥३॥
नमो विज्ञानरूपाय परमानन्दरूपिणे ।
कृष्णाय गोपीनाथाय गोविन्दाय नमो नमः ॥४॥
नमः कमलनेत्राय नमः कमलमालिने ।
नमः कमलनाभाय कमलापतये नमः ॥५॥
बर्हापीडाभिरामाय रामायाकुण्ठमेधसे ।
रमामानसहंसाय गोविन्दाय नमो नमः ॥६॥

कंसवंशविनाशाय केशिचाणूरघातिने ।
वृषभध्वजवन्द्याय पार्थसारथये नमः ॥७॥
वेणुवादनशीलाय गोपालायाहिमर्दिने ।
कालिन्दीकूललीलाय लोलकुण्डलधारिणे ॥८॥
बल्लवीनयनाम्भोजमालिने नृत्यशालिने ।
नमः प्रणतपालाय श्रीकृष्णाय नमो नमः ॥९॥
नमः पापप्रणाशाय गोवर्धनधराय च ।
पूतनाजीवितान्ताय तृणावर्तासुहारिणे ॥१०॥
निष्कलाय विमोहाय शुद्धायाशुद्धवैरिणे ।
अद्वितीयाय महते श्रीकृष्णाय नमो नमः ॥११॥
प्रसीद परमानन्द प्रसीद परमेश्वर ।
आधिव्याधिभुजङ्गेन दष्टं मामुद्धर प्रभो ॥१२॥
श्रीकृष्ण रुक्मिणीकान्त गोपीजनमनोहर ।
संसारसागरे मग्नं मामुद्धर जगद्गुरो ॥१३॥
केशव क्लेशहरण नारायण जनार्दन ।
गोविन्द परमानन्द मां समुद्धर माधव ॥१४॥

***

श्रीकृष्णाष्टकम्—१

श्रियाश्लिष्टो विष्णुः स्थिरचरवपुर्वेदविषयो
धियां साक्षी शुद्धो हरिरसुरहन्ताब्जनयनः ।
गदी शङ्खी चक्री विमलवनमाली स्थिररुचिः
शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषयः ॥१॥
यतः सर्वं जातं वियदनिलमुख्यं जगदिदं
स्थितौ निःशेषं योऽवति निजसुखांशेन मधुहा ।
लये सर्वं स्वस्मिन् हरति कलया यस्तु स विभुः
शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषयः ॥२॥

असूनायम्यादौ यमनियममुख्यैः सुकरणै-
निरुध्येदं चित्तं हृदि विलयमानीय सकलम् ।
यमीड्यं पश्यन्ति प्रवरमतयो मायिनमसौ
शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषयः ॥३॥
पृथिव्यां तिष्ठन् यो यमयति महीं वेद न धरा
यमित्यादौ वेदो वदति जगतामीशममलम् ।
नियन्तारं ध्येयं मुनिसुरनृणां मोक्षदमसौ
शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषयः ॥४॥
महेन्द्रादिर्देवो जयति दितिजान् यस्य बलतो
न कस्य स्वातन्त्र्यं क्वचिदपि कृतौ यत्कृतिमृते ।
कवित्वादेर्गर्वं परिहरति योऽसौ विजयिनः
शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषयः ॥५॥
विना यस्य ध्यानं व्रजति पशुतां सूकरमुखां
विना यस्य ज्ञानं जनिमृतिभयं याति जनता ।
विना यस्य स्मृत्या कृमिशतजनिं याति स विभुः
शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषयः ॥६॥
नरातङ्कोत्तङ्कः शरणशरणो भ्रान्तिहरणो
घनश्यामः कामो व्रजशिशुवयस्योऽर्जुनसखः ।
स्वयम्भूर्भूतानां जनक उचिताचारसुखदः
शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषयः ॥७॥
यदा धर्मग्लानिर्भवति जगतां क्षोभकरणी
तदा लोकस्वामी प्रकटितवपुः सेतुधृगजः ।
सतां धाता स्वच्छो निगमगणगीतो व्रजपतिः
शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषयः ॥८॥
इति हरिरखिलात्माराधितः शङ्करेण
श्रुतिविशदगुणोऽसौ मातृमोक्षार्थमाद्यः ।
यतिवरनिकटे श्रीयुक्त आविर्बभूव
स्वगुणवृत उदारः शङ्खचक्राब्जहस्तः ॥९॥

***

श्रीकृष्णाष्टकम्—२

भजे व्रजैकमण्डनं समस्तपापखण्डनं
स्वभक्तचित्तरञ्जनं सदैव नन्दनन्दनम् ।
सुपिच्छगुच्छमस्तकं सुनादवेणुहस्तकं
अनङ्गरङ्गसागरं नमामि कृष्णनागरम् ॥१॥
मनोजगर्वमोचनं विशाललोललोचनं
विधूतगोपशोचनं नमामि पद्मलोचनम् ।
करारविन्दभूधरं स्मितावलोकसुन्दरं
महेन्द्रमानदारणं नमामि कृष्णदुर्लभम् ॥२॥
कदम्बसूनकुण्डलं सुचारुगण्डमण्डलं
व्रजाङ्गनैकवल्लभं नमामि कृष्णदुर्लभम् ।
यशोदया समोदया सगोपया सनन्दया
युतं सुखैकदायकं नमामि गोपनायकम् ॥३॥
सदैव पादपङ्कजं मदीयमानसे निजं
दधानमुत्तमालकं नमामि नन्दबालकम् ।
समस्तदोषशोषणं समस्तलोकपोषणं
समस्तगोपमानसं नमामि नन्दलालसम् ॥४॥
भुवो भरावतारकं भवाब्धिकर्णधारकं
यशोमतीकिशोरकं नमामि चित्तचोरकम् ।
दृगन्तकान्तभङ्गिनं सदासदालसङ्गिनं
दिने दिने नवं नवं नमामि नन्दसम्भवम् ॥५॥
गुणाकरं सुखाकरं कृपाकरं कृपापरं
सुरद्विषन्निकन्दनं नमामि गोपनन्दनम् ।
नवीनगोपनागरं नवीनकेलिलम्पटं
नमामि मेघसुन्दरं तडित्प्रभालसत्पटम् ॥६॥
समस्तगोपनन्दनं हृदम्बुजैकमोदनं
नमामि कुञ्जमध्यगं प्रसन्नभानुशोभनम् ।
निकामकामदायकं दृगन्तचारुसायकं
रसालवेणुगायकं नमामि कुञ्जनायकम् ॥७॥

विदग्धगोपिकामनोमनोज्ञतल्पशायिनं
नमामि कुञ्जकानने प्रवृद्धवह्निपायिनम् ।
यदा तदा यथा तथा तथैव कृष्णसत्कथा
मया सदैव गीयतां तथा कृपा विधीयताम् ॥८॥
प्रमाणिकाष्टकद्वयं जपत्यधीत्य यः पुमान्
भवेत् स नन्दनन्दने भवे भवे सुभक्तिमान् ॥९॥

***

श्रीजगन्नाथाष्टकम्

कदाचित्कालिन्दीतटविपिनसङ्गीतकरवो
मुदाभीरीनारीवदनकमलास्वादमधुपः ।
रमाशम्भुब्रह्मासुरपतिगणेशार्चितपदो
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥१॥
भुजे सव्ये वेणुं शिरसि शिखिपुच्छं कटितटे
दुकूलं नेत्रान्ते सहचरकटाक्षं विलसयन् ।
सदा श्रीमद्वृन्दावनवसतिलीलापरिचयो
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥२॥
महाम्भोधेस्तीरे कनकरुचिरे नीलशिखरे
वसन् प्रासादान्तः सहजबलभद्रेण बलिना ।
सुभद्रामध्यस्थः सकलसुरसेवावसरदो
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥३॥
कृपापारावारः सजलजलदश्रेणिरुचिरो
रमावाणीरामः स्फुरदमलपङ्केरुहमुखः ।
सुरेन्द्रैराराध्यः श्रुतिगणशिखागीतचरितो
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥४॥
रथारूढो गच्छन् पथि मिलितभूदेवपटलैः
स्तुतिप्रादुर्भावं प्रतिपदमुपाकर्ण्य सदयः ।
दयासिन्धुर्बन्धुः सकलजगतां सिन्धुसुतया
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥५॥

परब्रह्मापीडः कुवलयदलोत्फुल्लनयनो
निवासी नीलाद्रौ निहितचरणोऽनन्तशिरसि ।
रसानन्दो राधासरसवपुरालिङ्गनसुखो
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥६॥
न वै याचे राज्यं न च कनकमाणिक्यविभवं
न याचेऽहं रम्यां सकलजनकाम्यां वरवधूम् ।
सदा काले काले प्रमथपतिना गीतचरितो
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥७॥
हर त्वं संसारं द्रुततरमसारं सुरपते
हर त्वं पापानां विततिमपरां यादवपते ।
अहो दीनानाथं निहितमचलं निश्चितपदं
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥८॥
जगन्नाथाष्टकं पुण्यं यः पठेत् प्रयतः शुचिः ।
सर्वपापविशुद्धात्मा विष्णुलोकं स गच्छति ॥९॥

***

श्रीमदनमोहनाष्टकम्

जय शङ्खगदाधर नीलकलेवर पीतपटाम्बर देहि पदम् ।
जय चन्दनचर्चित कुण्डलमण्डित कौस्तुभशोभित देहि पदम् ॥१॥
जय पङ्कजलोचन मारविमोहन पापविखण्डन देहि पदम् ।
जय वेणुनिनादक रासविहारक वङ्किम सुन्दर देहि पदम् ॥२॥
जय धीरधुरन्धर अद्भुत सुन्दर दैवतसेवित देहि पदम् ।
जय विश्वविमोहन मानसमोहन संस्थितिकारण देहि पदम् ॥३॥
जय भक्तजनाश्रय नित्यसुखालय अन्तिमबान्धव देहि पदम् ।
जय दुर्जयशासन केलिपरायण कालियमर्दन देहि पदम् ॥४॥
जय नित्यनिरामय दीनदयामय चिन्मय माधव देहि पदम् ।
जय पामरपावन धर्मपरायण दानवसूदन देहि पदम् ॥५॥
जय वेदविदां वर गोपवधूप्रिय वृन्दावनधन देहि पदम् ।
जय सत्यसनातन दुर्गतिभञ्जन सज्जनरञ्जन देहि पदम् ॥६॥

जय सेवकवत्सल करुणासागर वाञ्छितपूरक देहि पदम् ।
जय पूतधरातल देवपरात्पर सत्त्वगुणाकर देहि पदम् ॥७॥
जय गोकुलभूषण कंसनिषूदन सात्वतजीवन देहि पदम् ।
जय योगपरायण संसृतिवारण ब्रह्मनिरञ्जन देहि पदम् ॥८॥

***

श्रीकृष्णवन्दना

नवीनमेघसन्निभं सुनीलकमलच्छविम् ।
सुहासरञ्जिताधरं नमामि कृष्णसुन्दरम् ॥१॥
यशोदानन्दनन्दनं सुरेन्द्रपादवन्दनम् ।
सुवर्णरत्नमण्डनं नमामि कृष्णसुन्दरम् ॥२॥
भवाब्धिकर्णधारकं भयार्तिनाशकारकम् ।
मुमुक्षुमुक्तिदायकं नमामि कृष्णसुन्दरम् ॥३॥

***

श्रीरामकृष्णस्तोत्राणि

श्रीरामकृष्णध्यानम्

हृदयकमलमध्ये राजितं निर्विकल्पं
सदसदखिलभेदातीतमेकस्वरूपम् ।
प्रकृतिविकृतिशून्यं नित्यमानन्दमूर्तिं
विमलपरमहंसं रामकृष्णं भजामः ॥१॥
निरुपममतिसूक्ष्मं निष्प्रपञ्चं निरीहं
गगनसदृशमीशं सर्वभूताधिवासम् ।
त्रिगुणरहितसच्चिद्ब्रह्मरूपं वरेण्यं
विमलपरमहंसं रामकृष्णं भजामः ॥२॥
वितरितुमवतीर्णं ज्ञानभक्तिप्रशान्तीः
प्रणयगलितचित्तं जीवदुःखासहिष्णुम् ।
धृतसहजसमाधिं चिन्मयं कोमलाङ्गं
विमलपरमहंसं रामकृष्णं भजामः ॥३॥

***

श्रीरामकृष्णप्रणामः

स्थापकाय च धर्मस्य सर्वधर्मस्वरूपिणे ।
अवतारवरिष्ठाय रामकृष्णाय ते नमः ॥

***

श्रीरामकृष्णस्तोत्रम्—१

आचण्डालाप्रतिहतरयो यस्य प्रेमप्रवाहः
लोकातीतोऽप्यहह न जहौ लोककल्याणमार्गम् ।
त्रैलोक्येऽप्यप्रतिममहिमा जानकीप्राणबन्धो
भक्त्या ज्ञानं वृतवरवपुः सीतया यो हि रामः ॥१॥
स्तब्धीकृत्य प्रलयकलितं वाहवोत्थं महान्तं
हित्वा रात्रिं प्रकृतिसहजामन्धतामिस्रमिश्राम् ।

गीतं शान्तं मधुरमपि यः सिंहनादं जगर्ज
सोऽयं जातः प्रथितपुरुषो रामकृष्णस्त्विदानीम् ॥२॥
नरदेव देव जय जय नरदेव ॥
शक्तिसमुद्रसमुत्थतरङ्गं दर्शितप्रेमविजृम्भितरङ्गम् ।
संशयराक्षसनाशमहास्त्रं यामि गुरुं शरणं भववैद्यम् ॥३॥
अद्वयतत्त्वसमाहितचित्तं प्रोज्ज्वलभक्तिपटावृतवृत्तम् ।
कर्मकलेवरमद्भुतचेष्टं यामि गुरुं शरणं भववैद्यम् ॥४॥
नरदेव देव जय जय नरदेव ॥

***

श्रीरामकृष्णस्तोत्रम्—२

ॐ ह्रीं ऋतं त्वमचलो गुणजिद् गुणेड्यो
नक्तन्दिवं सकरुणं तव पादपद्मम् ।
मोहङ्कषं बहुकृतं न भजे यतोऽहं
तस्मात्त्वमेव शरणं मम दीनबन्धो ॥१॥
भक्तिर्भगश्च भजनं भवभेदकारि
गच्छन्त्यलं सुविपुलं गमनाय तत्त्वम् ।
वक्त्रोद्धृतं तु हृदि मे न च भाति किञ्चित्
तस्मात्त्वमेव शरणं मम दीनबन्धो ॥२॥
तेजस्तरन्ति तरसा त्वयि तृप्ततृष्णा
रागे कृते ऋतपथे त्वयि रामकृष्णे ।
मर्त्यामृतं तव पदं मरणोर्मिनाशं
तस्मात्त्वमेव शरणं मम दीनबन्धो ॥३॥
कृत्यं करोति कलुषं कुहकान्तकारि
ष्णान्तं शिवं सुविमलं तव नाम नाथ ।
यस्मादहं त्वशरणो जगदेकगम्य
तस्मात्त्वमेव शरणं मम दीनबन्धो ॥४॥

***

श्रीरामकृष्णावतारस्तोत्रम्

हृदयकमलमध्ये राजितं निर्विकल्पं
सदसदखिलभेदातीतमेकस्वरूपम् ।
प्रकृतिविकृतिशून्यं नित्यमानन्दमूर्तिं
विमलपरमहंसं रामकृष्णं भजामः ॥१॥
निरुपममतिसूक्ष्मं निष्प्रपञ्चं निरीहं
गगनसदृशमीशं सर्वभूताधिवासम् ।
त्रिगुणरहितसच्चिद्ब्रह्मरूपं वरेण्यं
विमलपरमहंसं रामकृष्णं भजामः ॥२॥
प्रलयजलधिमग्नं वेदराशिं दिधीर्षु-
र्दनुजमतिविशालं हंसि शङ्खं विचित्रम् ।
तमपरिमितवीर्यं मीनरूपं दधानं
विमलपरमहंसं रामकृष्णं भजामः ॥३॥
अतुलविपुलदेहे चिन्मये कूर्मरूपे
वहसि सकलमेतद्विश्वमाधारशक्त्या ।
तव खलु महिमानं कोऽल्पधीर्वर्णयेत् त्वां
विमलपरमहंसं रामकृष्णं भजामः ॥४॥
दशनविधृतपृथ्वीं शूकरं श्वेतकायं
दलितदितिजराजं दंष्ट्रिणं चक्रपाणिम् ।
अमितविभवशक्तिं पालकं देवतानां
विमलपरमहंसं रामकृष्णं भजामः ॥५॥
विकटदशनवक्त्रं लोलजिह्वं प्रचण्डं
गिरिवरसमकायं रक्तहस्तं नृसिंहम् ।
प्रशमितसुरखेदं कोटिसूर्यप्रकाशं
विमलपरमहंसं रामकृष्णं भजामः ॥६॥
छलयितुमवतीर्णो वामनस्त्वं बलिं वै
त्रिचरणकमलेन क्रामसि स्वर्भुवो भूः ।
परमपुरुषमादिं काश्यपं विश्वरूपं
विमलपरमहंसं रामकृष्णं भजामः ॥७॥

निशितपरशुधारं क्षत्रसन्तानकेतुं
नवजलधरवर्णं भार्गवं भीमवीर्यम् ।
शमनसदृशघोरं जामदग्न्यं विशालं
विमलपरमहंसं रामकृष्णं भजामः ॥८॥
रघुकुलवरमीशं जानकीप्राणनाथं
समरकुशलवीरं राघवं रावणारिम् ।
हनुमदनुजसेव्यं धार्मिकं सत्यपालं
विमलपरमहंसं रामकृष्णं भजामः ॥९॥
हलधरमतिशुभ्रं नीलवस्त्रं सुरेन्द्रं
दनुजदलनकार्ये पारगं मत्तसिंहम् ।
यममिव यमुनाया भीतिदं रौहिणेयं
विमलपरमहंसं रामकृष्णं भजामः ॥१०॥
व्रजविपिनविहारे श्यामलं वासुदेवं
सुमधुररसकेलिं गोपिकाप्राणनाथम् ।
मदनरमणवेशं कंसकालं कवीशं
विमलपरमहंसं रामकृष्णं भजामः ॥११॥
पशुवधमतिघोरं चोदितं वेदशास्त्रैः
शमयितुमवतीर्णं ज्ञानदं शाक्यसिंहम्।
प्रकटितनवमार्गाद्वैतनिर्वाणकल्पं
विमलपरमहंसं रामकृष्णं भजामः ॥१२॥
मधुरसरलवाक्यैरीशतत्त्वं प्रकाश्य
क्रुशगतपरिशेषोऽपीशपुत्रोऽमृतो यः ।
तमतिशयपवित्रं मेरिजं लोकबन्धुं
विमलपरमहंसं रामकृष्णं भजामः ॥१३॥
यवनभजनरीतिं नीतिमिस्लामशास्त्रं
उपदिशति विनेयान् तत्त्वमल्लाभिधस्य ।
परमपुरुषनुन्नो यो महम्मद्वपुस्तं
विमलपरमहंसं रामकृष्णं भजामः ॥१४॥

श्रुतिनिगदितमार्गस्थापनायावतारं
जिननयबहुवादभ्रान्तिमुन्मूलयन्तम् ।
भुवनविजयकीर्तिं शङ्करं भाष्यकारं
विमलपरमहंसं रामकृष्णं भजामः ॥१५॥
कलिमलहरनाम्नः कीर्तनं घोषयन्तं
करधृतजलपात्रं दण्डिनं हेमवर्णम् ।
भवजलनिधिपोतं कृष्णचैतन्यरूपं
विमलपरमहंसं रामकृष्णं भजामः ॥१६॥
वितुरितुमवतीर्णं ज्ञानभक्तिप्रशान्तीः
प्रणयगलितचित्तं जीवदुःखासहिष्णुम् ।
धृतसहजसमाधिं चिन्मयं कोमलाङ्गं
विमलपरमहंसं रामकृष्णं भजामः ॥१७॥
हरिहरविधिदेवा मूर्तिभेदास्तवैते
निरुपमबहुमूर्तिर्मायया कल्पयन्तम् ।
अमितगुणचरित्रं दीनबन्धुं दयालुं
विमलपरमहंसं रामकृष्णं भजामः ॥१८॥
जय जय करुणाब्धे मोक्षसेतो स्मरारे
जय जय जगदीश ज्ञानसिन्धो स्वयम्भो ।
जय जय परमात्मंस्त्राहि मां भक्तिहीनं
जय जय भवहारिन् रामकृष्ण द्विबाहो ॥१९॥
मूकोऽहं नाभिजानामि तव स्तुतिं जगद्गुरो ।
तथापि त्वत्कृपालेशाद्वाचालोऽस्मि पुनः पुनः ॥२०॥

***

श्रीरामकृष्णस्तवराजः

ओङ्कारवेद्यः पुरुषः पुराणो
बुद्धेश्च साक्षी निखिलस्य जन्तोः ।
यो वेत्ति सर्वं न च यस्य वेत्ता
परात्मरूपो भुवि रामकृष्णः ॥१॥

न वेदगम्यो न च योगगम्यो
ध्यानैर्न जापैर्न तपोभिरुग्रैः।
ज्ञेयः कदापीह ततोऽवतीर्णो
दयानिधे त्वं भुवि रामकृष्णः ॥२॥

मोक्षस्वरूपं तव धाम नित्यं
यथा तदाप्नोति विशुद्धचित्तः।
तथोपदेष्टाखिलतत्त्ववेत्ता
त्वं विश्वधाता भुवि रामकृष्णः ॥३॥

भक्तेस्तथा शुद्धज्ञानस्य मार्गौ
प्रदर्शितौ द्वौ भवमुक्तिहेतू।
तयोर्गतानां ध्रुवनायकोऽसि
त्वं मोक्षसेतुर्भुवि रामकृष्णः ॥४॥

गतिस्त्वमेका जगतां जडानां
पुरा विसृष्टेश्चिदखण्डरूपः।
तद्वल्लये स्या अधुनासि तद्वत्
त्वमादिदेवो भुवि रामकृष्णः ॥५॥

वर्णाश्रमाचारविहीनशान्ताः
संन्यासिनो ज्ञानविधूतचित्ताः।
ध्यायन्ति यं नित्यमभेददृष्ट्या
स एव हि त्वं भुवि रामकृष्णः ॥६॥

तेजोमयं दर्शयसि स्वरूपं
कोषान्तरस्थं परमार्थतत्त्वम्।
संस्पर्शमात्रेण नृणां समाधिं
विधाय सद्यो भुवि रामकृष्णः ॥७॥

रागादिशून्यां तव सौम्यमूर्तिं
दृष्ट्वा पुनश्चात्र न जन्मभाजः।
स्थाने यदादाय विशुद्धसत्त्वम्
इहावतीर्णो भुवि रामकृष्णः ॥८॥

महाविचित्रं महदादिकार्यं
लब्ध्वाप्यधिष्ठानमनाद्यनन्तम् ।
करोति नित्या प्रकृतिस्तवाद्या
तद्ब्रह्म सच्चिद् भुवि रामकृष्णः ॥९॥
कृशानुवत्तापविदग्धचित्ताः
संसारिणः शान्तिनिकेतनं त्वाम् ।
सम्प्राप्य शान्ता हि भवन्ति तेषां
त्वं शान्तिदाता भुवि रामकृष्णः ॥१०॥
षडङ्गयोगो न यतः सुसाध्यो
ज्ञानाधिकारी सुलभो न यस्मात् ।
गरीयसी भक्तिरतः कलौ स्यात्
तज्ज्ञापकस्त्वं भुवि रामकृष्णः ॥११॥
नाकादिलोकं सुखदं च दिव्यं
सुरम्यमैश्वर्यमहं न याचे ।
हृदासने त्वं कृपया सदा वै
वसेति याचे भुवि रामकृष्णः ॥१२॥
यं ब्रह्मविष्णू गिरिशश्च देवा
ध्यायन्ति गायन्ति नमन्ति नित्यम् ।
तैः प्रार्थितस्तस्य परावतारो
द्विबाहुधारी भुवि रामकृष्णः ॥१३॥
वन्दे जगद्बीजमखण्डमेकं
वन्दे सुरैः सेवितपादपीठम् ।
वन्दे भवेशं भवरोगवैद्यं
तमेव वन्दे भुवि रामकृष्णम् ॥१४॥
रामकृष्णं चिदानन्दं यः स्तौति भक्तिमान् सदा ।
तस्य चित्तं भवेच्छुद्धं तत्त्वज्ञानं स्वयं ततः ॥१५॥

***

श्रीरामकृष्णाष्टकम्

विश्वस्य धाता पुरुषस्त्वमाद्यो-
ऽव्यक्तेन रूपेण ततं त्वयेदम् ।
हे रामकृष्ण त्वयि भक्तिहीने
कृपाकटाक्षं कुरु देव नित्यम् ॥१॥
त्वं पासि विश्वं सृजसि त्वमेव
त्वमादिदेवो विनिहंसि सर्वम् ।
हे रामकृष्ण त्वयि भक्तिहीने
कृपाकटाक्षं कुरु देव नित्यम् ॥२॥
मायां समाश्रित्य करोषि लीलां
भक्तान् समुद्धर्तुमनन्तमूर्तिः ।
हे रामकृष्ण त्वयि भक्तिहीने
कृपाकटाक्षं कुरु देव नित्यम् ॥३॥
विधृत्य रूपं नरवत्त्वया वै
विज्ञापितो धर्म इहातिगुह्यः ।
हे रामकृष्ण त्वयि भक्तिहीने
कृपाकटाक्षं कुरु देव नित्यम् ॥४॥
तपोऽथ ते त्यागमदृष्टपूर्वं
दृष्ट्वा नमस्यन्ति कथं न विज्ञाः ।
हे रामकृष्ण त्वयि भक्तिहीने
कृपाकटाक्षं कुरु देव नित्यम् ॥५॥
श्रुत्वात्र ते नाम भवन्ति भक्ता
दृष्ट्वा वयं त्वां न तु भक्तियुक्ताः ।
हे रामकृष्ण त्वयि भक्तिहीने
कृपाकटाक्षं कुरु देव नित्यम् ॥६॥
सत्यं विभुं शान्तमनादिरूपं
प्रसादये त्वामजमन्तशून्यम् ।
हे रामकृष्ण त्वयि भक्तिहीने
कृपाकटाक्षं कुरु देव नित्यम् ॥७॥

जानामि तत्त्वं न हि देशिकेन्द्रं
किं ते स्वरूपं किमु भावजातम् ।
हे रामकृष्ण त्वयि भक्तिहीने
कृपाकटाक्षं कुरु देव नित्यम् ॥८॥

***

श्रीरामकृष्णावतारस्तोत्रम्

सल्लोका विषयविरागिणो यदर्थं
सन्त्यक्तः सुखनिवहो बुधैश्च बाल्यात् ।
यल्लब्धुं कठिनतपो हि चयति ज्ञै-
र्लिप्स्यन्ते त्रिदशगणाः सदा पदं यत् ॥१॥
यस्मान्नास्ति भगवतो हि किञ्चिदूर्ध्वं
सुप्राप्यश्च न खलु कस्यचिद्व्रतोऽन्यः ।
सोऽसावेव परमहंसरामकृष्णः
सर्वज्ञः सकलमनोमतः प्रशान्तः ॥२॥
रक्षार्थं निजवचनं त्रितापहर्ता
गौराङ्गेन भगवता प्रतिश्रुतं यत् ।
भक्तार्थं परमदयाल आगतस्त्वं
मह्यं ते पुरुष समर्पयामि सर्वम् ॥३॥
छद्मप्रसाधनधरोऽसि विवेत्ति कस्ते
कृष्णाधुनावतरणस्य निगूढतत्त्वम् ।
स्वेनैव चेन्न कथितं शिव त्वत्प्रियेभ्यो
गुप्तावतार भगवन् भवतः कृपैवम् ॥४॥

***

श्रीरामकृष्णस्तोत्रदशकम्

ब्रह्मरूपमादिमध्यशेषसर्वभासकं
भावषट्कहीनरूप-नित्यसत्यमद्वयम् ।

वाङ्मनोऽतिगोचरं च नेतिनेतिभावितं
तं नमामि देवदेव-रामकृष्णमीश्वरम् ॥१॥
आदितेयभीहरं सुरारिदैत्यनाशकं
साधुशिष्टकामदं महीसुभारहारकम् ।
स्वात्मरूपतत्त्वकं युगे युगे च दर्शितं
तं नमामि देवदेव-रामकृष्णमीश्वरम् ॥२॥
सर्वभूतसर्गकर्मसूत्रबन्धकारणं
ज्ञानकर्मपापपुण्यतारतम्यसाधनम् ।
बुद्धिवास-साक्षिरूप-सर्वकर्मभासनं
तं नमामि देवदेव-रामकृष्णमीश्वरम् ॥३॥
सर्वजीवपापनाशकारणं भवेश्वरं
स्वीकृतं च गर्भवास-देहधानमीदृशम् ।
यापितं स्वलीलया च येन दिव्यजीवनं
तं नमामि देवदेव-रामकृष्णमीश्वरम् ॥४॥
तुल्यलोष्टकाञ्चनं च हेयनेयधीगतं
स्त्रीषु नित्यमातृरूपशक्तिभावभावुकम् ।
ज्ञानभक्तिभुक्तिमुक्तिशुद्धबुद्धिदायकं
तं नमामि देवदेव-रामकृष्णमीश्वरम् ॥५॥
सर्वधर्मगम्यमूलसत्यतत्त्वदेशकं
सिद्धसर्वसम्प्रदाय-सम्प्रदायवर्जितम् ।
सर्वशास्त्रमर्मदर्शि-सर्वविन्निरक्षरं
तं नमामि देवदेव-रामकृष्णमीश्वरम् ॥६॥
चारुदर्शकालिकासुगीतचारुगायकं
कीर्तनेषु मत्तवच्च नित्यभावविह्वलम् ।
सूपदेशदायकं हि शोकतापवारकं
तं नमामि देवदेव-रामकृष्णमीश्वरम् ॥७॥
पादपद्मतत्त्वबोधशान्तिसौख्यदायकं
सक्तचित्तभक्तसूनुनित्यवित्तवर्धकम् ।

दम्भिदर्पदारणं तु निर्भयं जगद्गुरुं
तं नमामि देवदेव-रामकृष्णमीश्वरम् ॥८॥
पञ्चवर्षबालभावयुक्तहंसरूपिणं
सर्वलोकरञ्जनं भवाब्धिसङ्गभञ्जनम् ।
शान्तिसौख्यसद्म-जीवजन्मभीतिनाशनं
तं नमामि देवदेव-रामकृष्णमीश्वरम् ॥९॥
धर्महानहारकं त्वधर्मकर्मवारकं
लोकधर्मचारणं च सर्वधर्मकोविदम् ।
त्यागिगेहिसेव्यनित्यपावनाङ्घ्रिपङ्कजं
तं नमामि देवदेव-रामकृष्णमीश्वरम् ॥१०॥
स्तोत्रशून्यसोमकं सदीशभावव्यञ्जकं
नित्यपाठकस्य वै विपत्तिपुञ्जनाशकम् ।
स्यात्कदापि जापयागयोगभोगसौलभं
दुर्लभं तु रामकृष्णरागभक्तिभावनम् ॥११॥
इति श्रीविरजानन्दरचितं भक्तिसाधकम् ।
स्तवसारं समाप्तं वै श्रीरामकृष्णतूणकम् ॥१२॥

***

श्रीरामकृष्णषट्कम्

विशुद्धविज्ञानमगाधसौख्यं
विश्वस्य बीजं करुणापयोधिः ।
अनाद्यनन्तं प्रकृतेः परस्तात्
तत्तत्त्वमेकं भुवि रामकृष्णः ॥१॥
न नेति भीत्या श्रुतयो वदन्ति
वदन्ति साक्षान्न च यं कदाचित् ।
चिदेकरूपः शिव ईश्वराणां
महेश्वरोऽसौ भुवि रामकृष्णः ॥२॥
यं नित्यमानन्दमनन्तमेकं
शिवेति नाम्ना श्रुतयो गृणन्ति ।

तस्यावतारो नररूपधारी
कृपासुधाब्धिर्भुवि रामकृष्णः ॥३॥
विज्ञानपीयूषनिमग्नमूर्तिः
पस्पर्श यान् यान् दयया करेण ।
ते कामिनीकाञ्चनरिक्तचित्ताः
सद्यो बभूवुर्भुवि रामकृष्णः ॥४॥
प्रेमाब्धिगम्भीरतरङ्गभङ्गै-
रान्दोलितो यो भगवद्विलीनः ।
भक्तिर्विशुद्धा स्वयमाविरासीत्
पुंविग्रहोऽहो भुवि रामकृष्णः ॥५॥
तमद्भुतं कञ्चिदचिन्त्यशक्तिं
वन्दे प्रशान्तं परिपूर्णबोधम् ।
ज्ञानस्य भक्तेश्च विशुद्धमूर्तिं
द्विमूर्तिमेकं भुवि रामकृष्णम् ॥६॥

***

श्रीगदाधरस्तोत्रम्

घनचेतनमक्रियमादिमजं
चिर-निश्चल-निष्कल-निर्विरुजम् ।
सुखसद्म-विशुद्ध-विबुद्धवरं
प्रणमामि गदाधर-ब्रह्मपरम् ॥१॥
शत-शौरि-मुरारि-तरङ्गयुतं
अयुतायुत-भास्कर-कुक्षिधृतम् ।
सुविशाल-समुद्र-सुदभ्रकरं
प्रणमामि गदाधर-ब्रह्मपरम् ॥२॥
क्षुदिराम-विराम-विलासकरं
छलजृम्भितकारणकार्यबलम् ।
जितकाञ्चनकाम-प्रपञ्चहरं
प्रणमामि गदाधर-ब्रह्मपरम् ॥३॥

युगधर्मप्रवर्तक-गुप्तनरं
जनपावन-गाङ्ग्यतटावसथम् ।
शिशुसौम्यमगम्य-प्रणम्यवरं
प्रणमामि गदाधर-ब्रह्मपरम् ॥४॥
शिव-केशव-वासव-सङ्गयुतम्
अवतारगरिष्ठमरिष्टहृतम् ।
अघमोचन-दुष्कृतमुक्तिकरं
प्रणमामि गदाधर-ब्रह्मपरम् ॥५॥
करुणाघन-कर्मकठोर-पणं
गुणहीनमपापमशेषगुणम् ।
युगचक्रविवर्तक-तर्कहरं
प्रणमामि गदाधर-ब्रह्मपरम् ॥६॥
शुभबेलुडमन्दिरसन्निहितं
निजशिष्य-प्रशिष्य-विशेषतरम् ।
शिवमोक्षधनेश्वरमादिगुरुं
प्रणमामि गदाधर-ब्रह्मपरम् ॥७॥
सुगभीर-समाधिसमुद्रगतं
कृतभक्तिविकासन-विश्वहितम् ।
तव नाम शुभं भवतापहरं
प्रणमामि गदाधर-ब्रह्मपरम् ॥८॥

***

श्रीरामकृष्णसुप्रभातम्—१

श्रीराजमान मुखनिर्गतदिव्यभानो
घोराज्ञतान्धतमसोत्करचण्डभानो ।
स्वाराज्यसौख्यदनिजाङ्घ्रिजुषामजस्रं
श्रीरामकृष्णभगवन् तव सुप्रभातम् ॥१॥
संसारतापविवशाखिलमानवानां
कंसारिनामजपभेषजरत्नदायिन् ।

हिंसां मनोवचनकायगतां विधुन्वन्
श्रीरामकृष्णभगवन् तव सुप्रभातम् ॥२॥
कालीनिषेवणपरायण नैकशोक
पालीवशावशजनावनबद्धबुद्धे ।
नालीकनेत्र करुणामृतपूरितात्मन्
श्रीरामकृष्णभगवन् तव सुप्रभातम् ॥३॥
नानाजनाभिनुत वैभवलोकमातृ-
ध्यानाभिलीननिजमानसपुण्यमूर्ते ।
मानातिरिक्तमहिमान्वितमान्यकीर्ते
श्रीरामकृष्णभगवन् तव सुप्रभातम् ॥४॥
वेदान्ततत्त्वकथनैर्भवशोकभाजां
स्वेदापनोदननिदानविरक्तयोगिन् ।
मोदावहोक्तिमकरन्दरसप्रदायिन्
श्रीरामकृष्णभगवन् तव सुप्रभातम् ॥५॥
अक्षामकान्तिपरिवेषपरीतमूर्ते
शिक्षाविचक्षण विशिष्टगुणाम्बुराशे ।
वीक्षाविशेषितभवार्णव भव्यराशे
श्रीरामकृष्णभगवन् तव सुप्रभातम् ॥६॥
विश्वासभक्तियुतसंसृतितापभाजाम्
आश्वासदायकदयामृतवारिराशे ।
विश्वाभिनन्द्यगुणविश्रुतदिव्यनामन्
श्रीरामकृष्णभगवन् तव सुप्रभातम् ॥७॥
वीताशसर्वविषयेषु सदानितान्त-
पूतान्तरङ्गजनजाड्यविनाशकारिन् ।
स्फीतात्मबोध विविधागमतत्त्ववेदिन्
श्रीरामकृष्णभगवन् तव सुप्रभातम् ॥८॥
दिव्यप्रभावलयिताननपादभाजां
भव्यप्रदानपरमुक्तिपथप्रदायिन् ।

स्तव्यप्रकृष्टमहिमान्वितदिव्यमूर्ते
श्रीरामकृष्णभगवन् तव सुप्रभातम् ॥९॥
अत्यन्तनिर्मलमनस्कसमस्तलोकैः
स्तुत्यस्वभाव भवशोकविनाशहेतो ।
प्रत्यग्रभव्यपथदर्शक भक्तियोगिन्
श्रीरामकृष्णभगवन् तव सुप्रभातम् ॥१०॥
सन्तानितात्मसुखभारतमातृदिव्य-
सन्तानसत्तम सनातनधर्मचारिन् ।
सन्तापनाशन सदा शरणागतानां
श्रीरामकृष्णभगवन् तव सुप्रभातम् ॥११॥
वैराग्यशान्तिमणिमन्दिरदिव्यदीप्ति-
पूराभिदीप्तमुख सत्त्वगुणैकसिन्धो ।
सारामलाशय सदाशयगीतकीर्ते
श्रीरामकृष्णभगवन् तव सुप्रभातम् ॥१२॥
यः प्रातरेतदतिपावनसुप्रभातं
श्रीरामकृष्णशुभनामनिसुप्रणीतम् ।
भक्त्या पठेत् स तु भवार्णवपारमेत्य
मुक्त्यास्वदं मुररिपोः पदमाशु यायात् ॥१३॥

***

श्रीरामकृष्णसुप्रभातम्—२

धर्मस्य हानिमभितः परिदृश्य शीघ्रं
कामारपुष्कर इति प्रथिते समृद्धे ।
ग्रामे सुविप्रसदने ह्यभिजात देव
श्रीरामकृष्णभगवन् तव सुप्रभातम् ॥१॥
बाल्ये समाध्यनुभवः सितपक्षिपङ्क्ति
सन्दृश्य मेघपटले समवापि येन ।
ईशैक्यवेदनसुखं शिवरात्रिकाले
श्रीरामकृष्णभगवन् तव सुप्रभातम् ॥२॥

नानाविधानयि सनातनधर्ममार्गान्
क्रैस्तादिचित्रनियमान् परदेशधर्मान् ।
आस्थाय चैक्यमनयोरनुभूतवांस्त्वं
श्रीरामकृष्णभगवन् तव सुप्रभातम् ॥३॥
हे कालिकापदसरोरुहकृष्णभृङ्ग
मातुः समस्तजगतामपि सारदायाः ।
ऐक्यं ह्यदर्शि तरसा परमं त्वयैव
श्रीरामकृष्णभगवन् तव सुप्रभातम् ॥४॥
राखालतारकहरींश्च नरेन्द्रनाथम्
अन्यान् विशुद्धमनसः शशिभूषणादीन् ।
सर्वज्ञ आत्मवयुनं त्वमिहानुशास्सि
श्रीरामकृष्णभगवन् तव सुप्रभातम् ॥५॥
नित्यं समाधिजसुखं निजबोधरूपम्
आस्वादयन् तव पदे शरणागतांश्च ।
आनन्दयन् प्रशमयन्नुपतिष्ठसे त्वं
श्रीरामकृष्णभगवन् तव सुप्रभातम् ॥६॥
स्वीकृत्य पापमखिलं शरणागतैर्यद्
आजीवनं बहुकृतं दयया स्वदेहे ।
तज्जातखेदनिवहं सहसे स्म नाथ
श्रीरामकृष्णभगवन् तव सुप्रभातम् ॥७॥
प्रातः प्रणामकरणं तव पादपद्मे
संसारदुःखहरणं सुलभं करोति ।
मत्वेति भक्तिभरिताः प्रतिपालयन्ति
श्रीरामकृष्णभगवन् तव सुप्रभातम् ॥८॥
गातुं स्तुतीस्तव जना अमृतायमानाः
सम्प्राप्य दर्शनमिदं तव पादयोश्च ।
धन्या नरेश भवितुं मिलिताः समीपं
श्रीरामकृष्णभगवन् तव सुप्रभातम् ॥९॥

सन्दाय दर्शनसुखं शरणागतेभ्यो
मोहान्धकारमखिलं त्वमपाकुरुष्व ।
ज्ञानार्क भक्तिजलधे सकलार्तिहन्तः
श्रीरामकृष्णभगवन् तव सुप्रभातम् ॥१०॥
आहैतुकीति करुणा किल ते स्वभावो
दुष्टाः कठोरहृदया अपि ते भजन्ते ।
त्वामेव सर्वजगतां जननि प्रपात्रि
श्रीसारदेश्वरि रमे तव सुप्रभातम् ॥११॥
सुप्तांस्तु भारतजनान् स्ववचःप्रहारै-
रुद्बोधयन् विवशयन् निजधर्ममार्गे ।
प्रोत्साहयन् परमतां प्रकटीकरोषि
वीरेशदत्तमहिमन् तव सुप्रभातम् ॥१२॥
प्रातरुत्थाय यो देवं रामकृष्णं स्मरन् स्मरन् ।
स्तोत्रमेतत् पठेद् भक्त्या सोऽमृतत्वाय कल्पते ॥१३॥

***

श्रीरामकृष्णप्रपत्तिः

आकारशून्यं त्रिगुणैर्विहीनं
ओङ्कारवेद्यं परमं पवित्रम् ।
प्रपञ्चकारं परिपूर्णरूपं
श्रीरामकृष्णं शरणं प्रपद्ये ॥१॥
तिलेषु तैलं दधनीव सर्पि-
र्व्याप्तं च विश्वे परमं निधानम् ।
सर्वस्य संस्थं हृदयप्रदेशे
श्रीरामकृष्णं शरणं प्रपद्ये ॥२॥
धर्मस्य वृद्ध्यै सुजनस्य मुक्त्यै
दुष्टप्रजायाः परिवर्तनाय ।
विश्वेऽवतीर्णं समतीतमायं
श्रीरामकृष्णं शरणं प्रपद्ये ॥३॥

दीप्ताननं तं परिपूर्णबोधं
सदा समाधौ परिमग्नचित्तम् ।
कृपाभिपूर्णं प्रति तप्तलोकं
श्रीरामकृष्णं शरणं प्रपद्ये ॥४॥
मृदं सुवर्णं प्रतिपद्य तुल्यं
नारीषु मातुस्समवाप्य भावम् ।
तद्बोधयन्तं च हिताय नृणां
श्रीरामकृष्णं शरणं प्रपद्ये ॥५॥
गङ्गासु सिक्तं मलिनाम्बु शुद्धं
रसेन्द्रसक्तेरय एव रुक्मम् ।
पापिष्ठमेवं विपुनाति यस्तं
श्रीरामकृष्णं शरणं प्रपद्ये ॥६॥
पाण्डित्यपूर्णाः कठिनैर्वचोभि-
र्यद्बोधयन्ते श्रुतिसारभूतम् ।
येनैव तत्त्वं सुगमायितं तं
श्रीरामकृष्णं शरणं प्रपद्ये ॥७॥
दुर्ज्ञेयरूपः शिशुवद्विभाति
सर्वज्ञमूर्तिस्त्वनधीतशास्त्रः ।
देवाधिदेवोऽपि नरत्वमाप्तं
श्रीरामकृष्णं शरणं प्रपद्ये ॥८॥

***

श्रीरामकृष्णमङ्गलाशासनम्

मङ्गलं देशिकेन्द्राय यमिनां चक्रवर्तिने ।
पराशक्तिस्वरूपिण्यै देव्यै मात्रे च मङ्गलम् ॥१॥
सत्यसन्धस्य भक्तस्य क्षुदिरामस्य सूनवे ।
गदाधराय मेदिन्यामवतीर्णाय मङ्गलम् ॥२॥
गदाधरसुनाम्ने च भक्त्यावेष्टितचेतसे ।
अनादृतान्यविद्याय मङ्गलं ब्रह्मचारिणे ॥३॥

भवतारणदक्षायाः सन्निधौ दक्षिणेश्वरे ।
अपूर्वकालिकापूजानिरतायास्तु मङ्गलम् ॥४॥
मथुरानाथविश्वाससेवानिर्वृतचेतसे ।
तपश्चरणशीलाय योगीशायास्तु मङ्गलम् ॥५॥
साधकव्याजसन्दिष्टसर्वाम्नायसुवर्त्मने ।
सर्वतन्त्रस्वतन्त्राय नित्यसिद्धाय मङ्गलम् ॥६॥
तपसि ब्रह्मचर्ये च या स्वस्य सहधर्मिणी ।
तस्याः श्रीसारदादेव्या भर्त्रे भवतु मङ्गलम् ॥७॥
तोतापुरीयतिप्राप्तचरमाश्रमहेतुके ।
समाधौ निर्विकल्पाख्ये सुदीर्घस्थाय मङ्गलम् ॥८॥
स्थिताय मातुरादेशाज्जगदुद्धारकारणात् ।
पूर्णाहन्तास्थितौ भावमुखे भवतु मङ्गलम् ॥९॥
पश्यते मातरं स्त्रीषु मृत्पिण्डं काञ्चनं तथा ।
सर्वभूतेषु च ब्रह्म मायातीताय मङ्गलम् ॥१०॥
सदारोऽपि विरक्तानां यतीनां पुरतस्तु यः ।
सदाशिवस्वरूपाय तस्मै भवतु मङ्गलम् ॥११॥
ब्रह्मानन्दादिसच्छिष्यगणपूज्यपदाय ते ।
तेषूद्दीप्तात्मबोधाय परहंसाय मङ्गलम् ॥१२॥
गजद्विदान्तसिंहेन विवेकानन्दरूपिणा ।
अपास्तनिद्रा भूर्येण कारितास्मै च मङ्गलम् ॥१३॥
संसारसागरोत्तारसेतुभूताङ्घ्रिरेणवे ।
गुरवे सर्वलोकानां रामकृष्णाय मङ्गलम् ॥१४॥
ॐ स्थापकाय च धर्मस्य सर्वधर्मस्वरूपिणे ।
अवतारवरिष्ठाय रामकृष्णाय मङ्गलम् ॥१५॥
मङ्गलं गुरुदेवाय देव्यै मात्रे च मङ्गलम् ।
मङ्गलं भक्तवृन्देभ्यः सर्वलोकाय मङ्गलम् ॥१६॥

***

श्रीरामकृष्णप्रणतिः

ब्रह्मानन्दं शिवं शान्तं प्रेमरूपं निरञ्जनम् ।
योगीशमद्भुतं नित्यमखण्डाद्वैतलक्षणम् ॥
विज्ञानं त्रिगुणातीतं तुरीयाभेदसंज्ञितम् ।
सुबोधं सारदं चैव विवेकशशिभूषणम् ॥
समन्वयमहाचार्यं युगधर्मस्वरूपिणम् ।
सर्वदेवस्वरूपं श्रीरामकृष्णं नमाम्यहम् ॥

***

सपार्षद-श्रीरामकृष्णस्तोत्रम्

सर्वधर्मस्थापकस्त्वं सर्वधर्मस्वरूपकः ।
आचार्याणां महाचार्यो रामकृष्णाय ते नमः ॥१॥
यथाग्नेर्दाहिकाशक्ती रामकृष्णे स्थिता हि या ।
सर्वविद्यास्वरूपां तां सारदां प्रणमाम्यहम् ॥२॥
परतत्त्वे सदा लीनो रामकृष्णसमाज्ञया ।
यो धर्मस्थापनरतो वीरेशं तं नमाम्यहम् ॥३॥
कालिन्दीफुल्लकमले माधवेन क्रीडारत ।
ब्रह्मानन्द नमस्तुभ्यं सद्गुरो लोकनायक ॥४॥
योगानन्दः प्रेमानन्दश्चान्ये वै ये च पार्षदाः ।
रामकृष्णगतप्राणाः सर्वांस्तान् प्रणमाम्यहम् ॥५॥

***

श्रीसारदादेवीस्तोत्राणि

श्रीसारदादेवीध्यानम्

ध्यायेच्चित्तसरोजस्थां सुखासीनां कृपामयीम् ।
प्रसन्नवदनां देवीं द्विभुजां स्थिरलोचनाम् ॥१॥
आलुलायितकेशार्धवक्षःस्थलविमण्डिताम् ।
श्वेतवस्त्रावृताधाङ्गीं हेमालङ्कारभूषिताम् ॥२॥
स्वक्रोडन्यस्तहस्तां च ज्ञानभक्तिप्रदायिनीम् ।
शुभ्रां ज्योतिर्मयीं जीवपापसन्तापहारिणीम् ॥३॥
रामकृष्णगतप्राणां तन्नामश्रवणप्रियाम् ।
तद्भावरञ्जिताकारां जगन्मातृस्वरूपिणीम् ॥४॥
जानकीराधिकारूपधारिणीं सर्वमङ्गलाम् ।
चिन्मयीं वरदां नित्यां सारदां मोक्षदायिनीम् ॥५॥

***

श्रीसारदादेवीप्रणामः

यथाग्नेर्दाहिकाशक्ती रामकृष्णे स्थिता हि या ।
सर्वविद्यास्वरूपां तां सारदां प्रणमाम्यहम् ॥

***

श्रीसारदादेवीस्तोत्रम्

प्रकृतिं परमामभयां वरदां
नररूपधरां जनतापहराम् ।
शरणागतसेवकतोषकरीं
प्रणमामि परां जननीं जगताम् ॥१॥
गुणहीनसुतानपराधयुतान्
कृपयाद्य समुद्धर मोहगतान् ।
तरणीं भवसागरपारकरीं
प्रणमामि परां जननीं जगताम् ॥२॥
विषयं कुसुमं परिहृत्य सदा
चरणाम्बुरुहामृतशान्तिसुधाम् ।

पिब भृङ्गमनो भवरोगहरां
प्रणमामि परां जननी जगताम् ॥३॥
कृपां कुरु महादेवि सुतेषु प्रणतेषु च ।
चरणाश्रयदानेन कृपामयि नमोऽस्तु ते ॥४॥
लज्जापटावृते नित्यं सारदे ज्ञानदायिके ।
पापेभ्यो नः सदा रक्ष कृपामयि नमोऽस्तु ते ॥५॥
रामकृष्णगतप्राणां तन्नामश्रवणप्रियाम् ।
तद्भावरञ्जिताकारां प्रणमामि मुहुर्मुहुः ॥६॥
पवित्रं चरितं यस्याः पवित्रं जीवनं तथा ।
पवित्रतास्वरूपिण्यै तस्यै कुर्मो नमो नमः ॥७॥
देवीं प्रसन्नां प्रणतार्तिहन्त्रीं
योगीन्द्रपूज्यां युगधर्मपात्रीम् ।
तां सारदां भक्तिविज्ञानदात्रीं
दयास्वरूपां प्रणमामि नित्यम् ॥८॥
स्नेहेन बध्नासि मनोऽस्मदीयं
दोषानशेषान् सगुणीकरोषि ।
अहेतुना नो दयसे सदोषान्
स्वाङ्के गृहीत्वा यदिदं विचित्रम् ॥९॥
प्रसीद मातर्विनयेन याचे
नित्यं भव स्नेहवती सुतेषु ।
प्रेमैकबिन्दुं चिरदग्धचित्ते
विषिञ्च चित्तं कुरु नः सुशान्तम् ॥१०॥
जननीं सारदां देवीं रामकृष्णं जगद्गुरुम् ।
पादपद्मे तयोः श्रित्वा प्रणमामि मुहुर्मुहुः ॥११॥

***

श्रीसारदादेवीसुप्रभातम्—१

श्रीरामकृष्णसहधर्मिणि भव्यदिव्य-
श्रीराजमानवदने विहितावदाने ।
वैराग्यशालिनि विशिष्टगुणाम्बुराशे
श्रीसारदे सुचरिते तव सुप्रभातम् ॥१॥

कल्याणकारिणि नृणां शरणागतानां
शल्यापनोदनपरे विगताभिलाषे ।
तौल्यातिरिक्तविभवे महितानुभावे
श्रीसारदे सुचरिते तव सुप्रभातम् ॥२॥

अत्यन्तशान्तमनसां निजसेवकानाम्
अत्यन्तरोल्लसितमङ्गलदिव्यरूपे ।
स्तुत्यर्हशीलगुणशालिनि शान्तशीले
श्रीसारदे सुचरिते तव सुप्रभातम् ॥३॥

आनन्ददायिनि नृणां निजवाग्विलासै-
र्ध्यानिस्थशिष्यगणमानसराजमाने ।
आनम्रभक्तजनसेवितपादयुग्मे
श्रीसारदे सुचरिते तव सुप्रभातम् ॥४॥

हृद्यानवद्यमृदुशीलगुणे समस्तै-
र्हृद्यादरेण सततं परिचिन्त्यमाने ।
विद्याविशेषविशदीकृतचित्तपद्मे
श्रीसारदे सुचरिते तव सुप्रभातम् ॥५॥

दिव्यप्रभावलियते सकलैरजस्रं
स्तव्यप्रभावलयिते निखिलाभिवन्द्ये ।
भव्यप्रकर्षविलसन्महनीयरूपे
श्रीसारदे सुचरिते तव सुप्रभातम् ॥६॥

आशावकाशततदिव्ययशोविताने
क्लेशावशाखिलजनावनजागरूके ।

श्रीशादिसर्वदिविषद्भजनैकलोले
श्रीसारदे सुचरिते तव सुप्रभातम् ॥७॥
सन्तापनाशिनि भवामयपीडितानां
सन्तानपादपसमे चरणानतानाम् ।
सन्तानितात्मविभवे विनयाभिरामे
श्रीसारदे सुचरिते तव सुप्रभातम् ॥८॥
वीक्षाविधूतकलुषे सविधागतानां
दाक्षायणीपदसरोजनिलीनचित्ते ।
अक्षामकान्तिपरिवेषलसन्मुखाब्जे
श्रीसारदे सुचरिते तव सुप्रभातम् ॥९॥
विश्वाभिनन्द्यसुगुणे सकलेशभक्ति-
विश्वासपूर्णहृदये वनितावरेण्ये ।
आश्वासदायिनि सदा भवरोगभाजां
श्रीसारदे सुचरिते तव सुप्रभातम् ॥१०॥
योगेश्वरेश्वरमहागुरुधर्मपत्नि
सर्वार्थदे सकलशक्त्यवताररूपे ।
आर्तप्रपन्नपरिपालनबद्धदीक्षे
श्रीसारदे सुचरिते तव सुप्रभातम् ॥११॥

***

श्रीसारदादेवीसुप्रभातम्—२

मातः समस्तजगतां परमस्य पुंसः
शक्तिस्वरूपिणि शिवे करुणार्द्रचित्ते ।
लोकस्य शोकशमनाय कृतावतारे
श्रीसारदेऽस्तु शिवदे तव सुप्रभातम् ॥१॥
बाल्ये भवस्य तमसः परिहारयित्रे
लीलामनुष्यवपुषेऽथ गदाधराय ।
दत्ते तदर्पितधियाप्तसमस्तविद्ये
श्रीसारदेऽस्तु शिवदे तव सुप्रभातम् ॥२॥

बाल्यात्परे वयसि भर्तरि सम्प्रवृत्ताम्
उन्मत्त इत्यनुचितामवधूय वार्ताम् ।
तद्दर्शनक्रमितदुर्गमदूरमार्गे
श्रीरामकृष्णदयिते तव सुप्रभातम् ॥३॥
संन्यासिनं पतिमवेक्ष्य च नोद्विजाने
सेवार्पितत्रिकरणे परिशुद्धचित्ते ।
तत्साधनाचरमसीम्नि समर्पिताङ्गे
श्रीरामकृष्णपरमेश्वरि सुप्रभातम् ॥४॥
यामेव चात्मजननीं भवतारिणीं च
सेवापरां तु बुबुधे गुरुरस्तभेदः ।
तस्याः समस्तजगतोऽस्य शरण्यमूर्तेः
श्रीरामकृष्णदयिते तव सुप्रभातम् ॥५॥
आवृण्वतीं परमिकां प्रकृतिं स्वकीयां
संसारिणीव बहुदुःखजले भवाब्धौ ।
सर्वंसहे श्रितजनोद्धरणैकदीक्षे
श्रीरामकृष्णदयिते तव सुप्रभातम् ॥६॥
गेहस्य मार्जनविधौ मम कर्मशान्तिं
नायात्यसङ्ख्यकरणैः क्रियमाणमेवम् ।
आकस्मिकोक्तिविवृताखिलशक्तिरूपे
श्रीरामकृष्णदयिते तव सुप्रभातम् ॥७॥
श्रीरामकृष्णदयिते तदधीनसत्त्वे
तद्भक्तवृन्दपरिपालिनि मुक्तिदात्रि ।
तद्भावरक्तहृदये तदभिन्नतत्त्वे
मातः समस्तजगतां तव सुप्रभातम् ॥८॥

***

श्रीसारदादेव्यष्टकम्

देवि प्रसन्नवदने करुणावतारे
दिव्योज्ज्वलद्युतिमयि त्रिजगज्जनित्रि ।
कल्याणकारिणि वराभयदानशीले
मातर्विराज सततं मम हृत्सरोजे ॥१॥
ब्रह्मस्वरूपिणि शिवे शुभदे शरण्ये
चैतन्यदायिनि भवाम्बुधिपारनेत्रि ।
शान्तिप्रदे सुविमले सकलार्तिनाशे
मातर्विराज सततं मम हृत्सरोजे ॥२॥
वेदान्तवेद्यपरतत्त्वसुमूर्तरूपा
आद्यन्तमध्यरहिता श्रुतिसारभूता ।
एकाऽद्वया हि परमा प्रकृतिस्त्वमाद्या
मातर्विराज सततं मम हृत्सरोजे ॥३॥
मायामनुष्यतनुधारिणि विश्ववन्द्ये
लीलाविलासकरि चिन्मयदिव्यरूपे ।
सृष्टिस्थितिप्रलयकारिणि विश्वशक्ते
मातर्विराज सततं मम हृत्सरोजे ॥४॥
वैराग्यभक्तिवरदा भवतारिणी त्वं
माङ्गल्यशान्तिनिलया ह्यमृतस्वरूपा ।
विद्या परा त्रिजगदुद्धरणैकसेतु-
र्मातर्विराज सततं मम हृत्सरोजे ॥५॥
विश्वात्मिके परमपावनसौम्यरूपे
मोहान्धकारपरिहारिणि मोक्षदात्रि ।
सर्वाश्रये भयहरे जगदेकगम्ये
मातर्विराज सततं मम हृत्सरोजे ॥६॥
श्रीरामकृष्णमयजीवित ईश्वरी त्वं
तद्भावविग्रहमयी तदभिन्नसत्ता ।
श्रीरामकृष्णमयपावकदीप्तिशक्ते
मातर्विराज सततं मम हृत्सरोजे ॥७॥

सच्चित्सुखानुभवदायिनि बोधरूपे
विश्वेश्वरि प्रणतपालिनि सिद्धिदात्रि ।
श्रीसारदे भुवनमङ्गलदिव्यमूर्ते
मातर्विराज सततं मम हृत्सरोजे ॥८॥

***

श्रीसारदादेवीस्तोत्रामृतम्

ब्रह्मयुक्तनित्यशक्तिसृष्टजीवपालिकां
रामकृष्णशक्तिशुद्धबुद्धिमुक्तिदायिकाम् ।
रामकृष्णभावसिक्तरामकृष्णवल्लभां
तां नमामि सारदां हि विश्वमातृरूपिणीम् ॥१॥
ब्रह्मशक्तिदिव्यरूपसर्वसृष्टिभासिकां
ज्ञानभक्तिपूर्णमूर्तिनित्यसत्यसुस्थिराम् ।
प्रेमभक्तिरागशुद्धिनित्यमोक्षदायिनीं
तां नमामि सारदां हि विश्वमातृरूपिणीम् ॥२॥
रामकृष्णपूजितां सुपावनीं भवेश्वरीं
दृष्टिपातशुद्धिदानदक्षजन्मघातिनीम् ।
रामकृष्णशुद्धनित्यभक्तिदानतत्परां
तां नमामि सारदां हि विश्वमातृरूपिणीम् ॥३॥
रामकृष्णनाममुग्धतत्सुधाकथाप्रियां
रामकृष्णलुप्तचित्तसर्वकामवर्जिताम् ।
विश्वलोकपूज्यनित्यसिद्धसाधिकासतीं
तां नमामि सारदां हि विश्वमातृरूपिणीम् ॥४॥
भर्तृदेवरामकृष्णशेषकर्मसाधिकां
दीर्घकालपुण्ययोगपूर्णसिद्धिकारिकाम् ।
प्राप्तसर्वयोगसिद्धिपूर्णकाममातरं
तां नमामि सारदां हि विश्वमातृरूपिणीम् ॥५॥
गेहिकृत्यगेहकर्मनीतिधर्मदेशिकां
त्यागिसेव्यदिव्यधर्मकायचित्तमण्डिताम् ।

कोटिभक्तकण्ठगीतमातृनामवन्दितां
तां नमामि सारदां हि विश्वमातृरूपिणीम् ॥६॥
ज्ञानभक्तिमिश्रपूर्णशौर्यवीर्यदायिकां
क्लैब्यमोहदीनहीनभीतिभावनाशिकाम् ।
दृष्टविश्वरामकृष्णभावपूतनन्दितां
तां नमामि सारदां हि विश्वमातृरूपिणीम् ॥७॥
सर्वसम्प्रदायहीनसत्यधर्मदेशिनीं
देशकालजातिमध्यतुच्छभावनाशिनीम् ।
देशपूज्यकालपूज्यकार्यहेतुवर्जितां
तां नमामि सारदां हि विश्वमातृरूपिणीम् ॥८॥
आद्यशक्तिदिव्यमूर्तिहृद्यशान्तिदायिनीं
वेदमूर्तिसत्यमूर्तिकल्पवल्लिरूपिणीम् ।
भक्तसूनुचित्तनित्यवित्तवृद्धिकारिणीं
तां नमामि सारदां हि विश्वमातृरूपिणीम् ॥९॥
सर्वभीतिनाशिनीं च पापपुण्यकारिणीं
सूपदेशदायिनीं च शोकमोहतारिणीम् ।
रामकृष्णभावयुक्तसर्वसिद्धिदायिनीं
तां नमामि सारदां हि विश्वमातृरूपिणीम् ॥१०॥

***

श्रीविवेकानन्दस्तोत्राणि

श्रीविवेकानन्दध्यानम्

विश्वाचार्यं जगद्वन्द्यं विवेकानन्दरूपिणम् ।
वीरेश्वरात्समुत्पन्नं सप्तर्षिमण्डलागतम् ॥
ज्ञानभक्तिप्रदातारं पद्माक्षगौरविग्रहम् ।
ध्यायेद्देवं ज्योतिःपुञ्जं लोककल्याणकारिणम् ॥

***

श्रीविवेकानन्दप्रणामः

परतत्त्वे सदा लीनो रामकृष्णसमाज्ञया ।
यो धर्मस्थापनरतो वीरेशं तं नमाम्यहम् ॥

***

विवेकानन्दपञ्चकम्

अनित्यदृश्येषु विविच्य नित्यं
तस्मिन् समाधत्त इह स्म लीलया ।
विवेकवैराग्यविशुद्धचित्तं
योऽसौ विवेकी तमहं नमामि ॥१॥
विवेकजानन्दनिमग्नचित्तं
विवेकदानैकविनोदशीलम् ।
विवेकभासा कमनीयकान्तिं
विवेकिनं तं सततं नमामि ॥२॥
ऋतं च विज्ञानमधिश्रयद्य-
न्निरन्तरं चादिमध्यान्तहीनम् ।
सुखं सुरूपं प्रकरोति यस्य
आनन्दमूर्तिं तमहं नमामि ॥३॥
सूर्यो यथान्धं हि तमो निहन्ति
विष्णुर्यथा दुष्टजनांश्छिनत्ति ।
तथैव यस्याखिलनेत्रलोभं
रूपं त्रितापं विमुखीकरोति ॥४॥

तं देशिकेन्द्रं परमं पवित्रं
विश्वस्य पालं मधुरं यतीन्द्रम्।
हिताय नृणां नरमूर्तिमन्तं
विवेक आनन्दमहं नमामि ॥५॥
नमः श्रीयतिराजाय विवेकानन्दसूरये।
सच्चित्सुखस्वरूपाय स्वामिने तापहारिणे ॥६॥

***

श्रीविवेकानन्दसुप्रभातम्

हे प्रेष्ठ नाथ सुमहन् युगशक्तिधारिन्
हे नित्यमुक्त सततं हि महावरेण्य।
आनन्दरूप भुवि वै जनमुग्धकारिन्
विश्वस्य वीर सुयते तव सुप्रभातम् ॥१॥
हे बुद्ध शाश्वतविवेक सुबोधदायिन्
सत्याश्रयिन् जनगणान् पथदानकारिन्।
हे मुक्त सर्वजनमुक्तिविधानकारिन्
विश्वस्य वीर सुयते तव सुप्रभातम् ॥२॥
भक्तिश्च ते सुविदिता भुवि रामकृष्णे
श्रीरामकृष्णहृदि हे सुकृताधिकार।
हे मातृभक्त पृथिवीविजयी ध्रुवं त्वं
विश्वस्य वीर सुयते तव सुप्रभातम् ॥३॥
हे शुद्ध पूत भुवने शुचिताविधाता
रिक्तार्तपीडितजनेश्वरबुद्धिकारिन्।
नित्यं कृपागलितहृत् परदुःखहारिन्
विश्वस्य वीर सुयते तव सुप्रभातम् ॥४॥
मायाविहीन भुवि नो नय मोहपारे
त्वं जाग्रतो हि सततं जनमुक्तिधारिन्।
जागर्ति मानवगणस्तव सुप्रभावै-
र्विश्वस्य वीर सुयते तव सुप्रभातम् ॥५॥

संसारपार कमलाक्ष सुकर्मकारिन्
नित्यं विवेकमतिशक्तिविधानदक्ष ।
हे बुद्ध जागरय नः सुमतिं विवेकं
विश्वस्य वीर सुयते तव सुप्रभातम् ॥६॥

सन्तप्तमानवगणेषु महाकृपा ते
प्रज्ञावतामपि हि ते महनीयप्रज्ञा ।
सूर्यप्रभस्त्वमपि ते कमनीयकान्ति-
र्विश्वस्य वीर सुयते तव सुप्रभातम् ॥७॥

आनन्दसुन्दर हि शान्त विवेकमूर्ते
धीराप्यनुक्तमगतिस्तव कर्मशक्तिः ।
वीरेश्वरोऽसि शिव हे च शिवत्वदायिन्
विश्वस्य वीर सुयते तव सुप्रभातम् ॥८॥

न्यासिन् नरोत्तम पवित्र नरेन्द्रनाथ
श्रीरामकृष्णकरुणा हि सदा त्वयाप्ता ।
सन्न्यास्यसि त्वमपि ते परदुःखसेवा
विश्वस्य वीर सुयते तव सुप्रभातम् ॥९॥

हे सत्य हे सकलमोहतमोविनाशिन्
तेजोऽसि देहि सततं ह्यमितं सुतेजः ।
हे श्रेष्ठ जागरय नः शमभीर्निनादै-
र्विश्वस्य वीर सुयते तव सुप्रभातम् ॥१०॥

हे देशप्रेमिक च जातसुविश्वप्रेम
ब्रह्मज्ञ हे विदितमर्मसमग्रविश्व ।
ब्रह्मन् महापुरुष जागृहि देव नित्यं
विश्वस्य वीर सुयते तव सुप्रभातम् ॥११॥

निःस्वार्थ हे कमलनेत्र महासमुद्र
स्निग्धं विशालहृदयं हि तवेति जाने ।
योग्यान् नरान् हि कुरु नः सकलांश्च पृथ्व्या
विश्वस्य वीर सुयते तव सुप्रभातम् ॥१२॥

श्रीरामकृष्णचरिते नितरां हि मुग्धः
श्रीरामकृष्णमनने स्थितधीः सदा त्वम्।
श्रीरामकृष्णभजनेषु मुदस्त्वयाप्ताः
श्रीरामकृष्णमय हे तव सुप्रभातम् ॥१३॥
रामकृष्णपदाम्भोजे भृङ्गायते हि यः सदा।
वन्देऽहं स्वामिनं भक्त्या विवेकानन्दसंज्ञितम् ॥

***

श्रीविवेकानन्दप्रभातप्राञ्जलिः

समाधिस्थः शिवः स्वलोके निर्भरं
जनानां क्रन्दनाद् भवाग्नौ भीषणे।
प्रदग्धानां प्रबोधितस्त्वं ह्यागतः
विवेकानन्द ते प्रभाते प्राञ्जलिः ॥१॥
नरेन्द्रः शैशवे नरेन्द्रो यौवने
नरेन्द्रः क्रीडने नरेन्द्रः शिक्षणे।
नरेन्द्रः पालने नरेन्द्रो ह्यर्पणे
विवेकानन्द ते प्रभाते प्राञ्जलिः ॥२॥
हरीन्द्रश्चेष्टितैः कलाज्ञो गायनैः
परिज्ञानैर्बुधो महर्षिर्दर्शनैः।
यतीन्द्रोऽसक्तिभिर्भवान् यन्नास्ति किं
विवेकानन्द ते प्रभाते प्राञ्जलिः ॥३॥
मुमुक्षा दर्शिताभिहंसं धावनैः
विनैकां पादुकां नितान्तोन्मत्तवत्।
समानां देहि मे मुमुक्षां मद्गुरो
विवेकानन्द ते प्रभाते प्राञ्जलिः ॥४॥
गुरोरङ्घ्र्युत्पले स्वमात्मानं ददौ
परीक्ष्यानन्तरं बहुप्रश्नैर्भृशम्।
विशुद्धैः सेवनैर्भवांस्तं पिप्रिये
विवेकानन्द ते प्रभाते प्राञ्जलिः ॥५॥

सुगन्धः श्रीगुरुर्भवान् वायुः खलु
स तूर्यं त्वं च भो महोच्चैर्घोषकः ।
गुरुः सूर्यस्तु हे किलादर्शो भवान्
विवेकानन्द ते प्रभाते प्राञ्जलिः ॥६॥

स्वधर्मश्रेष्ठतां सगर्वं शंसतां
जनानां धृष्टता त्वयैवाभाज्यहो ।
स्वधर्मो वैदिको ह्यनर्घो दर्शितः
विवेकानन्द ते प्रभाते प्राञ्जलिः ॥७॥

स्फुलिङ्गान् स्फोटयन् सुदीप्ताग्निर्यथा
तथैव त्वं यते विकीर्यामानुषीम् ।
परिज्ञानप्रभामचारीर्भारते
विवेकानन्द ते प्रभाते प्राञ्जलिः ॥८॥

अहो आकर्षणं तवास्यस्यातुलं
तवाहो पौरुषं विरागो मुग्धता ।
प्रगाढं प्रेम च ह्यगाधं वेदनं
विवेकानन्द ते प्रभाते प्राञ्जलिः ॥९॥

विमोक्षं स्वात्मनश्चतुर्योगाध्वभिः
पृथग्वा संहतैर्हितं लोकस्य च ।
तवाज्ञा साधयेदिति प्रीत्या नरः
विवेकानन्द ते प्रभाते प्राञ्जलिः ॥१०॥

यतेऽनूरुस्तव प्रणामं दास्यति
प्रफुल्लं षट्पदैः प्रसूनं प्रावृतम् ।
तवार्थं कोकिलो मनोज्ञं कूजति
विवेकानन्द ते प्रभाते प्राञ्जलिः ॥११॥

उषःकाले पदे नमस्कृत्याशिषा
लभेरन् धन्यतामिति श्रद्धालवः ।
समेताः सम्मुखे ददेथा दर्शनं
विवेकानन्द ते प्रभाते प्राञ्जलिः ॥१२॥

हिमाद्रेराश्रमे जयन्त्यां निर्मितः
भुजङ्गस्त्रग्विणीति वृत्ते नूतने ।
स्तवोऽयं यः पठेत् सभक्त्या तं नरः
स शक्तिं पौरुषं विरागं चार्जति ॥१३॥

***

श्रीविवेकानन्दगीतिस्तोत्रम्

मूर्तमहेश्वरमुज्ज्वलभास्करमिष्टममरनरवन्द्यम् ।
वन्दे वेदतनुमुज्झितगर्हितकाञ्चनकामिनीबन्धम् ॥१॥
कोटिभानुकरदीप्तसिंहमहोकटितटकौपीनवन्तम् ।
अभीरभीहुङ्कारनादितदिङ्मुखप्रचण्डताण्डवनृत्यम् ॥२॥
भुक्तिमुक्तिकृपाकटाक्षप्रेक्षणमघदलविदलनदक्षम् ।
बालचन्द्रधरमिन्दुवन्द्यमिह नौमि गुरुविवेकानन्दम् ॥३॥

***

वेदान्तस्तोत्राणि

परब्रह्मणः प्रातःस्मरणस्तोत्रम्

प्रातः स्मरामि हृदि संस्फुरदात्मतत्त्वं
सच्चित्सुखं परमहंसगतिं तुरीयम्।
यत्स्वप्नजागरसुषुप्तमवैति नित्यं
तद्ब्रह्म निष्कलमहं न च भूतसङ्घः ॥१॥
प्रातर्भजामि मनसा वचसामगम्यं
वाचो विभान्ति निखिला यदनुग्रहेण।
यन्नेतिनेतिवचनैर्निगमा अवोचु-
स्तं देवदेवमजमच्युतमाहुरग्र्यम् ॥२॥
प्रातर्नमामि तमसः परमर्कवर्णं
पूर्णं सनातनपदं पुरुषोत्तमाख्यम्।
यस्मिन्निदं जगदशेषमशेषमूर्तौ
रज्ज्वां भुजङ्गम इव प्रतिभासितं वै ॥३॥
श्लोकत्रयमिदं पुण्यं लोकत्रयविभूषणम्।
प्रातःकाले पठेद् यस्तु स गच्छेत् परमं पदम्॥४॥

***

परब्रह्मस्तोत्रम्

नमस्ते सते सर्वलोकाश्रयाय
नमस्ते चिते विश्वरूपात्मकाय।
नमोऽद्वैततत्त्वाय मुक्तिप्रदाय
नमो ब्रह्मणे व्यापिने निर्गुणाय ॥१॥
त्वमेकं शरण्यं त्वमेकं वरेण्यं
त्वमेकं जगत्कारणं विश्वरूपम्।
त्वमेकं जगत्कर्तृपातृप्रहर्तृ
त्वमेकं परं निष्कलं निर्विकल्पम् ॥२॥
भयानां भयं भीषणं भीषणानां
गतिः प्राणिनां पावनं पावनानाम्।

महोच्चैःपदानां नियन्तृ त्वमेकं
परेषां परं रक्षकं रक्षकाणाम् ॥३॥
परेश प्रभो सर्वरूपाविनाशि-
न्ननिर्देश्य सर्वेन्द्रियागम्य सत्य।
अचिन्त्याक्षर व्यापकाव्यक्ततत्त्व
जगद्भासकाधीश पायादपायात् ॥४॥
तदेकं स्मरामस्तदेकं भजाम-
स्तदेकं जगत्साक्षिरूपं नमामः।
सदेकं निधानं निरालम्बमीशं
भवाम्भोधिपोतं शरण्यं व्रजामः ॥५॥
पञ्चरत्नमिदं स्तोत्रं ब्रह्मणः परमात्मनः।
यः पठेत् प्रयतो भूत्वा ब्रह्मसायुज्यमाप्नुयात् ॥६॥

***

निर्वाणषट्कम्

मनोबुद्ध्यहङ्कारचित्तानि नाहं
न च श्रोत्रजिह्वे न च घ्राणनेत्रे।
न च व्योमभूमी न तेजो न वायु-
श्चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम् ॥१॥
न च प्राणसंज्ञो न वै पञ्चवायु-
र्न वा सप्तधातुर्न वा पञ्चकोषाः।
न वाक्पाणिपादं न चोपस्थपायू
चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम् ॥२॥
न मे द्वेषरागौ न मे लोभमोहौ
मदो नैव मे नैव मात्सर्यभावः।
न धर्मो न चार्थो न कामो न मोक्ष-
श्चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम् ॥३॥
न पुण्यं न पापं न सौख्यं न दुःखं
न मन्त्रो न तीर्थं न वेदा न यज्ञाः।

अहं भोजनं नैव भोज्यं न भोक्ता
चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम् ॥४॥
न मृत्युर्न शङ्का न मे जातिभेदः
पिता नैव मे नैव माता न जन्म ।
न बन्धुर्न मित्रं गुरुर्नैव शिष्य-
श्चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम् ॥५॥
अहं निर्विकल्पो निराकाररूपो
विभुत्वाच्च सर्वत्र सर्वेन्द्रियाणाम् ।
न चासङ्गतं नैव मुक्तिर्न मेय-
श्चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम् ॥६॥

***

साधनपञ्चकम्

वेदो नित्यमधीयतां तदुदितं कर्म स्वनुष्ठीयतां
तेनेशस्य विधीयतामपचितिः काम्ये मतिस्त्यज्यताम् ।
पापौघः परिधूयतां भवसुखे दोषोऽनुसन्धीयताम्
आत्मेच्छा व्यवसीयतां निजगृहात् तूर्णं विनिर्गम्यताम् ॥१॥
सङ्गः सत्सु विधीयतां भगवतो भक्तिर्दृढा धीयतां
शान्तादिः परिचीयतां दृढतरं कर्माशु सन्त्यज्यताम् ।
सद्विद्वानुपसर्प्यतां प्रतिदिनं तत्पादुके सेव्यतां
ब्रह्मैकाक्षरमर्थ्यतां श्रुतिशिरोवाक्यं समाकर्ण्यताम् ॥२॥
वाक्यार्थश्च विचार्यतां श्रुतिशिरः पक्षः समाश्रीयतां
दुस्तर्कात् सुविरम्यतां श्रुतिमतस्तर्कोऽनुसन्धीयताम् ।
ब्रह्मैवास्मि विभाव्यतामहरहर्गर्वः परित्यज्यतां
देहेऽहम्मतिरुज्झ्यतां बुधजनैर्वादः परित्यज्यताम् ॥३॥
क्षुद्व्याधिश्च चिकित्स्यतां प्रतिदिनं भिक्षौषधं भुज्यतां
स्वाद्वन्नं न तु याच्यतां विधिवशात्प्राप्तेन सन्तुष्यताम् ।
शीतोष्णादि विषह्यतां न तु वृथा वाक्यं समुच्चार्यताम्
औदासीन्यमभीप्स्यतां जनकृपानैष्ठुर्यमुत्सृज्यताम् ॥४॥

एकान्ते सुखमास्यतां परतरे चेतः समाधीयतां
पूर्णात्मा सुसमीक्ष्यतां जगदिदं तद्बाधितं दृश्यताम् ।
प्राक्कर्म प्रविलाप्यतां चितिबलान्नाप्युत्तरैः श्लिष्यतां
प्रारब्धं त्विह भुज्यतामथ परब्रह्मात्मना स्थीयताम् ॥५॥
यः श्लोकपञ्चकमिदं पठते मनुष्यः
सञ्चिन्तयत्यनुदिनं स्थिरतामुपेत्य ।
तस्याशु संसृतिदवानलतीव्रघोर-
तापः प्रशान्तिमुपयाति चितिप्रसादात् ॥६॥

***

कौपीनपञ्चकम्

वेदान्तवाक्येषु सदा रमन्तो
भिक्षान्नमात्रेण च तुष्टिमन्तः ।
अशोकमन्तःकरणे चरन्तः
कौपीनवन्तः खलु भाग्यवन्तः ॥१॥
मूलं तरोः केवलमाश्रयन्तः
पाणिद्वयं भोक्तुमामन्त्रयन्तः
कन्थामिव श्रीमपि कुत्सयन्तः
कौपीनवन्तः खलु भाग्यवन्तः ॥२॥
स्वानन्दभावे परितुष्टिमन्तः
सुशान्तसर्वेन्द्रियवृत्तिमन्तः ।
अहर्निशं ब्रह्मसुखे रमन्तः
कौपीनवन्तः खलु भाग्यवन्तः ॥३॥
देहादिभावं परिवर्तयन्तः
आत्मानमात्मन्यवलोकयन्तः ।
नान्तं न मध्यं न बहिः स्मरन्तः
कौपीनवन्तः खलु भाग्यवन्तः ॥४॥
ब्रह्माक्षरं पावनमुच्चरन्तो
ब्रह्माहमस्मीति विभावयन्तः ।
भिक्षाशिनो दिक्षु परिभ्रमन्तः
कौपीनवन्तः खलु भाग्यवन्तः ॥५॥

***

चर्पटपञ्जरिकास्तोत्रम्

दिनमपि रजनी सायं प्रातः शिशिरवसन्तौ पुनरायातः ।
कालः क्रीडति गच्छत्यायुस्तदपि न मुञ्चत्याशावायुः ॥१॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं गोविन्दं भज मूढमते ।
प्राप्ते संनिहिते मरणे न हि न हि रक्षति डुकृञ् करणे ॥ (ध्रुवपदम्)
अग्रे वह्निः पृष्ठे भानू रात्रौ चिबुकसमर्पितजानुः ।
करतलभिक्षा तरुतलवासस्तदपि न मुञ्चत्याशापाशः ॥भज.॥२
यावद्वित्तोपार्जनसक्तस्तावन्निजपरिवारो रक्तः ।
पश्चाद्धावति जर्जरदेहे वार्ता पृच्छति कोऽपि न गेहे ॥भज.॥३
जटिलो मुण्डी लुञ्चितकेशः काषायाम्बरबहुकृतवेषः ।
पश्यन्नपि च न पश्यति मूढो ह्युदरनिमित्तं बहुकृतवेषः ॥भज.॥४
भगवद्गीता किञ्चिदधीता गङ्गाजललवकणिका पीता ।
सकृदपि यस्य मुरारिसमर्चा तस्य यमः किं कुरुते चर्चाम् ॥भज.॥५
अङ्गं गलितं पलितं मुण्डं दशनविहीनं जातं तुण्डम् ।
वृद्धो याति गृहीत्वा दण्डं तदपि न मुञ्चत्याशापिण्डम् ॥भज.॥६
बालस्तावत्क्रीडासक्तस्तरुणस्तावत्तरुणीरक्तः ।
वृद्धस्तावच्चिन्तामग्नः परमे ब्रह्मणि कोऽपि न लग्नः ॥भज.॥७
पुनरपि जननं पुनरपि मरणं पुनरपि जननीजठरे शयनम् ।
इह संसारे खलु दुस्तारे कृपयापारे पाहि मुरारे ॥भज.॥८
पुनरपि रजनी पुनरपि दिवसः पुनरपि पक्षः पुनरपि मासः ।
पुनरप्ययनं पुनरपि वर्षं तदपि न मुञ्चत्याशामर्षम् ॥भज.॥९
वयसि गते कः कामविकारः शुष्के नीरे कः कासारः ।
नष्टे द्रव्ये कः परिवारो ज्ञाते तत्त्वे कः संसारः ॥भज.॥१०
नारीस्तनभरणाभिनिवेशं मिथ्यामायामोहावेशम् ।
एतन्मांसवसादिविकारं मनसि विचारय वारंवारम् ॥भज.॥११
कस्त्वं कोऽहं कुत आयातः का मे जननी को मे तातः ।
इति परिभावय सर्वमसारं विश्वं त्यक्त्वा स्वप्नविचारम् ॥भज.॥१२
गेयं गीतानामसहस्रं ध्येयं श्रीपतिरूपमजस्रम् ।
नेयं सज्जनसङ्गे चित्तं देयं दीनजनाय च वित्तम् ॥भज.॥१३

यावज्जीवो निवसति देहे कुशलं तावत्पृच्छति गेहे ।
गतवति वायौ देहापाये भार्या बिभ्यति तस्मिन् काये ॥भज.॥१४
सुखतः क्रियते रामाभोगः पश्चाद्धन्त शरीरे रोगः ।
यद्यपि लोके मरणं शरणं तदपि न मुञ्चति पापाचरणम् ॥भज.॥१५
रथ्याचर्पटविरचितकन्थः पुण्यापुण्यविवर्जितपन्थः ।
नाहं न त्वं नायं लोकस्तदपि किमर्थं क्रियते शोकः ॥भज.॥१६
कुरुते गङ्गासागरगमनं व्रतपरिपालनमथवा दानम् ।
ज्ञानविहीनः सर्वमतेन मुक्तिं न भजति जन्मशतेन ॥भज.॥१७

***

द्वादशपञ्जरिकास्तोत्रम् (मोहमुद्गरः)

मूढ जहीहि धनागमतृष्णां कुरु सद्बुद्धिं मनसि वितृष्णाम् ।
यल्लभसे निजकर्मोपात्तं वित्तं तेन विनोदय चित्तम् ॥१॥
अर्थमनर्थं भावय नित्यं नास्ति ततः सुखलेशः सत्यम् ।
पुत्रादपि धनभाजां भीतिः सर्वत्रैषा विहिता नीतिः ॥२॥
का ते कान्ता कस्ते पुत्रः संसारोऽयमतीव विचित्रः ।
कस्य त्वं कः कुत आयातस्तत्त्वं चिन्तय यदिदं भ्रातः ॥३॥
मा कुरु धनजनयौवनगर्वं हरति निमेषात्कालः सर्वम् ।
मायामयमिदमखिलं हित्वा ब्रह्मपदं त्वं प्रविश विदित्वा ॥४॥
कामं क्रोधं लोभं मोहं त्यक्त्वात्मानं भावय कोऽहम् ।
आत्मज्ञानविहीना मूढास्ते पच्यन्ते नरकनिगूढाः ॥५॥
सुरमन्दिरतरुमूलनिवासः शय्याभूतलमजिनं वासः ।
सर्वपरिग्रहभोगत्यागः कस्य सुखं न करोति विरागः ॥६॥
शत्रौ मित्रे पुत्रे बन्धौ मा कुरु यत्नं विग्रहसन्धौ ।
भव समचित्तः सर्वत्र त्वं वाञ्छस्यचिराद्यदि विष्णुत्वम् ॥७॥
त्वयि मयि चान्यत्रैको विष्णुर्व्यर्थं कुप्यसि मय्यसहिष्णुः ।
सर्वस्मिन्नपि पश्यात्मानं सर्वत्रोत्सृज भेदज्ञानम् ॥८॥
प्राणायामं प्रत्याहारं नित्यानित्यविवेकविचारम् ।
जाप्यसमेतसमाधिविधानं कुर्ववधानं महदवधानम् ॥९॥

नलिनीदलगतसलिलं तरलं तद्वज्जीवितमतिशयचपलम् ।
विद्धि व्याध्यभिमानग्रस्तं लोकं शोकहतं च समस्तम् ॥१०॥
का तेऽष्टादशदेशे चिन्ता वातुल तव किं नास्ति नियन्ता ।
यस्त्वां हस्ते सुदृढनिबद्धं बोधयति प्रभवादिविरुद्धम् ॥११॥
गुरुचरणाम्बुजनिर्भरभक्तः संसारादचिराद् भव मुक्तः ।
सेन्द्रियमानसनियमादेवं द्रक्ष्यसि निजहृदयस्थं देवम् ॥१२॥
द्वादशपञ्जरिकामय एष शिष्याणां कथितो ह्युपदेशः ।
येषां चित्ते नैव विवेकस्ते पच्यन्ते नरकमनेकम् ॥१३॥

***

परापूजा

अखण्डे सच्चिदानन्दे निर्विकल्पैकरूपिणि ।
स्थितेऽद्वितीयभावेऽस्मिन् कथं पूजा विधीयते ॥१॥
पूर्णस्यावाहनं कुत्र सर्वाधारस्य चासनम् ।
स्वच्छस्य पाद्यमर्घ्यं च शुद्धस्याचमनं कुतः ॥२॥
निर्मलस्य कुतः स्नानं वस्त्रं विश्वोदरस्य च ।
अगोत्रस्य त्ववर्णस्य कुतस्तस्योपवीतकम् ॥३॥
निर्लेपस्य कुतो गन्धः पुष्पं निर्वासनस्य च ।
निर्विशेषस्य का भूषा कोऽलङ्कारो निराकृतेः ॥४॥
निरञ्जनस्य किं धूपैर्दीपैर्वा सर्वसाक्षिणः ।
निजानन्दैकतृप्तस्य नैवेद्यं किं भवेदिह ॥५॥
विश्वानन्दयितुस्तस्य किं ताम्बूलं प्रकल्प्यते ।
स्वयम्प्रकाशचिद्रूपो योऽसावर्कादिभासकः ॥६॥
प्रदक्षिणा ह्यनन्तस्य ह्यद्वयस्य कुतो नतिः ।
वेदवाक्यैरवेद्यस्य कुतः स्तोत्रं विधीयते ॥७॥
स्वयम्प्रकाशमानस्य कुतो नीराजनं विभोः ।
अन्तर्बहिश्च पूर्णस्य कथमुद्वासनं भवेत् ॥८॥
एवमेव परापूजा सर्वावस्थासु सर्वदा ।
एकबुद्ध्या तु देवेशे विधेया ब्रह्मवित्तमैः ॥९॥

आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं
पूजा ते विविधोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः ।
सञ्चारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो
यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम् ॥१०॥

***

विविधस्तोत्राणि

श्रीगङ्गाष्टकम्

मातः शैलसुतासपत्नि वसुधाशृङ्गारहारावलि
स्वर्गारोहणवैजयन्ति भवतीं भागीरथि प्रार्थये।
त्वत्तीरे वसतस्त्वदम्बु पिबतस्त्वद्वीचिषु प्रेङ्खत-
स्त्वन्नाम स्मरतस्त्वदर्पितदृशः स्यान्मे शरीरव्ययः ॥१॥
त्वत्तीरे तरुकोटरान्तरगतो गङ्गे विहङ्गो वरं
त्वन्नीरे नरकान्तकारिणि वरं मत्स्योऽथवा कच्छपः।
नैवान्यत्र मदान्धसिन्धुरघटासङ्घट्टघण्टारण-
त्कारत्रस्तसमस्तवैरिवनितालब्धस्तुतिर्भूपतिः ॥२॥
उक्षा पक्षी तुरग उरगः कोऽपि वा वारणो वा
वारीणः स्यां जननमरणक्लेशदुःखासहिष्णुः।
न त्वन्यत्र प्रविरलरणत्कङ्कणक्वाणमिश्रं
वारस्त्रीभिश्चमरमरुता वीजितो भूमिपालः ॥३॥
काकैर्निष्कुषितं श्वभिः कवलितं गोमायुभिर्लुण्ठितं
स्रोतोभिश्चलितं तटाम्बुलुलितं वीचीभिरान्दोलितम्।
दिव्यस्त्रीकरचारुचामरमरुत्संवीज्यमानः कदा
द्रक्ष्येऽहं परमेश्वरि त्रिपथगे भागीरथि स्वं वपुः ॥४॥
अभिनवबिसवल्ली पादपद्मस्य विष्णो-
र्मदनमथनमौलेर्मालतीपुष्पमाला।
जयति जयपताका काप्यसौ मोक्षलक्ष्म्याः
क्षपितकलिकलङ्का जाह्नवी नः पुनातु ॥५॥
एतत्तालतमालसालसरलव्यालोलवल्लीलता-
च्छन्नं सूर्यकरप्रतापरहितं शङ्खेन्दुकुन्दोज्ज्वलम्।
गन्धर्वामरसिद्धकिन्नरवधूत्तुङ्गस्तनास्फालितं
स्नानाय प्रतिवासरं भवतु मे गाङ्गं जलं निर्मलम् ॥६॥
गाङ्गं वारि मनोहारि मुरारिचरणच्युतम्।
त्रिपुरारिशिरश्चारि पापहारि पुनातु माम् ॥७॥

पापापहारि दुरितारि तरङ्गधारि
शैलप्रचारि गिरिराजगुहाविदारि ।
झङ्कारकारि हरिपादरजोऽपहारि
गाङ्गं पुनातु सततं शुभकारि वारि ॥८॥
गङ्गाष्टकं पठति यः प्रयतः प्रभाते
वाल्मीकिना विरचितं शुभदं मनुष्यः ।
प्रक्षाल्य गात्रकलिकल्मषपङ्कमाशु
मोक्षं लभेत् पतति नैव नरो भवाब्धौ ॥९॥

***

श्रीगङ्गास्तोत्रम्

देवि सुरेश्वरि भगवति गङ्गे त्रिभुवनतारिणि तरलतरङ्गे ।
शङ्करमौलिनिवासिनि विमले मम मतिरास्तां तव पदकमले ॥१॥
भागीरथि सुखदायिनि मातस्तव जलमहिमा निगमे ख्यातः ।
नाहं जाने तव महिमानं त्राहि कृपामयि मामज्ञानम् ॥२॥
हरिपदपाद्यतरङ्गिणि गङ्गे हिमविधुमुक्ताधवलतरङ्गे ।
दूरीकुरु मम दुष्कृतिभारं कुरु कृपया भवसागरपारम् ॥३॥
तव जलममलं येन निपीतं परमपदं खलु तेन गृहीतम् ।
मातर्गङ्गे त्वयि यो भक्तः किल तं द्रष्टुं न यमः शक्तः ॥४॥
पतितोद्धारिणि जाह्नवि गङ्गे खण्डितगिरिवरमण्डितभङ्गे ।
भीष्मजननि खलु मुनिवरकन्ये पतितनिवारिणि त्रिभुवनधन्ये ॥५॥
कल्पलतामिव फलदां लोके प्रणमति यस्त्वां न पतति शोके ।
पारावारविहारिणि गङ्गे विबुधवधूकृततरलापाङ्गे ॥६॥
तव कृपया चेत्स्रोतःस्नातः पुनरपि जठरे सोऽपि न जातः ।
नरकनिवारिणि जाह्नवि गङ्गे कलुषविनाशिनि महिमोत्तुङ्गे ॥७॥
परिलसदङ्गे पुण्यतरङ्गे जय जय जाह्नवि करुणापाङ्गे ।
इन्द्रमुकुटमणिराजितचरणे सुखदे शुभदे सेवकचरणे ॥८॥
रोगं शोकं पापं तापं हर मे भगवति कुमतिकलापम् ।
त्रिभुवनसारे वसुधाहारे त्वमसि गतिर्मम खलु संसारे ॥९॥

अलकानन्दे परमानन्दे कुरु मयि करुणां कातरवन्द्ये ।
तव तटनिकटे यस्य हि वासः खलु वैकुण्ठे तस्य निवासः ॥१०॥
वरमिह नीरे कमठो मीनः किंवा तीरे सरटः क्षीणः ।
अथ गव्यूतौ श्वपचो दीनो न पुनर्दूरे नृपतिकुलीनः ॥११॥
भो भुवनेश्वरि पुण्ये धन्ये देवि द्रवमयि मुनिवरकन्ये ।
गङ्गास्तवमिमममलं नित्यं पठति नरो यः स जयति सत्यम् ॥१२॥
येषां हृदये गङ्गाभक्तिस्तेषां भवति सदा सुखमुक्तिः ।
मधुरमनोहरपज्झटिकाभिः परमानन्दकलितललिताभिः ॥१३॥
गङ्गास्तोत्रमिदं भवसारं वाञ्छितफलदं विदितमुदारम् ।
शङ्करसेवकशङ्कररचितं पठतु च विषयीदमिति समाप्तम् ॥१४॥

***

श्रीगङ्गामाहात्म्यम्

पवित्राणां पवित्रं या मङ्गलानां च मङ्गलम् ।
महेश्वरशिरोभ्रष्टा सर्वपापहरा शुभा ॥१॥
गङ्गा गङ्गेति यो ब्रूयाद्योजनानां शतैरपि ।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं स गच्छति ॥२॥
स्नानात् पानाच्च जाह्नव्यां पितृणां तर्पणात्तथा ।
महापातकवृन्दानि क्षयं यान्ति दिने दिने ॥३॥
तपोभिर्बहुभिर्यज्ञैर्व्रतैर्नानाविधैस्तथा ।
पुरुदानैर्गतिर्या च गङ्गा संसेव्य तां लभेत् ॥४॥
पुनाति कीर्तिता पापं दृष्टा भद्रं प्रयच्छति ।
अवगाढा च पीता च पुनात्यासप्तमं कुलम् ॥५॥

***

श्रीयमुनाष्टकम्–१

मुरारिकायकालिमाललामवारिधारिणी
तृणीकृतत्रिविष्टपा त्रिलोकशोकहारिणी ।
मनोऽनुकूलकूलकुञ्जपुञ्जधूतदुर्मदा
धुनोतु मे मनोमलं कलिन्दनन्दिनी सदा ॥१॥

मलापहारिवारिपूरभूरिमण्डितामृता
भृशं प्रपातकप्रवञ्चनातिपण्डितानिशम् ।
सुनन्दनन्दनाङ्गसङ्गरागरञ्जिता हिता
धुनोतु मे मनोमलं कलिन्दनन्दिनी सदा ॥२॥
लसत्तरङ्गसङ्गधूतभूतजातपातका
नवीनमाधुरीधुरीणभक्तिजातचातका ।
तटान्तवासदासहंससंसृता हि कामदा
धुनोतु मे मनोमलं कलिन्दनन्दिनी सदा ॥३॥
विहाररासखेदभेदधीरतीरमारुता
गता गिरामगोचरे यदीयनीरचारुता ।
प्रवाहसाहचर्यपूतमेदिनीनदीनदा
धुनोतु मे मनोमलं कलिन्दनन्दिनी सदा ॥४॥
तरङ्गसङ्गसैकताञ्चितान्तरा सदासिता
शरन्निशाकरांशुमञ्जुमञ्जरीसभाजिता ।
भवार्चनाय चारुणाम्बुनाधुना विशारदा
धुनोतु मे मनोमलं कलिन्दनन्दिनी सदा ॥५॥
जलान्तकेलिकारिचारुराधिकाङ्गरागिणी
स्वभर्तुरन्यदुर्लभाङ्गसङ्गतांशभागिनी ।
स्वदत्तसुप्तसप्तसिन्धुभेदनातिकोविदा
धुनोतु मे मनोमलं कलिन्दनन्दिनी सदा ॥६॥
जलच्युताच्युताङ्गरागलम्पटालिशालिनी
विलोलराधिकाकचान्तचम्पकालिमालिनी ।
सदावगाहनावतीर्णभर्तृभृत्यनारदा
धुनोतु मे मनोमलं कलिन्दनन्दिनी सदा ॥७॥
सदैव नन्दनन्दकेलिशालिकुञ्जमञ्जुला
तटोत्थफुल्लमल्लिकाकदम्बरेणुसूज्ज्वला ।
जलावगाहिनां नृणां भवाब्धिसिन्धुपारदा
धुनोतु मे मनोमलं कलिन्दनन्दिनी सदा ॥८॥

***

श्रीयमुनाष्टकम्—२

कृपापारावारां तपनतनयां तापशमनीं
मुरारिप्रेयस्कां भवभयदवां भक्तवरदाम् ।
वियज्जालान्मुक्तां श्रियमपि सुखाप्तेः प्रतिदिनं
सदा धीरो नूनं भजति यमुनां नित्यफलदाम् ॥१॥
मधुवनचारिणि भास्करवाहिनि जाह्नविसङ्गिनि सिन्धुसुते
मधुरिपुभूषिणि माधवतोषिणि गोकुलभीतिविनाशकृते ।
जगदघमोचिनि मानसदायिनि केशवकेलिनिदानगते
जय यमुने जय भीतिनिवारिणि सङ्कटनाशिनि पावय माम् ॥२॥
अयि मधुरे मधुमोदविलासिनि शैलविहारिणि वेगभरे
परिजनपालिनि दुष्टनिषूदिनि वाञ्छितकामविलासधरे ।
व्रजपुरवासिजनार्जितपातकहारिणि विश्वजनोद्धरिके
जय यमुने जय भीतिनिवारिणि सङ्कटनाशिनि पावय माम् ॥३॥
अतिविपदम्बुधिमग्नजनं भवतापशताकुलमानसकं
गतिमतिहीनमशेषभयाकुलमागतपादसरोजयुगम् ।
ऋणभयभीतिमनिष्कृतिपातककोटिशतायुतपुञ्जतरं
जय यमुने जय भीतिनिवारिणि सङ्कटनाशिनि पावय माम् ॥४॥
नवजलदद्युतिकोटिलसत्तनुहेममयाभररञ्जितके
तडिदवहेलिपदाञ्चलचञ्चलशोभितपीतसुचैलधरे ।
मणिमयभूषणचित्रपटासनरञ्जितगञ्जितभानुकरे
जय यमुने जय भीतिनिवारिणि सङ्कटनाशिनि पावय माम् ॥५॥
शुभपुलिने मधुमत्तयदूद्भवरासमहोत्सवकेलिभरे
उच्चकुलाचलराजितमौक्तिकहारमयाभररोदसिके ।
नवमणिकोटिकभास्करकञ्चुकिशोभिततारकहारयुते
जय यमुने जय भीतिनिवारिणि सङ्कटनाशिनि पावय माम् ॥६॥
करिवरमौक्तिकनासिकभूषणवातचमत्कृतचञ्चलके
मुखकमलामलसौरभचञ्चलमत्तमधुव्रतलोचनिके ।
मणिगणकुण्डललोलपरिस्फुरदाकुलगण्डयुगामलके
जय यमुने जय भीतिनिवारिणि सङ्कटनाशिनि पावय माम् ॥७॥

कलरवनूपुरहेममयाचितपादसरोरुहसारुणिके
धिमिधिमिधिमिधिमितालविनोदितमानसमञ्जुलपादगते ।
त्व पदपङ्कजमाश्रितमानवचित्तसदाखिलतापहरे
जये यमुने जय भीतिनिवारिणि सङ्कटनाशिनि पावय माम् ॥८॥
भवोत्तापाम्भोधौ निपतितजनो दुर्गतियुतो
यदि स्तौति प्रातः प्रतिदिनमनन्याश्रयतया ।
हयाह्रेषैः कामं करकुसुमपुञ्जैरविरतं
सदा भोक्ता भोगान्मरणसमये याति हरिताम् ॥९॥

***

श्रीनर्मदाष्टकम्

सबिन्दुसिन्धुसुस्खलत्तरङ्गभृङ्गरञ्जितं
द्विषत्सु पापजातजातकारिवारिसंयुतम् ।
कृतान्तदूतकालभूतभीतिहारिवर्मदे
त्वदीयपादपङ्कजं नमामि देवि नर्मदे ॥१॥
त्वदम्बुलीनदीनमीनदिव्यसम्प्रदायकं
कलौ मलौघभारहारि सर्वतीर्थनायकम् ।
सुमच्छकच्छनक्रचक्रचक्रवाकशर्मदे
त्वदीयपादपङ्कजं नमामि देवि नर्मदे ॥२॥
महागभीरनीरपूरपापधूतभूतलं
ध्वनत्समस्तपातकारिदारितापदाचलम् ।
जगल्लये महाभये मृकण्डुसूनुहर्म्यदे
त्वदीयपादपङ्कजं नमामि देवि नर्मदे ॥३॥
गतं तदैव मे भयं त्वदम्बु वीक्षितं यदा
मृकण्डुसूनुशौनकासुरारिसेवितं सदा ।
पुनर्भवाब्धिजन्मजं भवाब्धिदुःखवर्मदे
त्वदीयपादपङ्कजं नमामि देवि नर्मदे ॥४॥
अलक्ष्यलक्षकिन्नरामरासुरादिपूजितं
सुलक्ष्यनीरतीरधीरपक्षिलक्षकूजितम् ।

वसिष्ठशिष्टपिप्पलादिकर्दमादिशर्मदे
त्वदीयपादपङ्कजं नमामि देवि नर्मदे ॥५॥
सनत्कुमारनाचिकेतकश्यपात्रिषट्पदै-
र्धृतं स्वकीयमानसेषु नारदादिषट्पदैः।
रवीन्दुरन्तिदेवदेवराजकर्मशर्मदे
त्वदीयपादपङ्कजं नमामि देवि नर्मदे ॥६॥
अलक्ष्यलक्षलक्षपापलक्षसारसायुधं
ततस्तु जीवजन्तुतन्तुभुक्तिमुक्तिदायकम्।
विरिञ्चिविष्णुशङ्करस्वकीयधामवर्मदे
त्वदीयपादपङ्कजं नमामि देवि नर्मदे ॥७॥
अहो मृतं स्वनं श्रुतं महेशकेशजातटे
किरातसूतवाडवेषु पण्डिते शठे नटे।
दुरन्तपापतापहारि सर्वजन्तुशर्मदे
त्वदीयपादपङ्कजं नमामि देवि नर्मदे ॥८॥
इदं तु नर्मदाष्टकं त्रिकालमेव ये सदा
पठन्ति ते निरन्तरं न यान्ति दुर्गतिं कदा।
सुलभ्यदेहदुर्लभं महेशधामगौरवं
पुनर्भवा नरा न वै विलोकयन्ति रौरवम् ॥९॥

***

श्रीहनुमत्कवचम्

अस्य श्रीहनुमत्कवचस्य श्रीरामचन्द्र ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। श्रीहनुमान् देवता। मारुतात्मजेति बीजम्। अञ्जनीसूनुरिति शक्तिः। आत्मनः सकलकार्यसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। ॐ हमुमते अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ पवनात्मजाय तर्जनीभ्यां नमः। ॐ अक्षपघ्नाय मध्यमाभ्यां नमः। ॐ विष्णुभक्ताय अनामिकाभ्यां नमः। ॐ लङ्काविदाहकाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ श्रीरामकिङ्कराय करतलपृष्ठाभ्यां नमः।

अथ ध्यानम्

ध्यायेद् बालदिवाकरद्युतिनिभं देवादिदर्पापहं
देवेन्द्रप्रमुखैः प्रशंसियशसं देदीप्यमानं रुचा ।
सुग्रीवादिसमस्तवानरयुतं सुव्यक्ततत्त्वप्रियं
संरक्तारुणलोचनं पवनजं पीताम्बरालङ्कृतम् ॥१॥
वज्राङ्गं पिङ्गलेशाढ्यं स्वर्णकुण्डलमण्डितम् ।
नियुद्धमुपसंक्रम्य पारावारपराक्रमम् ॥२॥
वामहस्ते गदायुक्तं पाशहस्तं कमण्डलुम् ।
ऊर्ध्वदक्षिणदोर्दण्डं हनुमन्तं विचिन्तयेत् ॥३॥
स्फटिकाभं स्वर्णकान्तिं द्विभुजं च कृताञ्जलिम् ।
कुण्डलद्वयसंशोभिमुखाम्बुजहरिं भजेत् ॥४॥

इति ध्यानम् ।

हनुमान् पूर्वतः पातु दक्षिणे पवनात्मजः ।
पातु प्रतीच्यामक्षघ्नः पातु सागरपारगः ॥५॥
उदीच्यामुर्ध्वगः पातु केसरीप्रियनन्दनः ।
अधस्ताद्विष्णुभक्तश्च पातु मध्ये च पावनिः ॥६॥
अवान्तरदिशः पातु सीताशोकविनाशनः ।
लङ्काविदाहकः पातु सर्वापद्भ्यो निरन्तरम् ॥७॥
सुग्रीवसचिवः पातु मस्तकं वायुनन्दनः ।
भालं पातु महावीरो भ्रुवोर्मध्ये निरन्तरम् ॥८॥
नेत्रे छायापहारी च पातु नः प्लवगेश्वरः ।
कपोलौ कर्णमूले च पातु श्रीरामकिङ्करः ॥९॥
नासाग्रमञ्जनीसूनुः पातु वक्त्रं कपीश्वरः ।
पातु कण्ठे च दैत्यारिः स्कन्धौ पातु सुरार्चितः ॥१०॥
भुजौ पातु महातेजाः करौ तु चरणायुधः ।
नखान्नखायुधः पातु कुक्षौ पातु कपीश्वरः ॥११॥
वक्षो मुद्रापहारी च पार्श्वे पातु भुजायुधः ।
लङ्काविभञ्जकः पातु पृष्ठदेशे निरन्तरम् ॥१२॥

नाभिं च रामदूतश्च कटिं पात्वनिलात्मजः ।
गुह्यं पातु कपीशस्तु गुल्फौ पातु महाबलः ॥१३॥
अचलोद्धारकः पातु पादौ भास्करसन्निभः ।
अङ्गान्यमितसत्त्वाढ्यः पातु पादाङ्गुलीः सदा ॥१४॥
सर्वाङ्गानि महाशूरः पातु रोमाणि चात्मवान् ॥१५॥
हनुमत्कवचं यस्तु पठेद् विद्वान् विचक्षणः ।
स एव पुरुषश्रेष्ठो भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति ॥१६॥
त्रिकालमेककालं वा पठेन्मासत्रयं पुनः ।
सर्वारिष्टं क्षणे जित्वा स पुमान् श्रियमाप्नुयात् ॥१७॥
अर्धरात्रौ जले स्थित्वा सप्तवारं पठेद्यदि ।
क्षयापस्मारकुष्ठादितापज्वरनिवारणम् ॥१८॥
अश्वत्थमूलेऽर्कवारे स्थित्वा पठति यः पुमान् ।
स एव जयमाप्नोति सङ्ग्रामेष्वभयं तथा ॥१९॥
यः करे धारयेन्नित्यं सर्वान् कामानवाप्नुयात् ।
लिखित्वा पूजयेद् यस्तु तस्य ग्रहभयं हरेत् ॥२०॥
कारागृहे प्रयाणे च सङ्ग्रामे देशविप्लवे ।
यः पठेद्धनुमत्कवचं तस्य नास्ति भयं तथा ॥२१॥
यो वारां निधिमल्पपल्वलमिवोल्लङ्घ्य प्रतापान्वितो
वैदेहीधनतल्पशोकहरणो वैकुण्ठभक्तप्रियः ।
अक्षाद्यूर्जितराक्षसेश्वरमहादर्पापहारो रणे
सोऽयं वानरपुङ्गवोऽवतु सदा चास्मान् समीरात्मजः ॥२२॥

***

श्रीहनुमत्पञ्चरत्नम्

वीताखिलविषयेच्छं जातानन्दाश्रुपुलकमत्यच्छम् ।
सीतापतिदूताद्यं वातात्मजमद्य भावये हृद्यम् ॥१॥
तरुणारुणमुखकमलं करुणारसपूरपूरितापाङ्गम् ।
सञ्जीवनमाशासे मञ्जुलमहिमानमञ्जनाभाग्यम् ॥२॥

शम्बरवैरिशरातिगमम्बुजदलविपुललोचनोदारम् ।
कम्बुगलमनिलदिष्टं बिम्बज्वलितोष्ठमेकमवलम्बे ॥३॥
दूरीकृतसीतार्तिः प्रकटीकृतरामवैभवस्फूर्तिः ।
दारितदशमुखकीर्तिः पुरतो मम भातु हनुमतो मूर्तिः ॥४॥
वानरनिकराध्यक्षं दानवकुलकुमुदरविकरसदृक्षम् ।
दीनजनावनदीक्षं पवनतपःपाकपुञ्जमद्राक्षम् ॥५॥
एतत् पवनसुतस्य स्तोत्रं यः पठति पञ्चरत्नाख्यम् ।
चिरमिह निखिलान् भोगान् भुक्त्वा श्रीरामभक्तिभाग्भवति ॥६॥

***

श्रीबुद्धदेववन्दना

बद्ध्वा पद्मासनं यो नयनयुगमिदं न्यस्य नासाग्रदेशे
धृत्वा मौनं च शान्तौ समरसमिलितौ चन्द्रसूर्याख्यवातौ ।
पश्यन्नन्तर्विशुद्धं किमपि च परमं ज्योतिराकारहीनं
संख्याम्भोधौ निमग्नः स दिशतु भवतां ज्ञानबोधं बुधोऽयम् ॥

***

श्रीबुद्धदेवस्तोत्रम्

न ब्रह्मलोके न च देवलोके
न यक्षगन्धर्वमनुष्यलोके ।
लोकस्य जातिजरापनेता
नान्योऽस्ति त्वत्तो हि मनुष्यचन्द्र ॥१॥
वन्दितस्त्वं सुरैः सेन्द्रैः ऋषिभिश्चापि पूजितः ।
वैद्यः सर्वस्य लोकस्य वन्देऽहमपि त्वां विभो ॥२॥
लोके क्लेषाग्निसन्तप्ते प्रादुर्भूतो महाह्रदः ।
नमोऽस्तु बोधिसत्त्वाय सम्बुद्धाय नमो नमः ॥३॥
अज्ञानतिमिरे लोके प्रादुर्भूतः प्रदीपकः ।
नमोऽस्तु बोधिसत्त्वाय सम्बुद्धाय नमो नमः ॥४॥

शोकसागरकान्तारे यानश्रेष्ठस्वरूपकः ।
नमोऽस्तु बोधिसत्त्वाय सम्बुद्धाय नमो नमः ॥५॥
क्लेशबन्धनबद्धानां प्रादुर्भूतः प्रमोचकः ।
नमोऽस्तु बोधिसत्त्वाय सम्बुद्धाय नमो नमः ॥६॥
जराव्याधिकिल्बिषाणां प्रादुर्भूतो भिषग्वरः ।
नमोऽस्तु बोधिसत्त्वाय सम्बुद्धाय नमो नमः ॥७॥

***

प्रज्ञापारमितासूत्रम्

निर्विकल्पे नमस्तुभ्यं प्रज्ञापारमितेऽमिते ।
या त्वं सर्वानवद्याङ्गि निरवद्यैर्निरीक्ष्यसे ॥१॥
आकाशमिव निर्लेपां निष्प्रपञ्चां निरक्षराम् ।
यस्त्वां पश्यति भावेन स पश्यति तथागतम् ॥२॥
तव चार्यगुणाढ्याया बुद्धस्य च जगद्गुरोः ।
न पश्यन्त्यन्तरं सन्तश्चन्द्रचन्द्रिकयोरिव ॥३॥
कृपात्मकाः प्रपद्य त्वां बुद्धधर्मपुरःसरीम् ।
सुखेनायान्ति माहात्म्यमतुलं भक्तिवत्सले ॥४॥
सकृदप्याशये शुद्धे यस्त्वां विधिवदीक्षते ।
तेनापि नियतं सिद्धिः प्राप्यतेऽमोघदर्शने ॥५॥
सर्वेषामपि वीराणां परार्थनियतात्मनाम् ।
याधिका जनयित्री च माता त्वमसि वत्सला ॥६॥
यद्बुद्धा लोकगुरवः पुत्रास्तव कृपालवः ।
तेन त्वमपि कल्याणि सर्वसत्त्वपितामही ॥७॥
सर्वपारमिताभिस्त्वं निर्मलाभिरनिन्दिते ।
चन्द्रलेखेव ताराभिरनुयातासि सर्वदा ॥८॥
विनेयं जनमासाद्य तत्र तत्र तथागतैः ।
बहुरूपा त्वमेवैका नाना नामभिरीड्यसे ॥९॥
प्रभां प्राप्येव दीप्तांशोरवश्यायोदबिन्दवः ।
त्वां प्राप्य प्रलयं यान्ति दोषा वादाश्च वादिनाम् ॥१०॥

त्वमेव त्रासजननी बालानां भीमदर्शना।
आश्वासजननी चासि विदुषां सौम्यदर्शना ॥११॥
यस्य त्वय्यप्यभिष्वङ्गस्त्वन्नाथस्य न विद्यते।
तस्याम्ब कथमन्यत्र रागद्वेषौ भविष्यतः ॥१२॥
नागच्छसि कुतश्चित्त्वं न च क्वचन गच्छसि।
स्थानेष्वपि च सर्वेषु विद्वद्भिर्नोपलभ्यते ॥१३॥
ये त्वामेवं न पश्यन्ति प्रपद्यन्ते च भावतः।
प्रपद्य च विमुच्यन्ते तदिदं महदद्भुतम् ॥१४॥
त्वामेव बध्यते पश्यन्नपश्यन्नपि बध्यते।
त्वामेव मुच्यते पश्यन्नपश्यन्नपि मुच्यते ॥१५॥
अहो विस्मयनीयासि गम्भीरासि यशस्विनी।
सुदुर्बोधासि मायैव दृश्यसे न च दृश्यसे ॥१६॥
बुद्धैः प्रत्येकबुद्धैश्च श्रावकैश्च निषेविता।
मार्गस्त्वमेका मोक्षस्य नास्त्यन्य इति निश्चयः ॥१७॥
व्यवहारं पुरस्कृत्य प्रज्ञप्त्यर्थं शरीरिणाम्।
कृपया लोकनाथैस्त्वमुच्यसे न च चोच्यसे ॥१८॥
शक्तः कस्त्वामिह स्तोतुं निर्निमित्तां निरञ्जनाम्।
सर्ववाग्विषयातीतां या त्वं क्वचिदनिश्रिता ॥१९॥
सत्यैवमयि संवृत्या वाक्पथैर्वयमीदृशैः।
त्वामस्तुत्यामपि सतीं तुष्टुवन्तः सुनिर्वृताः ॥२०॥
प्रज्ञापारमितां स्तुत्वा यन्मयोपचितं शुभम्।
तेनास्त्वाशु जगत्कृत्स्नं प्रज्ञापारपरायणम् ॥२१॥

***

श्रीशङ्कराचार्यवन्दना

वेदान्तार्थविभासकाय गुरवे शान्ताय संन्यासिने
नानावादिनगेन्द्रसङ्घपवये योगीन्द्रवन्द्याय च।
मोहध्वान्तदिवाकराय भगवत्पादाभिधां बिभ्रते
तस्मै भाष्यकृते नमोऽस्तु सततं पूर्णाय बोधात्मने ॥

***

श्रीशङ्करदेशिकाष्टकम्

विदिताखिलशास्त्रसुधाजलधे
 महितोपनिषत्कथितार्थनिधे ।
हृदये कलये विमलं चरणं
 भव शङ्कर देशिक मे शरणम् ॥१॥
करुणावरुणालय पालय मां
 भवसागरदुःखविदूनहृदम् ।
रचयाखिलदर्शनतत्त्वविदं
 भव शङ्कर देशिक मे शरणम् ॥२॥
भवता जनता सुहिता भविता
 निजबोधविचारणचारुमते ।
कलयेश्वरजीवविवेकविदं
 भव शङ्कर देशिक मे शरणम् ॥३॥
भव एव भवानिति मे नितरां
 समजायत चेतसि कौतुकिता ।
मम वारय मोहमहाजलधिं
 भव शङ्कर देशिक मे शरणम् ॥४॥
सुकृतेऽधिकृते बहुधा भवतो
 भविता पददर्शनलालसता ।
अतिदीनमिमं परिपालय मां
 भव शङ्कर देशिक मे शरणम् ॥५॥
जगतीमवितुं कलिताकृतयो
 विचरन्ति महामहसश्छलतः ।
अहिमांशुरिवात्र विभासि पुरो
 भव शङ्कर देशिक मे शरणम् ॥६॥
गुरुपुङ्गव पुङ्गवकेतन ते
 समतामयतां न हि कोऽपि सुधीः ।
शरणागतवत्सल तत्त्वनिधे
 भव शङ्कर देशिक मे शरणम् ॥७॥

विदिता न मया विशदैककला
न च किञ्चन काञ्चनमस्ति गुरो ।
द्रुतमेव विधेहि कृपां सहजां
भव शङ्कर देशिक मे शरणम् ॥८॥

***

श्रीचैतन्यदेववन्दना

यदद्वैतं ब्रह्मोपनिषदि यदप्यस्य तनुभा
य आत्मान्तर्यामी पुरुष इति सोऽस्यांशविभवः ।
षडैश्वर्यैः पूर्णो य इह भगवान् स स्वयमयं
न चैतन्यात्कृष्णाज्जगति परतत्त्वं परमिह ॥
राधा कृष्णप्रणयविकृतिर्ह्लादिनी शक्तिरस्माद्
एकात्मानावपि भुवि पुरा देहभेदं गतौ तौ ।
चैतन्याख्यं प्रकटमधुना तद्द्वयं चैक्यमाप्तं
राधाभावद्युतिसुवलितं नौमि कृष्णस्वरूपम् ॥
श्रीराधायाः प्रणयमहिमा कीदृशो वानयैवा-
स्वाद्यो येनाद्भुतमधुरिमा कीदृशो वा मदीयः ।
सौख्यं चास्या मदनुभवतः कीदृशं वेति लोभात्
तद्भावाढ्यः समजनि शचीगर्भसिन्धौ हरीन्दुः ॥

***

श्रीशचितनयाष्टकम्

उज्ज्वलवर्णगौरवरदेहं
विलसितनिरवधिभावविदेहम् ।
त्रिभुवनपावनकरुणालेशं
तं प्रणमामि श्रीशचितनयम् ॥१॥
गद्गद-अन्तर-भावविकारं
दुर्जनतर्जननादविलासम् ।

भवभयभञ्जनकारणकरुणं
तं प्रणमामि श्रीशचितनयम् ॥२॥

अरुणाम्बरधरचारुकपोलम्
इन्दुविनिन्दितनखचयरुचिरम् ।
जल्पितनिजगुणनामविनोदं
तं प्रणमामि श्रीशचितनयम् ॥३॥

विगलितनयनकमलजलधारं
भूषणनवरसभावविकारम् ।
गति-अतिमन्थर-नृत्यविलासं
तं प्रणमामि श्रीशचितनयम् ॥४॥

चञ्चल-चारुचरणगतिरुचिरं
मञ्जीररञ्जितपदयुगमधुरम् ।
चन्द्रविनिन्दित-शीतलवदनं
तं प्रणमामि श्रीशचितनयम् ॥५॥

धृतकटिडोरकमण्डलुदण्डं
दिव्यकलेवरमण्डितमुण्डम् ।
दुर्जनकल्मषखण्डनदण्डं
तं प्रणमामि श्रीशचितनयम् ॥६॥

भूषणभूरज-अलकावलितं
कम्पितबिम्बाधरवररुचिरम् ।
मलयजविरचित-उज्ज्वलतिलकं
तं प्रणमामि श्रीशचितनयम् ॥७॥

निन्दित-अरुणकमलदलनयनं
आजानुलम्बितश्रीभुजयुगलम् ।
कलेवरकिशोर-नर्तकवेशं
तं प्रणमामि श्रीशचितनयम् ॥८॥

***

शिक्षाष्टकम्

चेतोदर्पणमार्जनं भवमहादावाग्निनिर्वापणं
श्रेयःकैरवचन्द्रिकावितरणं विद्यावधूजीवनम् ।
आनन्दाम्बुधिवर्धनं प्रतिपदं पूर्णामृतास्वादनं
सर्वात्मस्नपनं परं विजयते श्रीकृष्णसङ्कीर्तनम् ॥१॥

नाम्नामकारि बहुधा निजसर्वशक्ति-
स्तत्रार्पिता नियमितः स्मरणे न कालः ।
एतादृशी तव कृपा भगवन् ममापि
दुर्दैवमीदृशमिहाजनि नानुरागः ॥२॥

तृणादपि सुनीचेन तरोरपि सहिष्णुना ।
अमानिना मानदेन कीर्तनीयः सदा हरिः ॥३॥

न धनं न जनं न सुन्दरीं कवितां वा जगदीश कामये ।
मम जन्मनि जन्मनीश्वरे भवताद् भक्तिरहैतुकी त्वयि ॥४॥

अयि नन्दतनूज किङ्करं पतितं मां विषमे भवाम्बुधौ ।
कृपया तव पादपङ्कजस्थितधूलीसदृशं विचिन्तय ॥५॥

नयनं गलदश्रुधारया वदनं गद्गदरुद्धया गिरा ।
पुलकैर्निचितं वपुः कदा तव नामग्रहणे भविष्यति ॥६॥

युगायितं निमेषेण चक्षुषा प्रावृषायितम् ।
शून्यायितं जगत्सर्वं गोविन्दविरहेण मे ॥७॥

आश्लिष्य वा पादरतां पिनष्टु माम्
अदर्शनान्मर्महतां करोतु वा ।
यथा तथा वा विदधातु लम्पटो
मत्प्राणनाथस्तु स एव नापरः ॥८॥

***

स्तवनाञ्जलिः

वर्णानुक्रम सूची